शनि-विचार

लेखक :
ज्योतिषी स्व. ह. ने. काटवे.

संशोधित हिन्दी अनुवाद

नागपुर
प्रकाशन

प्रथमावृत्ति
१९६१

मूल्य ढाई रुपिया

दैव विचार माला. क्र. – ७

शनिविचार

●

लेखक :
ज्योतिषी स्व. ह. ने. काटवे.

❀

संशोधित हिन्दी अनुवाद

卐

प्रथमावृत्ति
१९६१

मूल्य ढाई रुपिया

दै व वि चा र मा ला. क्र. – ७

विषयानुक्रम

प्रकरण	विषय	पृष्ठ

प्रकाशक :
अशोक दिगंबर धुमाळ,
नागपुर प्रकाशन
सीताबर्डी, नागपुर—१

मुद्रक :
ल. म. पटले,
रामेश्वर प्रिंटिंग प्रेस,
सीताबर्डी, नागपुर—१

शनि–विचार

प्रकरण १ ला

उपोद्घात

वैडूर्यकान्तिरमलः शुभदः प्रजानां
बाणातसीकुसुमवर्णनिभश्च शस्तः ।
पंचापि वर्णमुपगच्छति तत्सवर्णान्
सूर्यात्मजः क्षपयतीति मुनिप्रवादः ॥

आचार्य वराहमिहिर–बृहत्संहिता

शनि ग्रह वैडूर्य रत्न अथवा बाणफूल या अलसी के फूल जैसे निर्मल नीले रंग से प्रकाशित होता है, उस समय प्रजा के लिये शुभ फल देता है। यह अन्य वर्णों को प्रकाश देता हो तो उन वर्णों के लोगों का नाश करता है ऐसा मुनि कहते हैं।

ग्रह–विचार माला के इस पुष्प में पुरातन ग्रहों में सातवें और अन्तिम शनि ग्रह का वर्णन करना है। फल ज्योतिषशास्त्र के प्रारंभ से ही इस ग्रह को मारक तथा अशुभ माना गया है। पश्चिमी ज्योतिषी भी इसे दुर्दैव लानेवाला-Evil fate Bringer कहते हैं। मराठी में तो महीपति नामक कवि ने शनिमाहात्म्य नामक स्वतन्त्र ग्रन्थ ही लिखा है। इसमें शनि का स्वरूप, द्वादशभावफल, महादशा तथा साढेसाती के फलों का वर्णन किया है। शनि की दृष्टि का परिणाम बतलाते हुए यह कवि कहता है—'शनि का जन्म होते ही उसकी दृष्टि पिता (सूर्य)

पर पडी, उससे तत्काल ही सूर्य कुष्ठरोग से पीडित हुआ, का सारथी अरुण पंगु हुआ और उसके घोंडे अन्धे हो इस प्रकार शनि की दृष्टि महाविनाशकारी है। किन्तु यही कृपायुक्त हो तो सब आनन्द भी प्राप्त होते हैं। सायंकाल के अस्तगामी सूर्य का रूपकात्मक वर्णन है। समय की निस्तेजता को कुष्ठरोग कहा है तथा रात्रि में गति अदृश्य होती है उसे सारथी पंगु होना तथा घोंडे होना कहा है। अन्य ग्रन्थों में भी शनि को यम, काल, दुःख, मन्द आदि अशुभसूचक नाम दिये हैं। अंग्रेजी में भी शैतान, Reaper आदि नाम मिले हैं। इस ग्रह के फल सिर्फ अशुभ ही हैं या महीपति के वर्णनानुसार आनन्द भी हैं इसी का इस पुस्तक में विचार करना है।

प्रकरण २ रा

सामान्य स्वरूप

(ग्रहयोनिभेदाध्याय)

शनि के विषय में प्राचीन लेखकों के वर्णन इस प्रकार है

आचार्य तथा गुणाकर––दुःखं दिनेशात्मजः। दुःखदाय प्रेष्यः सहस्त्रांशुजः। भास्करिः कृष्णदेहः। धातुः स्नायुः। वसति क्षित्युत्करः। वस्त्रं स्फाटितं। लोहधातुः। शिशिरर्तुः। क्षाररुचि, यह सेवक, दुःखदायी, काले वर्ण का है। स्नायु, कूडा करकट फेंकने की जगह, फटे जीर्ण वस्त्र, लोहा, शिशिर ऋतु तथा नमकीन रुचि पर इसका अधिकार है।

कल्याणवर्मा——दिशा-पश्चिम, प्रकृति-नपुंसक, नरक लोक।

वैद्यनाथ——मन्दः पृष्ठेनोद्यति सर्वदा। चतुष्पदो भानुसुतः। ःशैलाटविसंचरन्। शताब्दसंख्यः। मूलप्रधानोर्कजः। कृष्णः नः। देवता विरिंचिः। शनेर्नीलं। शनिः स्यात् तु हिमाचलान्तं। न्दोन्त्यजानां पतिः। शनिः तमःस्वामी। पवनतत्त्वं। कषायरसः। धोऽक्षिपातः। वधू मन्दः। शनिः सुतीक्ष्णः। अर्केण मन्दः निना महीसुतः। मन्दस्तुलामकरकुम्भगृहे कलत्रे याम्यायने निजदृगाणदिने दशायाम्। अन्ते ग्रहस्य समरे यदि कृष्णपक्षे वक्रे मस्तभवनेषु बलाधिकः स्यात्॥ शनि का उदय पृष्ठभाग से होता है। यह चौपाया, पर्वत तथा वनों में घूमनेवाला, सौ वर्ष की आयु का, मूलप्रधान, काले वर्ण का है। इसकी देवता ब्रह्मा है। नीलरत्न, गंगा से हिमालय तक का प्रदेश, अन्त्यज लोग, तमोगुण, वायु तत्त्व, कषैली रुचि, नीचे दृष्टि, स्त्रीस्थान, तीक्ष्ण स्वभाव इन पर इसका अधिकार है। रवि द्वारा शनि पराजित होता है तथा शनि द्वारा मंगल पराजित होता है। यह तुला, मकर तथा कुम्भ राशि में स्त्री स्थान में, विषुव के दक्षिण अयन में, द्रेष्काण कुण्डली में स्वगृह में, शनिवार को, अपनी दशा में, राशि के अन्तभाग में, युद्ध के समय, कृष्णपक्ष में तथा वक्री हो उस समय किसी भी स्थान में हो तो बलवान् होता है।

पराशर——शनिः शूद्रः। तमः। बली ज्ञेयो दिनशेषे। दुर्भगान् सूर्यपुत्रकः। नीरसान् सूर्यपुत्रश्च। गृहेषु मन्दो वृद्धोस्ति। यह शूद्र वर्ण का, तमोगुणी ग्रह सन्ध्यासमय बलवान् होता है। भाग्यहीनों तथा नीरस वस्तुओं पर शनि का अधिकार है।

जयदेव--सन्ध्यां मन्दः। पक्षिणौ बुधसौरी।, उस प्रतीच्यः। मन्दः स्थविरो ग्रहः। सूर्यजः संकराणाम् भूम् गृहे। यह गृह पश्चिम दिशा का, वृद्ध, पक्षीस्वरूप, भूमि का शनि संकर जाति का है। सन्ध्या के समय बलवान होता है।

मन्त्रेश्वर--नीचश्रेण्यशुचिस्थलं वरुणदिक्शास्तुः शनेण्लयः। हलके वर्गों के लोगों के निवास स्थान, अपवित्र स्थान, पश्चिम दिशा के स्वामी के स्थान (मद्रास और मैसूर प्रदेश के मुनीश्वर देवालय) इन पर शनि का अधिकार है। स्पर्शनेंद्रिय, लोहधातु, सौवर्ष की आयु, ज्ञानप्राप्ति, प्रवास, सौराष्ट्र प्रदेश, तिल, काल-देवता, वायुतत्त्व यह शनि के अधिकार के अन्य विषय हैं।

पुंजराज--वर्णः असितः—काला रंग होता है। यह ग्रह तीक्ष्ण, उग्र तथा सन्ध्यासमय बलवान होता है। रविजस्तथान्ते।

विलियम लिली--यह पुरातन ग्रहों में सब से दूर का ग्रह है। गुरु से भी इसकी कक्षा बाद में है। यह बहुत चमकीला अथवा प्रकाशमान नही तथा टिमटिमाता नही है। इसका रंग फीका, राख जैसा निस्तेज है। इसकी गति बहुत मन्द है। राशिचक्र की परिक्रमा यह २९ वर्ष ५ मास २७ दिन ५ घंटों में पूरी करता है। इसकी मध्यम गति २ कला १ विकला है। दैनिक गति ३ से ६ कला तक होती है। अधिकतम शिर उत्तर की ओर २ अंश ४८ कला रहता है तथा दक्षिण की ओर २ अंश ४९ कला रहता है। यह १४० दिन वक्री रहता है तथा वक्री होते समय और मार्गी होते समय ५ दिन स्तंभित रहता है।

शनि के अधिकृत स्थानों में रेगिस्तान, जंगल, अज्ञात [illegible]टयां, गुहाएं, गव्हर, पर्वत, कब्रस्तान, चर्च का मैदान, खंडहर, कोयले की खदानें, मैली बदबूदार जगहें, कार्यालय आदि का समावेश होता है। इस ग्रह का स्वभाव शीतल, रूक्ष, उदासीन है। यह पुरुष ग्रह पृथ्वीतत्त्व का स्वामी है। दुर्दैव लानेवाला, एकान्तप्रिय, पापग्रह है।

उपर्युक्त वर्णन प्रायः शनि के दृश्य स्वरूपानुसारही हैं। जहां ग्रन्थकारों के मत परस्पर विरुद्ध बतलाये हैं उनका विचार करना है।। वैद्यनाथ ने चतुष्पाद और जयदेव ने पक्षी स्वरूप कहा इनमें बहुत अन्तर है। अनुभव से वैद्यनाथ का मत ठीक प्रतीत होता है। जयदेव ने भूमितत्त्व कहा है और अन्य लेखक वायु तत्त्व बतलाते हैं। हमारे मत से वायु तत्त्व पर बुध का और भूमितत्त्व पर शनि का अधिकार ठीक प्रतीत होता है। वैद्यनाथ ने शनि द्वारा मंगल का पराजय होना लिखा है। किन्तु शनि–मंगल की युति या प्रतियोग के समय मंगल के अशुभ गुणधर्म ही अधिक स्पष्ट होते हैं। अतः मंगल द्वारा ही शनि का पराजय कहना चाहिये। यह वक्री हो तो सब स्थानों में बलवान कहा है किन्तु यह शुभ फल के बारे में ठीक नही है। हमारे अनुभव में वक्री शनि के फल अत्यन्त अशुभ, कष्टमय और दारिद्रयदायी प्रतीत हुए हैं। प्रवास अधिक होते हैं यह अनुभव ठीक है।

प्रकरण ३ रा

शनिस्वरूप का विस्तृत वर्णन

अब शनि के स्वरूप के विषय में विभिन्न लेखकों के मत देखिए।

आचार्य–मन्दोलसः कपिलदृक् कृशदीर्घगात्रः स्थूलद्विजः परुषरोमकचोऽनिलात्मा। शनिप्रधान पुरुष आलसी, दुबला तथा वात प्रकृति का होता है। इसकी दृष्टि पिंगल वर्ण की, अवयव लम्बे, दांत बडे और केश रूक्ष होते हैं।

गुणाकर–पिंगेक्षणः कृष्ण वपुः शिरालो मूर्खोलसः स्थूल-नखोऽनिलात्मा। क्रोधी जरावान् मलिनः कृशांग, स्नाय्वाततः सूर्यसुतोऽतिदीर्घः॥ इस की आंखें पिंगल, शरीर काला, नख बडे, कद बहुत लम्बा और स्नायु विस्तृत होते हैं। यह कृश (शिराएं दीखनेवाला), मूर्ख, आलसी। वात प्रकृति का, क्रोधी, वृद्ध जैसा, मैला होता है।

कल्याणवर्मा––पिंगो निम्नविलोचनः कृशतनुर्दीर्घः शिरालोऽलसः कृष्णांगः पवनात्मकोऽतिपिशुनः स्नाय्वाततो निर्घृणः। मूर्खः स्थूलनखद्विजोऽतिमलिनो रूक्षोऽशुचिस्तामसो रौद्रः क्रोधपरो जरापरिणतः कृष्णांबरो भास्करिः॥ इसमें आचार्य और गुणाकर के वर्णन से अधिक भाग इस प्रकार है– इसकी दृष्टि निम्न (नीचे की ओर) होती है। यह दुष्ट, चुगलखोर, तामसी और काले वस्त्र पहननेवाला होता है।

वैद्यनाथ---काठिन्यरोमावयवः कृशात्मा दूर्वासितांगः कफमारुतात्मा । पीनद्विजश्चारुपिशंगदृष्टिः सौरिस्तमोबुद्धिरतोऽलसः स्यात् ॥ केश और अवयव कठिन होते हैं। शरीर दूर्वा जैसा काले रंग का होता है। प्रकृति कफवात की होती है। अन्य वर्णन पहले आ चुका है।

पराशर---कृशदीर्घतनुः शौरिः पिंगदृष्ट्यानिलात्मकः। स्थूलदन्तोलसः पुंगखररोमकचो द्विजः ॥ यह ब्राह्मण वर्ण का है। अन्य वर्णन पहले जैसा है।

महादेव---क्रियास्वपटुः कातराक्षः कृष्णः कृशदीर्घांगो वृहद्दन्तो रूक्षतनुरुहो वातात्मा कठिनवाक् निन्द्यो मन्दः ॥ यह कामों में कुशल नहीं होता। दृष्टि से डरपोक प्रतीत होता है। कठोर बोलता है और निन्दनीय होता है। अन्य वर्णन पहले जैसा है।

ढुंढिराज---श्यामलोऽतिमलिनश्च शिरालः सालसश्च जटिलः कृशदीर्घः। स्थूलदन्तनखपिंगलनेत्रो युक् शनिश्च खलतानिलकोपैः ॥ इस वर्णन में पूर्व वर्णनों से जटायुक्त होना इतना विशेषण अधिक है।

मन्त्रेश्वर---इसमें कल्याणवर्मा जैसा वर्णन कर पंगु होना इतना अधिक कहा है।

जयदेव--शनिः कृशः श्यामलदीर्घदेहोऽलसोऽनिलात्मा कपिलेक्षणश्च । पृथुद्विजः स्थूलनखोष्ठकेशः शठः शिरौजाः पिशुनः। इस वर्णन में होंठ बडे होना इतना अधिक विशेषण है।

पुंजराज---मूर्खोलसः कृष्णतनुः कृशांगः स्यात् स्नायुसारो मलिनोऽतिदीर्घः क्रोधी जरत्पिंगदृशोऽर्कसूनुः सपैत्यवायुः पृथुरोमदन्तः ॥ इसमें प्रकृति पित्तवातात्मक होना इतना विशेष है।

विलियम लिली---शनिप्रधान व्यक्ति का शरीर साधारणतः शीतल और रुक्ष होता है। मझला कद, फीका काला रंग, आंखें बारीक और काली, दृष्टि नीचे की ओर, भाल भव्य, केश काले और लहरीले तथा रूक्ष, कान बडे लटकते जैसे, भौंहें झुकी हुई, होंठ और नाक मोटा, डाढी पतली इस प्रकार इस का स्वरूप बतलाया जा सकता है। यह चेहरा देखने से प्रसन्नता नही होती। सिर झुका हुआ और चेहरा अटपटा सा लगता है। कन्धे चौडे, फैले और टेढमेढे होते हैं। पेट पतला, जंघाएं बारीक तथा घुटने और पैर भी टेढेमेढे होते हैं। चाल शराबी जैसी लडखडाती प्रतीत होती है। घुटने एक दुसरे से सटे रख कर चलते हैं। शनि पूर्व की ओर हो तो प्रमाणबद्धता और मृदुता कुछ हद तक होती है। कद नाटा होता है। **पश्चिम की ओर हो तो** कृश, और अधिक काले रंग का होता है। शरीर पर केश बहुत कम होते हैं। शनि के शर कम हों तो कृशता ज्यादा होती है। शर अधिक हो तो मांसल शरीर होता है। दक्षिण शर हो तो मांसल शरीर होकर चाल जलदी होती है। उत्तर शर हो तो केश बहुत और शरीर मांसल होता है। स्तंभित शनि हो तो साधारण मोटापा होता है। मार्गी होते समय स्तंभित शनि मोटा, टेढामेढा और दुर्बल शरीर देता है।

कुण्डली में शुभ सम्बन्ध में हो तो---गहरा विचार करना, कम बोलना, अति व्यवस्थित बरताव, परिश्रम बहुत करना,

किसी भी विषय पर गम्भीरतासे बोलना, लेनदेन में खुले दिल से व्यवहार, जीवन का उत्तरार्ध सुखमय होना, व्यासंगी होना, अभ्यासशील वृत्ति यह इस व्यक्ति के विशेष होते हैं। सब तरह से व्यवस्थित स्वभाव होता है।

कुण्डली में अशुभ सम्बन्ध में हो तो--लोगों से शत्रुत्व करना, लोभी मत्सरी स्वभाव, अविश्वासी वृत्ति, डरपोक होना, हमेशा किसी संकट में होने जैसा बरताव, हीनता, कंजूसी, अपना सच्चा स्वरूप छुपाना, आलसी वृत्ति, संशय लेना, स्वार्थपरता, स्त्रियों के बारे में तिरस्कार, झूठ बोलना, दुष्टता, असन्तोष, हमेशा रोनी सूरत रहना यह इस व्यक्ति के विशेष गुण होते हैं। साधारणतः ये व्यक्ति अपना कार्य धूर्तता से सिद्ध करते हैं। लोगों को अपनाही मन ठीक है ऐसा समझाते हैं, दुष्टता और प्रतिशोध की भावना से काम करते हैं, धर्म की बिलकुल फिक्र नही करते, गालीगलौज खुल कर करते हैं, बीभत्स बोलते हैं, ठग, बहुत खानेवाले झगडालू, लोभी होते हैं। यह क्वचित ही धनवान होता है।

एलनलिओ--यह ग्रह शान्त, गम्भीर और विचारी प्रवृत्ति देता है। निसर्गतः वृद्धावस्था पर इसका अधिकार है, तारुण्य बीत जाने तक इसके फलों का ठीक अनुभव नही मिलता। आत्मविश्वास, संकुचित वृत्ति, मितव्यय, सावधानता, धूर्तता ये इसके स्वभाव विशेष होते हैं। इच्छाशक्ति प्रबल होने से सहनशील, शान्त, स्थिर, दृढ प्रवृत्ति होती है। उल्हास, आनन्द, प्रसन्नता ये गुण क्वचित दिखाई देते हैं। समाज में किसी की श्रेष्ठता न मानना, हंसी मजाक का वातावरण बनाना यह

प्रवृत्ति होती है। व्यवहारज्ञान और कुशलता अच्छी होने से लोगों के साथ बरताव में और व्यवसाय में चतुरता से व्यवस्था करते हैं। मनुष्य की योग्यता देख कर उससे काम करा लेते हैं। महत्त्वाकांक्षी, दूर की सोचनेवाले, योजनाएं बनानेवाले होते हैं। किन्तु किसी भी योजना की सफलता में बहुत समय लगता है। जगत में सच्चे और झूठे का भेद समझना यह इसका श्रेष्ठ गुण होना है।

हमारा अनुभव--यह ग्रह कुण्डली में विकसित शुभ फल देना हो तो कौटुम्बिक प्रेम का विकास होता है। इन लोगों को सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति की इच्छा होती है और उसके लिये प्रयत्न भी करते हैं। उपभोग करते हुए भी त्यागी होते हैं। लोककल्याण के लिये प्रयत्नशील रहते हैं। अभिमान नही होता। मिलनसार, उदार, राष्ट्रोपयोगी कार्य में तत्पर, अनेकों के घर बसानेवाले, परोपकारी वृत्ति के होते हैं। विद्वान, संशोधक, मंत्री आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करनेवाले पुरुष होते हैं। ज्ञान, विश्वबन्धुत्व, प्रेम, पवित्रता ये भावनाएं विकसित होती हैं। किसी भी शास्त्र में तह तक खोज करनेवाले, अनासक्त, अधिकार की इच्छा न होते हुए भी अधिकार प्राप्त करनेवाले होते हैं। गूढ शास्त्रों का अभ्यास, लेखन, ग्रंथप्रकाशन तत्त्वज्ञान का प्रसार इन प्रवृत्तियों में भाग लेते हैं। अपमानित स्थिति में दीर्घकाल न रह कर स्वाभिमान से दो दिन में मरना अच्छा समझते हैं। कीर्तिमान, संस्थाओं के स्थापक, अन्याय का प्रतिकार करनेवाले, जुल्म न सहनेवाले होते हैं। बहुत श्रीमान, अपने सुख की फिक्र करनेवाले, लोगों की बातों से अलिप्त रहते हैं। यह गोद लिये

जाने का योग होता है । लोगों पर उपकार या अपकार करने की इच्छा नही होती । इन्हें मित्र कम होते हैं । ये डरपोक, कुछ धूर्त, संशयी, प्रतिशोध की भावना रखनेवाले होते हैं किंतु ये दोष छिपाने की कोशिश करते हैं । सावधान, दीर्घोद्योगी, सौजन्ययुक्त, नियमित व्यवस्थित, कार्य में दृढ, गंभीर, अंगीकृत काम वहुत प्रयत्न से पूर्ण करनेवाला, हठी, दुराग्रही, लोगों का न सुनकर अपने दिल से काम करनेवाला, अपने विचार गुप्त रखनेवाला, दीर्घद्वेषी, अकारन गलतफहमी कर लेनेवाला ऐसा इस व्यक्ति का स्वभाव होता है । संसार में आसक्त और दीर्घायु होते हैं । इन्हें अधिकार की बहुत लालसा होती है किन्तु इनका अधिकार कायम नही रहता । राष्ट्रीय कार्य में भाग लेना, कानून का अभ्यास, देनलेन में चिकित्सा किन्तु लोगों का आदर सत्कार करना, मधुर बोलना यह प्रवृत्तियां होती हैं ।

शनि कुण्डली में अशुभ फल देता हो तो—स्वार्थी, धूर्त, दुष्ट, मन चाहे वैसा वर्ताव करनेवाला, दुर्वल मन का, आलसी मन्द बुद्धि, उद्योग से पराङमुख, अविश्वासी, गर्वीला, नीच कामों में मग्न, घातपाती कृत्यों में आनन्द माननेवाला, झगडालू, झगडे लगानेवाला, विरोध बढानेवाला ऐसा व्यक्तित्व होता है । थोडी थोडी बचत करते हैं किन्तु बडे खर्च रोक नही सकते । व्यवसाय में चिकित्सक, सचझूठ में भेद न करनेवाला, दूसरों की तरक्की में वुरा माननेवाला, कठोर बोलनेवाला यह इस व्यक्ति का स्वरूप होता है । विचित्र मनोवृत्ति, असन्तोष, व्यसनों में आसक्ति, स्त्रियों की अभिलाषा, पापपुण्य की परवाह न करना, विषयमग्नता, दुराचरण, अच्छे कामों में विघ्न लाना, अपने सुख

और फायदे की ओर ही देखना, दूसरों की गलतियां ढूंढते रहना, बीभत्स बोलना, अविचारी बरताव, दूसरों के धन का अपहरण, धन की तृष्णा, सत्ता के लिये कोशिश, सत्ता मिलते ही जुल्म और दुराचार शुरू करना, अपने को ही सर्वश्रेष्ठ मानना, क्रोधी प्रवृत्ति, दांभिक बरताव, उपाधियों की प्राप्ति के लिये झूठ का आश्रय, गद्दारी, दारिद्र्य ये गुणधर्म पाये जाते हैं।

सामान्यत:——शनि के लिये मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक, मीन तथा मिथुन ये राशियां शुभ हैं। तुला और कुम्भ अशुभ हैं। वृषभ, कन्या और मकर बहुत अनिष्ट हैं। इन्हें उत्पात राशि कहा है।

प्रकरण ४ था

कारकत्व विचार

शनि के कारकत्व के विषय में पुरातन लेखकों के विचार पहले देखिए——

कल्याणवर्मा—त्रपुसीसकाललोहककुधान्यमृतबंधभृतकानाम्। नीचस्त्रीपण्यकदासवृद्धजनदीक्षाप्रभुः सौरिः॥ टिन, सीसा, लोहा, हलके धान्य, प्रेत की अर्थी के वाहक, नीच, स्त्रियों का व्यापार, गुलाम, वृद्ध, दीक्षा इन विषयों का कारक शनि है।

गुणाकर——दासों का कारक शनि है। यवनमत से वृद्धत्व भी इसी का कारकत्व है——जरा यवनैस्तथैव।

वैद्यनाथ--आयुर्जीवनमृत्युकारणविपत्संपत्प्रदाता शनिः। दारिद्र्यदोषजनिकर्मपिशाचचौरैः क्लेशं करोति रविजः सह सन्धिरोगैः ॥ आयु, मृत्यु के कारण, संपत्ति और विपत्ति का विचार शनि से करना चाहिये। दारिद्र्य, पिशाच बाधा, चोरी सन्धिरोग ये दोष शनि के अधिकार के हैं।

पराशर--आयुष्यं जीवनोपायं दुःखशोकमहद्भयम् सर्वक्षयं च मरणं मन्देनैव विनिर्दिशेत् ॥ महिषायगजतैलवस्त्रशृंगार-प्रयाणसर्वराज्यदार्वायुधगृहयुद्धसंचारशूद्रनीलमणिविघ्नकेशशल्य-शूलरोगदासदासीजनायुष्यकारकः शनिः ॥ शनि के स्वामित्व के विषय इस प्रकार हैं--आयुष्य, जीवन के उपाय, दुःख, भय, शोक, नाश, मरण, भैंस, हाथी, तेल, कपडे, शृंगार, प्रवास, राज्य, लकडी के आयुध, घर के झगडे, शूद्र, नीलरत्न, विघ्न, केश, शल्य, शूलरोग, गुलाम।

सर्वार्थचिन्तामणि--लोभमोहविषमपरपीडानिर्घातनैष्ठुर्य-दुर्मतिदारिद्र्यदुर्मर्षामयवातवंचनमहिषीयवागूकृष्णधान्यायुष्यजीव-नोपायकारकः शनिः। लोभ, मोह, विषमता, दूसरों को कष्ट देना, नाश करना, निष्ठुरता, दुष्ट बुद्धि, दरिद्रता, बुरा क्रोध, वातरोग, ठगना, भैंस, पेज, काले धान्य (तिल, उडद, चना आदि), आयुष्य तथा जीवन के उपाय इन विषयों का कारक शनि है।

मन्त्रेश्वर--तैलक्रयी भृतकनीचकिरातकायस्काराश्च दन्तिकरटाश्च पिकाः शनौ स्युः। बौद्धाहितुण्डिकखराजवृकोष्ट्र-सर्पध्वांतादयो मशकमत्कुणकृम्युलूकाः ॥ वातश्लेष्मविकारपाद-

विहृतिं चापत्तितन्द्राश्रमान् भ्रान्तिं कुक्षिरुगन्तरुष्णभृतकध्वंसं च पार्श्वाहृतिं। भार्यापुत्रविपत्तिमंगविहृतिं हृत्तापमर्कात्मजो वृक्षाश्मक्षतिमाह कश्मलगणैः पीडां पिशाचादिभिः॥ तेल के व्यापारी, नौकर, नीच, वनचर, लुहार, हाथी, कोकिल, संपेरे, बौद्ध, गधा, बकरा, भेडिया, ऊंट, सांप, कौआ, मच्छर, खटमल, कृमि, उल्लू, आदि पर, शनि का अधिकार है। वात, श्लेष्म (कफ), पैरों के रोग, आपत्ति, तन्द्रा, श्रम, भ्रम, पसलियों का दर्द, अन्दर की उष्णता, नौकरों का नाश, स्त्रीपुत्रों पर विपत्ति, अवयव टूटना, हृदय को कष्ट, वृक्ष या पत्थर से आघात और पिशाचों की बाधा ये शनि के विषय हैं।

विद्यारण्य—आयुष्यं जीवनोपायं मरणं च शनैश्चरात्। इसका अर्थ पहले आ चुका है।

कालिदास—जाड्यादिप्रतिबन्धकाश्वगजचर्मायप्रमाणानिसंक्लेशोव्याधिरोधदुःखमरणं स्त्रीसौख्यदासीखराः। चाण्डाला विकृतांगिनो वनचरा बीभत्सदानेश्वरावायुर्दायनपुंसकान्त्यजखगाः प्रेताग्निदासक्रियाः॥ आचारेतररिक्तपौरुषमृषावादित्वदार्वानिला वृद्धस्नायुदिनान्तवीर्यशिशिरर्त्वत्यन्तकोपश्रमाः। कुक्षत्रोदितकुंडगोलकजनिर्मालिन्यवस्त्रं गृहं तादृग्वस्तुमनोविचारखलमैत्री कृष्णपापानि च॥ क्रौर्यं भस्म च नीलधान्यमणिलोहौदार्यसंवत्सराः शूद्रो विट् पितृकारकोन्यकुलविद्यासंग्रहः पंगुता। तीक्ष्णं कंबलवस्त्रपश्चिममुखे संजीवनोपायकाधोदृष्टी कृषिजीवनायुधगृहज्ञातिर्बहिःस्थानकाः॥ ईशान्यप्रियनागलोकपतने सग्रामसंचारिता शल्यं सोसकदुष्टविक्रमतुरुष्का जीर्णतैलेपि च। दासब्राह्मणतामसे च विषभूसंचारकाठिन्यके भीतिर्दीर्घनिषादवैकृतशिरोजाः सर्वराज्यं

भयम् । छागाद्या महिषादयो रतिरतो वस्त्रादिशृंगाररता मृत्यू-पासकसारमेयहरिणाः काठिन्यचित्तं शनेः ।। शनि से निम्नलिखित विषयों का विचार करना चाहिये—मूर्खता, कैद, घोडा, हाथी, आय, चर्म, प्रमाण, क्लेश, रोग, विरोध, दुःख, मरण, स्त्रीसुख, दासी, गधे, चाण्डाल, विकृत अवयववाले (काने, लंगडे आदि), वनचर, बीभत्स, उदार, आयुष्य, नपुंसक, अन्त्यज, पक्षी, प्रेत, अग्नि, दास, आचार, पौरुष की कमी, झूठ बोलना, लकडी, वायु, वृद्ध, स्नायु, सन्ध्याकाल, वीर्य, शिशिर ऋतु, बहुत क्रोध, अतिश्रम, क्षत्रियों की अवैध सन्तान, मलिनता, घर, कपडे तथा विचार अपवित्र होना, दुष्टों से मैत्री, बहुत बुरे पाप, क्रूरता, भस्म, काले धान्य, लोहा, उदारता, वर्ष, शूद्र, वैश्य, पिता, दूसरे कुलों के ज्ञान का संग्रह, लंगडापन, तीक्ष्णता, कम्बल, पश्चिम की ओर मुख, जीवन के साधन, नीचे दृष्टि, खेती, शस्त्र, जाति, बाहर के स्थान, ईशान्य दिशा, नागलोक, लडाई, प्रवास, शल्य, सीसा, बुरे पराक्रम, तुर्क लोग, पुराना तेल, ब्राह्मण, तामसी स्वभाव, विष, भूमिसंचार, कठिनता, डर, निषाद, विकृति, सुदृढ, धमनियां, सर्व राज्य, बकरे, भैंसे आदि, रति, वस्त्रादि, शृंगार, मृत्यु की उपासना, कुत्ते, हरिण आदि तथा चित्त की कठोरता ।

विलियम लिली—शनिप्रधान व्यक्ति साधारणतः किसान, श्रमिक, वृद्ध, साधु, सांप्रदायिक, भिक्षुक, विदूषक, पुत्रपौत्रों से युक्त होते हैं। व्यवसाय की दृष्टि से—चमार, रात के काम करने-वाले श्रमिक, खदानों के श्रमिक, टिन का काम, कुम्हार, झाडू बनानेवाले, नल लगानेवाले, ईंटें बनानेवाले, रसोइये, चिमनी साफ करनेवाले, प्रेतवाहक, खोदनेवाले, सईस, कोयले के

व्यापारी, गाडी चलानेवाले, माली, मोमबत्ती बनानेवाले, काले कपडे, ग्वाल ये शनि के कारकत्व में आते हैं। रोगों का कारकत्व–दांत, दाहिने कान के रोग, चौथे दिन का बुखार शीतज्वर, उष्णता से और उदासीनता से उत्पन्न ज्वर, कोढ, रक्तपित्त, क्षय, कामला, अर्धांगवायु, कंप, निरर्थक भीति, पागलपन, जलोदर, सन्धिवात, अति रक्तस्त्राव, हड्डियों का टूटना आदि। यह सिंह या वृश्चिक में हो अथवा शुक्र की अशुभ दृष्टि, में हो तो इन रोगों का उदय होता है।

हमारे अनुभव—शनि के कारकत्व के बारे में हमने निम्न विषयों का अनुभव देखा है–बैंक, व्याज का धन्धा, मिल, कारखाने, मिलों से सम्बन्धित कानून, भूगर्भ शास्त्र, मुस्लिम कानून, मिलमालिक, साझीदार, प्रिन्टिग प्रेस, कोयले का व्यापार, बडी कम्पनियां, जिनिग प्रेसिग फैक्टरी, इस्टेट ब्रोकर, खदानों के कानून, बीमा व्यवसाय, लोहे की चीजें, वैद्यकीय कानून, कृषि विद्यालय, पूंजीपति, तेल के व्यापारी और कारखाने, इस्टेट सम्बन्धी कानून, भूमि सम्बन्धी कानून, रोमन कानून, पुरातत्त्व संशोधन, स्नायु शास्त्र, हठयोग, उच्चन्यायालय, न्यायाधीश, नगरनिगम, जनपद, जिलापरिषद, विधानसभा आदि के सदस्य, जमींदार, खनिजपदार्थ, गुप्त बातें, दुष्टतापूर्ण काम, खलनायक, कैद, दण्ड, राजनीति और व्यवसाय में हानि, सरकार की ओर से मुकदमा चलाया जाना, छोटे भाईबहन चोरी, जेलर, जेलसुपरिटेंडेंट, विदेशमन्त्री, विदेशनीति, सन्धि, शत्रुत्व या मैत्री, इन्जेक्शन, क्वार्टर मास्टर (सेना में), (रोगों

मे--) हड्डियों के व्रण, दाद, इसब, फोडे, सन्धिवात, यकृत और प्लीहा रोग, पैर और घुटनों के रोग, मलमूत्रोत्सर्जक इन्द्रियों के रोग, हाथीपांव, पसीने को दुर्गन्धि होना, गूंगापन।

प्रकरण ५

द्वादशभाव विचार

प्रथमस्थान में शनि के फल

आचार्य--अदृष्टार्थो रोगी मदनवशगोत्यन्तमलिनः शिशुत्वे पीडार्तः सवितृसुतलग्नेत्यलसवाक्। गुरुस्वर्क्षोच्चस्थे नृपतिसदृशो ग्रामपुरपः सुविद्वांश्चार्वंगो दिनकरसमोन्यत्र कथितः॥ शनि लग्न में हो वह व्यक्ति निर्धन, रोगी, कामुक, बहुत मलिन, बचपन में रोगों से पीडित तथा आलसी होता है। यह शनि स्वगृह, उच्च या गुरु की राशि में (धनु मीन, मकर, कुम्भ या तुला में) हो तो वह व्यक्ति राजा जैसा सम्पन्न, नगर या गांव का प्रमुख, विद्वान, सुन्दर होता है। अन्य स्थानों में शनि के फल रवि के समान समझना चाहिये। यही वर्णन गुणाकर, जयदेव, कल्याण-वर्मा, तथा मन्त्रेश्वर ने दिया है।

वैद्यनाथ--दुर्नासिको वृद्धकलत्ररोगी मन्दे विलग्नोपगतेंग-हीनः। महीपतुल्यः सुगुणाभिरामो जातः स्वतुंगोपगते चिरायुः॥ इस के नाक में दोष रहता है, स्त्री वृद्ध जैसी होती है। यह रोगी, अंगहीन (किसी अवयव में दोषयुक्त) होता है। शनि

स्वगृह या उच्च में हो तो राजा जैसा, गुणवान, तथा दीर्घायु होता है।

गर्ग—कंडूतिपूर्णांगकफप्रवृत्तिर्लग्ने शनौ स्यात् सततं नराणाम् । हीनाधिकांगत्वमधःप्रदेशे कर्णांतरे वातगदः सदैव ।। लग्ने मन्देऽथवा दृष्टे कृशदेहश्च दुःखितः । मूर्खश्च मदनाचारो भिन्नवर्णस्तनौ भवेत् ।। लोहादिभिः शिरःपीडा आत्मचिन्ता निरन्तरं । तुलाकोदंडमीनानां लग्नसंस्थे शनैश्चरे ।। करोति भूपतिं जातमन्यराशौ गतायुषं । स्थविरौ सबलौ यस्य ग्रहौ स्यातां विलग्नगौ । प्रकृत्या स भवेद् वृद्धो मान्यः सर्वजनेषु च ।। इसके सब शरीर में खुजली रहती है, कफ प्रवृत्ति रहती है, नीचे के भाग में कोई अवयव कम या अधिक रहता है । कान में वातरोग होता है । शरीर कृश होता है। यह दुःखी, मूर्ख, कामुक और विवर्ण होता है । इस के सिर में लोहे की चीज के आघात से पीडा होती है । हमेशा अपने बारे में चिन्ता रहती है । यह अल्पायु होता है । तुला, धनु या मीन लग्न में यह शनि राजा जैसी समृद्धता और दीर्घायु देता है । लग्न में वृद्ध ग्रह बलवान हों (गुरु व शनि) तो वह प्रौढ प्रकृति का और लोकमान्य व्यक्ति होता है ।

आर्यग्रन्थ—सततमल्पगतिर्मंदपीडितस्तपनजे तनुगे खलुचाधमः । भवति हीनकचः कृशविग्रहो निजसुहृद्रिपुसद्मनि मानवः ।। यह बहुत कम चलता है, अहंकारी और अधम होता है। इसे केश कम होते हैं और इस का शरीर कृश होता है । यह शत्रुओं से मित्रता करता है ।

बृहद्यवनजातक---प्रसूतिकाले नलिनीशसूनौ स्वोच्चत्रिकोणर्क्षगते विलग्ने । कुर्यान्नरं देशपुराधिनाथं शेषर्क्षसंस्थे सरुजं दरिद्रम् ॥ शरार्किः अरिष्टं करोति ध्रुवम् ॥ लग्नस्थ शनि स्वगृह, मूलत्रिकोण या उच्च राशि में हो तो देश या नगर की प्रमुखता मिलती है । अन्य राशियों में रोगी और दरिद्री होता है । यह ५ वें वर्ष में संकट उत्पन्न करता है । ढुंढिराज ने भी यही वर्णन किया है ।

पराशर---रवि और मंगल के सदृश फल बतलाये हैं अर्थात्–सिर के रोग, बन्धुओं से विरोध, तथा चपलता और फोडेफुन्सी आदि होना ये फल हैं ।

वसिष्ठ---बहुदुःखभाजं । सर्वनाशः । यह शनि बहुत दुःख देनेवाला और सर्वनाश करनेवाला होता है ।

जागेश्वर---यदा मन्दतो वन्हिखेटा विलग्ने नरं दन्तुरं दन्तरोगान् प्रकुर्युः । तथा काष्ठपाषाणजैश्चापि घातैः सलोहैः सदा दुःखितो वायुरोगैः ॥ शनिर्यस्य शीर्षे बलं चाधिकारं तथा सौष्ठवं कुत्र लभ्यं च तस्मात् । स्वयं मत्सरी क्रूरदृष्टिः सकोपः स्त्रिया संजितः स्त्रीप्रधानो भवेद् वा ॥ शनि आदि तीन ग्रह लग्न में हो तो दांत बडे होते हैं । दांतों के रोग होते हैं । लकडी, पत्थर, या लोहे के आघात से कष्ट होता है । वातरोग होते हैं । उसे बल, अधिकार, सौष्ठव प्राप्त नही होते । वह मत्सरी, क्रूर, स्त्री के अधीन होता है ।

नारायणभट्ट---धनेनातिपूर्णोऽतितृष्णो विवादी तनुस्थेऽर्कजे स्थूलदृष्टिर्नरः स्यात् । विषं दृष्टिजं तद्विकृद् व्याधि बाधाः

स्वयंपीडितो मत्सरावेश एव ।। यह धनवान किन्तु बहुत लोभी, विवाद करनेवाला, स्थूल दृष्टि का होता है। इस की दृष्टि विषयुक्त होती है (अच्छी वस्तु पर इसकी लोभी निगाह पडे तो वह वस्तु नष्ट होती है)। यह रोगों और चिन्ताओं से पीडित होता है। मत्सर के कारण खुद ही परेशान होता है।

लखनऊ-नबाब---ताले यदि स्याज्जुहलो बदअक्लश्च लागरो मनुजः। शठकंबुरुं बेदिलः वाममतिपूर्णः प्रभुर्भवति ।। यह मूर्ख, दुर्बल, दुष्ट, कुरूप, निर्दय और टेढी बुद्धि का व्यक्ति होता है।

हरिवंश---स्वोच्चे जीवगृहे स्वालयस्थः शनिश्चेत् लग्ने कोणे भूपतुल्यं मनुष्यं। कुर्याच्छेषे संस्थितो रोगयुक्तं दीनं हीनं दुःखभाजं दरिद्रं ।। लग्न अथवा कोण में शनि तुला, धनु, मकर, कुम्भ या मीन में हो तो राजा जैसा पद मिलता है। अन्य राशियों में वह व्यक्ति रोगी, दीन, निर्धन और दुखी होता है।

काशीनाथ---लग्ने शनौ सदा रोगी कुरूपः कृपणो नरः। कुशीलः पापवुद्धिश्च शठश्च भवति ध्रुवम् ।। यह हमेशा रोगी रहता है। कुरूप, कंजूस, दुराचारी, पापबुद्धि और बदमाश होता है।

हिल्लाजातक---इस स्थान में शनि के फल मंगल के समान बतलाये हैं।

गोपाल रत्नाकर---यह पुत्ररहित, दुर्बुद्धि, मलिन, कामुक, रोगी और कुरूप होता है। यह दुष्टों की संगति में रहता है।

राजा के क्रोध का विषय होता है। वातपीडित होता है। उच्च में यह शनि हो तो गांव का प्रमुख होता है।

भृगसूत्र--दृष्टचैव रिपुनाशकः तनुस्थाने शनिर्यस्य धनी पूर्णतृषान्वितः स्थूलदेहो विषदृष्टिः वातपित्तदेहः। उच्चे पुरग्रामाधिपः धनधान्यसमृद्धिः। स्वक्षें पितृधनवान्। वाहने-शकर्मेशभाग्यक्षेत्रे वहुभाग्यम् महाराजयोगः। चन्द्रमसादृष्टे परान्नभुक्। शुभदृष्टे निवृत्तिः॥ यह धनवान, शत्रु का नाश करनेवाला, लोभी, मोटा, वातपित्त प्रकृति का होता है। इस की दृष्टि विषैली होती है। शनि उच्च में हो तो गांव या शहर का मुख्य होकर धनधान्य की समृद्धि रहती है। स्वगृह में हो तो पैतृक सम्पत्ति मिलती है। यह वाहनेश, दशमेश या भाग्येश की राशि में हो तो राजयोग होता है। चन्द्र की दृष्टि हो तो दूसरों पर अवलम्बित रहना पडता है। अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो यह दोष दूर होता है।

पाश्चात्य मत--यह शनि शुभ सम्बन्ध में हो तो भाग्योदय कराता है। पूर्व आयु में संकट और मुसीबतें झेल कर दीर्घ उद्योग से और आत्मविश्वास तथा धैर्य से आखिर सफलता प्राप्त होती है। शनि अशुभ सम्बन्ध में हो तो वे लोग डरपोक, वडे कामों से दूर रहनेवाले, दूसरों पर विश्वास रखनेवाले, दुष्ट, लोभी, मत्सरी, दीर्घद्वेषी, ठग, दुःखी, उद्विग्न तथा एकान्तप्रिय होते हैं। लोगों में अप्रिय तथा जीवन में असफल होते हैं। निराशा, दुःख, कष्ट, कामों में विघ्न यही इन का जीवनक्रम होता है। पूर्व आयु में रोगी रहते हैं। जुखाम, गिरने से सिर को

चोट लगना आदि कष्ट होते हैं। वृश्चिक लग्न में वद्धकोष्ठ सिंह में रक्ताभिसरण में दोष, कर्क में पचनक्रिया के दोष, तुला में मूत्राशय के रोग होते हैं। साधारणत: लग्नस्थ शनि से प्रवृत्ति उदासीन, हठी, निश्चयी, एकान्तप्रिय, लज्जाशील, एकही बातपर अडे रहने की मनोवृत्ति इस प्रकार होती है। यह हर तरह से स्वार्थ साधनेवाला, लोभी किन्तु दुखी और ठग होता है। धार्मिक आचारविचार के बारे में इस के मत अजीब से होते हैं। लग्नस्थ शनि अग्निराशि में हो तो स्वभाव कुछ मिलनसार, सरल तथा प्रामाणिक होता है। किन्तु साथ में साहस, क्रोध, झगडे और वादविवाद की रुचि होती है। पृथ्वीराशि में और विशेषत: वृषभ में मन्दता, नीचता, दुष्ट और दीर्घद्वेषी वृत्ति रहती है। कन्या में जरूरत से ज्यादा पूछताछ करना, चिडचिडा मिजाज, संशयी वृत्ति यह स्वभाव होता है। मकर में धूर्त, वादविवाद में कुशल, स्वार्थी, मतलबी, परिश्रमी, लोभी, कंजूस होता है। वायुराशि में शनि विचारी, अभ्यासी, व्यासंगी, मेहनती, उद्योगी व्यवहारकुशल, पैसों के वारे में व्यवस्थित, अपने हित में दक्ष, धार्मिक, सच बोलनेवाला, निष्कपट, आस्थापूर्ण, भाविक तथा कर्मठ व्यक्तित्व देता है। मिथुन व कुम्भ में ये गुण अच्छी तरह देखे जाते हैं। तुला में गर्विष्ठ, अपना ही मत सच माननेवाला, दुराग्रही स्वार्थी, कंजूस स्वभाव होता है। शनि शुभसम्बन्ध में हो तो फलों में कुछ सुधार होता है किन्तु अशुभ सम्बन्ध में हो तो अशुभ फल अत्यन्त तीव्र होते हैं। कर्क या मीन में मन्दबुद्धि, दु:खी, बीभत्स, दुराचारी, पतित, अधर्मी, होता है। क्वचित धर्म के बारे में अतिरिक्त उत्साह भी बतलाते हैं। वृश्चिक में

अशुभ सम्बन्ध में शनि हो तो वह व्यक्ति अति धूर्त, दुष्ट, द्वेषी, प्रतिशोध की भावना रखनेवाला, विश्वास कें अयोग्य और ठग होता है। वह मत्सरी, डरपोक और सोचविचार करनेवाला होता है। अग्निराशि में काम में कुशल किन्तु हमेशा असन्तुष्ट रहता हैं। पृथ्वीराशि में मूर्ख, विचारशून्य होता है। कन्या में कहानियां सुनने का शौक होता है। वह संशयी, कंजूस और चोर होता है।

हमारे विचार---किसी अन्धियारी रात में निरभ्र आकाश में दूरबीन से शनि की ओर देखें तो वह किसी शिवलिंग या तेलघानी जैसा प्रतीत होता है। यह विशाल गोलाकार ग्रह कई रंगों से युक्त है। ध्रुवों पर नीला, अन्यत्र पीला सा और बीच में एक सफेद पट्टा दिखाई देता है। उस पर पिंगल, जामुनी या लाल रंग के धब्बे भी हैं। मध्य के ग्रहगोल को घेर कर तीन वलय हैं। उन में बीच का वलय बहुत आकर्षक जामुनी रंग का है। ये वलय ग्रहगोल से सटे हुए नही हैं। इस प्रकार शनि इन वलयों के बीच में अलगसा स्थित है। तदनुसार लग्नस्थ शनि के फलों में एकान्त प्रिय होना, आलस, निष्क्रियता, उदासीनता, प्रपंच से दूर रहना, जडता इन का वर्णन किया है। दूसरे–पुरानी ग्रहमाला में यह अन्तिम ग्रह है। सूर्य उत्पत्ति का, चन्द्र स्थिति का और शनि विनाश का कारक माना गया है। इसलिये मूलतः शनि के फल अशुभ और मारक समझे गये। नैसर्गिक कुण्डली में दशम और लाभस्थान का स्वामी होनेपर भी इसे शुभ नही माना गया। फिर भी हमारी समझ में शनि के अशुभ फल मुख्यतः वृषभ, कन्या, मकर, तुला तथा कुम्भ राशियों में मिलते

हैं। अन्य राशियों में शुभ फल भी प्राप्त होते हैं। तुला, मकर, कुम्भ में शनि के उत्तम (राजा जैसी समृद्धि) फल शास्त्रकारों ने दिये हैं किन्तु अनुभव से ये फल ठीक प्रतीत नही होते। यवनजातक में ५ वें वर्ष संकट का फल बतलाया है। इस समय शनि तृतीय स्थान में भ्रमण करता है अतः उस का मारक फल नही होगा।

हमारा अनुभव—इस स्थान में मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक तथा मीन में शनि हो तो बहुधा वे व्यक्त किसी आफिस में नोकर होते हैं। इन्हें वरिष्ठों से झगड कर उन्नति करनी पडती है। पेन्शन के समय तक स्थिति अच्छी हो जाती है। अधिकार अच्छा रहता है। इन का विवाह एक होता है। पुत्र सन्तति कम होती है या नही होती। कन्याएँ अधिक होती हैं। मेष, सिंह, तथा धनु में आँखें बडीं किन्तु सदोष होती हैं। शरीर प्रमाणबद्ध नही होता है। आवाज रौब से भरा और दृष्टि अधिकारपूर्ण होती है। बने जहां तक लोगों के कल्याण के लिये यत्न करते हैं। मिथुन में शनि दो विवाह कराता है। सन्तति नही होती। पूर्व आयु में बहुत कष्ट सह कर उत्तर आयु में यश प्राप्त करते हैं। ये सुशिक्षित, कानून के ज्ञाता होते हैं। डाक्टर भी हुए देखे हैं। महाराष्ट्र में प्रख्यात सर्जन डाक्टर मोने अच्छे सन्मानित अधिकारी हुए। इन के लग्न में मिथुनस्थ शनि था। सन्तति का अभाव रहा। कर्क, वृश्चिक तथा मीन में–आवाज मधुर और मोहक होता है। मीठा बोल कर काम कर लेते हैं। बोलने में और युक्तिवाद में कुशल रहते हैं। सुख से जीवनयापन करने की कोशिश करते हैं। किसी के

कनिष्ठ के रूप में काम करना नही चाहते। वृषभ, कन्या, तुला, मकर व कुम्भ में–नौकरी में सुख मानते हैं। व्यवसाय के क्षेत्र में, बडी मिलों या फर्मों में अधिकारी होते हैं। इन का कौटुम्बिक जीवन ठीक नही रहता। पत्नी से नही बनती। दो विवाह होते हैं। मिलनसार नहीं होते। गुण न होते हुए भी अभिमानी होते हैं। नाटक या सिनेमा में खलनायक हो सकते हैं। यह विषैली दृष्टि का योग है। इन व्यक्तियों द्वारा प्रशंसित वस्तु या व्यक्ति का जल्दी ही विनाश होता है। मलिन स्त्रियों से सम्बन्ध होता है। पत्नी बीमार रहती है। बचपन में माता या पिता का मृत्यु होता है। अधिकतर पिता का मृत्युयोग होता है। सिर्फ तुला के शनि से मातापिता दीर्घायुषी भी पाये गये हैं। शिक्षा अधूरी छोड कर आजीविका के लिये यत्न करना पडता है। बडा व्यापार करने की इच्छा होती है किन्तु वह जल्दी पूरी नही होती। साझीदारी से यश मिलता है। पैतृक सम्पत्ति नही होती। हुई तो भी ट्रस्टियों के अयोग्य व्यवहार से प्राप्त नही होती। स्थावर जायदाद का दलाली व्यवहार कर सकते हैं। माता पिता जीवित हों तो उन से सम्बन्ध ठीक नही रहते। उन्हें आर्थिक मदद नही हो सकती। वे रहते हैं तब तक स्थिरता नही मिलती। जीवन में असफलता मिलने पर भी ये लोग दीर्घोद्योगी होते हैं। प्राचीन संस्कृति की रुचि रहती है। बरताव दम्भपूर्ण रहता है। स्त्रियों का आदर नही करते। मन की इच्छायें पूरी नही होती। स्वभाव दुष्ट, प्रति-शोध प्रिय, सहानुभूति से रहित होता है। जीवन में प्रगति का आरम्भ २६ वें वर्ष से होता है। ३६ वें वर्ष से अच्छी सफलता

मिलती है । ५६ वें वर्ष तक सुस्थिति रहती है । २९ वें तथा ३१ वें वर्ष आर्थिक नुकसान होता है । घर में २॥, ७॥, १७॥, २७ तथा ३२ वें वर्ष में किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति की मृत्यु होती है । लग्नस्थ शनि शुक्र से दूषित हो तो विवाहसुख अच्छा नही मिलता—या तो विवाह होता नही, अथवा स्त्री की मृत्यु होती है, व्यभिचारी होते है, रखैल से सम्बन्ध रखते हैं । धनलाभ अच्छा हुआ तो पुत्र नही होते या हो कर मृत्यु हो जाती है । कन्या सन्तति रहती है । साधारणतः व्यवसाय में हमेशा असफल रहता है, धन की कमी रहती है । क्वचित स्त्री एक ही होकर कीर्ति अच्छी प्राप्त होने के उदाहरण देखे हैं । यह शनि मंगल से दूषित हो तो अपघात होना, आकस्मिक मृत्यु, कारावास, घूस खाने के आरोप आदि कष्ट का अनुभव होता है । मेष, सिंह तथा धनु में—पसीने को बदबू आती है । कपडे अच्छे नही रहते-फटे और मैले रहते है । प्रकृति नीरोग रहती है । कर्क, वृश्चिक तथा मीन में—सरदी, जुकाम, खांसी से हमेशा कष्ट होता है । बुढापे में बद्धकोष्ठ होता है । कभी कभी उन्माद, पागलपन, मूत्ररोग, बहुमूत्रमेह आदि रोग होते हैं । मिथुन, तुला तथा कुम्भ में--साधारणतः प्रकृति अच्छी रहती है । वातरोग हो सकते हैं । वृषभ, कन्या तथा मकर में—मूत्रकृच्छ, कफरोग, उपदंश आदि की संभावना होती है ।

प्रथम दर्शन में इन व्यक्तियों का अच्छा प्रभाव नहीं पडता । मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु तथा मीन में-स्वभाव बहुत अच्छा होता है किन्तु अच्छे परिचय बिना इस अच्छाई का अनुभव नही होता । अन्य राशियों में खलनायक की योग्यता

होती है । कन्या, मकर, कुंभ तथा वृषभ में अपने स्वार्थ के लिये दूसरों का नुकसान करते हैं । बोलने में संगति नही रखते। झूठ बोलते हैं । गंभीरता बतलाते हैं । धूर्त होते हैं। अब लग्नस्थ शनि के कुछ उदाहरण देखिये--

(१) जन्म चैत्र शु. ८ शक १८५२ रविवार ता. ६-४-१९३० रात्रि १२ स्थान कऱ्हाड (महाराष्ट्र)।
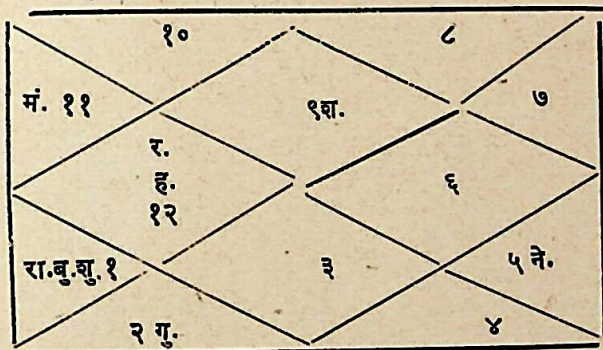
इस के पिता का मृत्यु २-१०-१९३० को हुआ । यहां लग्न में शनि है तथा रवि और चन्द्र से केन्द्रयोग है ।

(२) जन्म आश्विन व. १२ शक १८३८ रात्रि ११-२५ स्थान वेलगांव ।
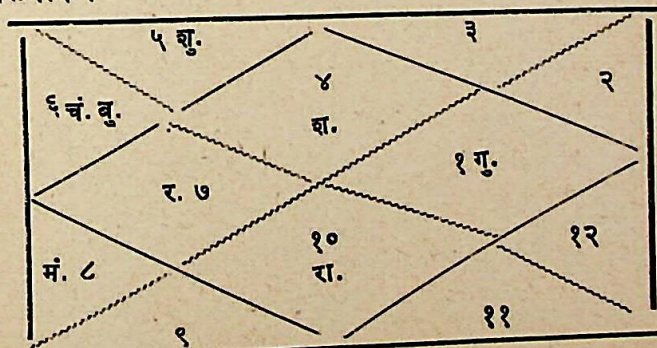
इस के आयु के दूसरे ही वर्ष में पिता अज्ञात स्थान में चला गया। लग्न में शनि और चतुर्थ में रवि का यह फल मिला।

(३) जन्म चैत्र शुद्ध ७ शक १८४६ इष्टघटी ३१-१२।
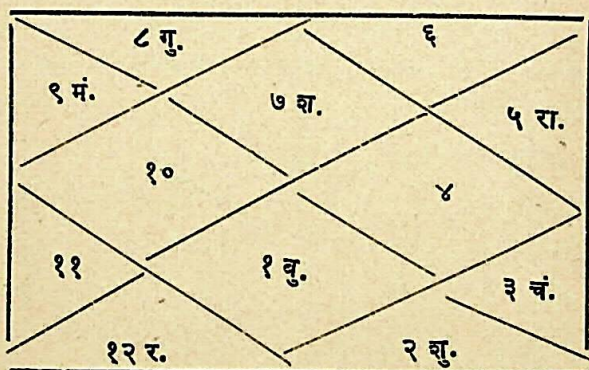
इस के पिता का मृत्यु इस के २० वें वर्ष हुआ।

(४) जन्म भाद्रपद शु. ८ शक १८०२ रविवार ता. १२-९-१८८० रात्रि ९ अक्षांश २१-९ रखांश ७३-३६।
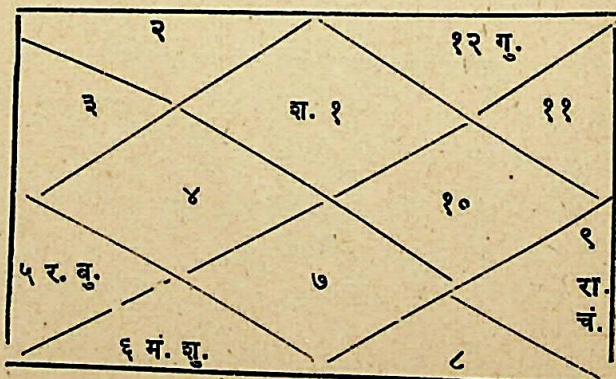
इस के ७ वें वर्ष में पिता ने हमेशा के लिये घर छोडकर कहीं प्रयाण किया।

(५) जन्म माघ व. १२ शक १८३४ दोपहर १२ अक्षांश १५.४२ रेखांश ७४–३८। इस के वृषभ लग्न में शनि है। आयु के ३ रे वर्ष माता का मृत्यु हुआ।

(६) श्री. गणपतराव खरे, अमरावती। जन्म भाद्रपद शु. ३ शक १८१७ ता. २३–८–१८९५।
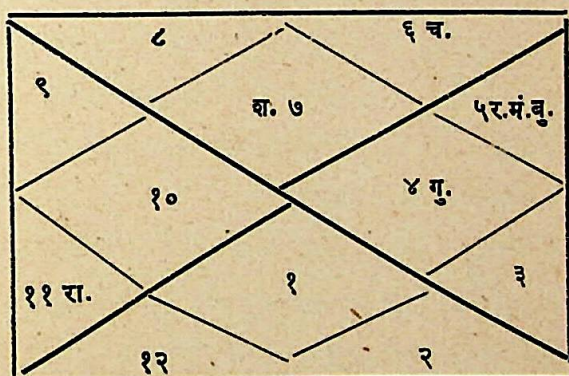
इन के दूसरे वर्ष में पिता का तथा २० वें वर्ष में माता का मृत्यु हुआ।

अब लग्नस्थ शनि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरणों का निर्देश करते हैं—स्व. गोपाल कृष्ण गोखले (तुला लग्न), स्व. वासुदेव शास्त्री खरे (कर्क), स्व. वैद्य (सांगली रियासत के दीवान) (मिथुन), श्री गणेश दामोदर सावलकर, राफेल, (मीन), श्री. दाजी नागेश आपटे वडौदा (मिथन), डा. ग. कृ. गर्दे (मिथुन), भारतरत्न डा. अण्णासाहब कर्वे (कर्क), न्यायमूर्ति पुराणिक (नागपुर) (मिथुन)।

धनस्थान में शनि के फल

आचार्य––भूरिद्रव्यो नृपहृतधनो वक्त्ररोगी द्वितीये। यह वहुत धनवान किन्तु राजा के कोप से निर्धन होता है। मुखरोग होते हैं। यही वर्णन गुणाकर ने लिखा है।

कल्याणवर्मा––विकृतवदनोऽर्थभोक्ता जनरहितो न्यायकृत् कुटुम्बगते। ।श्चात् परदेशगतो जनवाहनभोगवान् सौरे।। इस का मुख विकृत होता है। धन का उपभोग करता है। लोगों से मिल कर नही रहता। न्यायप्रिय होता है। आयु के उत्तरार्ध में विदेश जाता है। लोगों और वाहनों का सुख मिलता है।

वसिष्ठ––दु:खावहो धनविनाशकर: प्रदिष्ट:। यह दु:ख दे कर धन का नाश करता है।

पराशर––धनहानिश्च। धन की हानि होती है।

गर्ग—काष्ठांगारात्लोहधन: कुकार्याद्धनसंचय:। नीच-विद्यानुरक्तश्च।। धने मन्दे धनैर्हीनो निष्ठुरो दु:खितो भवेत्। मित्रसौम्यैर्युते दृष्टे धर्मसत्यदयान्वित:।। मृनवत्साभगिन्यादि गर्भस्त्रावादिकं वदेत्। प्रतिवेश्मादि बालानां विपत्तिरपि कथ्यते।। इसे लकडी, कोयले, लोहा आदि के व्यापार से तथा बुरे कामों से धन मिलता है। यह नीच विद्या का अभ्यास करता है। धनहीन, दुखी तथा निष्ठुर होता है। इस के बहिन की सन्तति जीवित नही रहती, गर्भपात होता है। घर तथा बच्चों की हानि होती है। इस शनि पर मित्र ग्रह या शुभ ग्रह की दृष्टि हो या उन के साथ हो तो वह व्यक्ति धार्मिक, दयालु और सत्यप्रिय होता है।

वैद्यनाथ--असत्यवादी चपलोऽटनोऽधनः शनौ कुटुम्वोपगते तु वंचकः। यह झूठ बोलनेवाला, चपल, प्रवास करनेवाला निर्धन तथा ठग होता है।

बृहद्यवनजातक--अन्यालयस्थो व्यसनाभिभूतो जनोज्झितः स्यान्नानुजश्च पश्चात्। देशान्तरे वाहनराजमान्यो धनाभिधाने भवनेऽर्कसूनौ ॥ यह दूसरों के घर रहता है, विपत्तियों से पीडित, लोगों द्वारा छोडा गया होता है। इसे छोटे भाई नही होते। विदेश में वाहनों का सुख तथा राजा द्वारा मान्यता मिलती है। यही वर्णन ढुंढिराज ने दिया है।

आर्षग्रन्थ--धननिकेतनवर्तिनि भानुजे भवति वाक्यसुहास-धनान्वितः। चपललोचनसंचयने रतो भवति चौर्यपरो नियतं सदा ॥ यह मधुर बोलता है तथा धनवान होता है। इस की दृष्टि चपल होती है। संग्रह में तत्पर तथा चोरी करनेवाला होता है।

जयदेव--स्वजनपदगतोऽस्वोऽसौ कुटुम्बोज्झितः स्यात् परजनपदयन्ता सर्वसौख्योऽसिते स्वे ॥ यह अपने देश में हो तब तक निर्धन और कुटुम्बरहित होता है। विदेश में सब सुख मिलते हैं।

काशीनाथ--धने मन्दे धनैर्हीनो वातपित्तकफातुरः। देहास्थिपित्तरोगश्च गुणैः स्वल्पोपि जायते ॥ यह निर्धन, वात, पित्त, कफ तथा अस्थि रोग से पीडित और गुणहीन होता है।

मन्त्रेश्वर--विमुखमधनमर्थेऽन्यायवन्तं च पश्चात् इतर-जनपदस्थं यानभोगार्थयुक्तं ॥ यह धनहीन, अन्यायी और विरूप

चेहरे का होता है । विदेश में जाने पर वाहन, धन तथा उपभोग प्राप्त होते हैं ।

जागेश्वर--धने पंगुना विद्यमाने सुखं किं कुटुंबात् तथा क्लेशमाहुर्जनानाम् । न भोक्ता न वक्ता वदेन्निष्ठुरं वै धनं लोहजातं न शत्रोर्भयं स्यात् ।। इसे कुटुम्ब से कोई सुख नही मिलता । लोगों से कष्ट होता है । यह वक्ता नही होता–निष्ठुर बोलता है । उपभोग प्राप्त नही होते । इसे लोहे के व्यापार से धनप्राप्ति होती है । शत्रु का भय नही होता ।

नारायणभट्ट--सुखापेक्षया वर्जितोऽसौ कुटुम्बात् कुटुम्बे शनौ वस्तु किं किं न भुंक्ते । समं वक्ति मित्रेण तिक्तं वचोपि प्रसक्ति विना लोहकं को लभेत ।। यह सुख की इच्छा से कुटुम्ब छोड देता है । मित्रों से भी तीखा बोलता है । विविध वस्तुओं का उपभोग करता है । लोहे के व्यापार से फायदा होता है ।

नबाब लखनऊ--यावागो बदहाल: कोतो दत्तश्च गुस्वरो जोहल: । जरखाने यदि मनुजो नाढ्य: परदेशगश्चापि ।। यह निर्धन, क्रोधी, दु:स्थिति में रहनेवाला तथा विदेश में जानेवाला होता है ।

गोपाल रत्नाकर--यह साधारणत: दरिद्री होता है । दो विवाह होते हैं । मुखरोग होते हैं । नेत्र दुर्बल होते हैं । इस की शिक्षा में रुकावटें आती हैं । भूमि कम रहती है । इस शनि के साथ पापग्रह हों तो बहुत अशुभ फल मिलते हैं ।

पाश्चात्य मत--इस शनि से धनहानि होती है तथा व्यापार में नुकसान होता है । शुभ संबंध में हो तो लोकोपयोगी

कार्य, कम्पनियां, शेअर, सट्टा आदि में अच्छा लाभ होता है। अजीब चीजें (Curios) तथा पुरानी चीजों के व्यापार से फ़ायदा होता है। शुभ सत्रंध में और विशेषकर तुला में यह शनि पैतृक सम्पत्ति अच्छी देता है! यह मितव्ययी, होशियार तथा दीर्घदर्शी होने से सम्पत्ति का विनियोग बडेबडे सुरक्षित व्यवसायों के विकास में करता है। इससे सम्पत्ति में अच्छी वृद्धि होती है। व्यवमायों के लिये पूंजी देनेवाले श्रीमानों (Financers) की कुण्डलियों में यह योग अक्सर पाया जाता है। यही शनि पीडित और निर्बल हो तो जीवनभर दरिद्री रहना पडता है। उदर-निर्वाह भी बहुत कष्ट से होता है। आर्थिक कष्ट होते रहता है। व्यापार या व्यवसाय में हमेशा नुकसान होता है। बहुत श्रम करने पर भी लाभ नहीं होना। इम प्रकार इस स्थान में शनि के फल देखते समय शुभाशुभ सम्बन्ध देखना आवश्यक है।

भृगुसूत्र--द्रव्याभावः। दारिद्रयम्। पापयुते दारवंचना। मठाधिपः। अल्पक्षेत्रवान्। नेत्ररोगी॥ यह धनहीन होता है। दो विवाह होते हैं। आंखों के रोग होते हैं। खेती कम रहती है। मठाधीश हो सकता है। यह शनि पापग्रह से युक्त हो तो स्त्रियों की वंचना करनेवाला होता है।

हमारे विचार--इस स्थान में कुल लेखकों ने बहुत अशुभ और अन्य लेखकों ने मिश्र फल बतलाये हैं। इनमें पूर्वार्जित सम्पत्ति के बारे में विशेष विचार करना चाहिये। साधारणतः शुक्र और गुरु इन दो ग्रहों को सम्पत्तिकारक माना जाता है क्योंकि नैसर्गिक कुण्डली में शुक्र धनस्थान का स्वामी होता है और भावकारक कुण्डली में गुरु को धनभावकारक माना है।

किन्तु नैसर्गिक कुण्डली में दशम स्थान का स्वामी शनि है और वैद्यनाथ तथा पराशर ने शनि के कारकत्व में भी सर्व संपत्ति और जीवनोपाय ये विषय दिये हैं। गुरु धन का नही–ज्ञान का कारक है इसका विवेचन गुरुविचार में किया है। तात्पर्य, हमारे मत से शुक्र और शनि ये दो ग्रह धनकारक हैं। उनमें शुक्र को नगद–रुपये, सोना, चांदी का और शनि को स्थावर घर, जमीन आदि का कारक समझना चाहिये। अतः धनस्थान में शुभ शनि पूर्वार्जित सम्पत्ति की प्राप्ति कराता है। इस स्थान में शनि के शुभाशुभ सम्बन्ध देखकर फलों का वर्णन करना चाहिये।

हमारा अनुभव––शनि जिस स्थान में हो उसके शुभ फल मिलते हैं और जिस पर उसकी दृष्टि हो उस स्थान के फल नष्ट होते हैं। 'सौरिः स्वस्थानपालः परमभयकरी दृष्टिरस्य प्रणष्टा।' इस नियम के अनुसार धनस्थान में शनि पूर्वार्जित सम्पत्ति का लाभ कराता है और उसकी रक्षा कराता है। पूर्वसम्पत्ति नष्ट नही होती है। उपजीविका ठीक चलती है। संकट नही आते। इस व्यक्ति के जन्म से घर के अन्य व्यक्तियों का मृत्युयोग होता है। पिता जीवित हो तब तक यह स्वतन्त्र धनार्जन नही कर पाता। किसी का नष्ट धन इसे प्राप्त होता है। ये लोग बहुधा नौकरी करते हैं। स्वतन्त्र व्यवसाय क्वचित ही होता है। ये विद्वान किन्तु अव्यवस्थित होते हैं। कम बोलते हैं किन्तु लोकप्रिय होते हैं। वृषभ, कन्या तथा मकर में–पूर्वार्जित सम्पत्ति नही होती या होने पर भी उसका उपयोग नही होता। अपने श्रम से उपजीविका करनी पडती है। इन का यौवन सुखपूर्ण नही होता। विवाह एकही होता है। ये

संशोधक होते हैं। घर में लोगों की परवाह नही करते। मुसाफिर जैसा व्यवहार घर में करते हैं। सार्वजनिक और राष्ट्रीय कार्य में भाग लेते हैं। आकर्षक और बहुजनसमाज के लिये मार्गदर्शक लेखन करने में ये कुशल होते हैं। कार्य में निपुण होते हैं। ये कुछ दुराग्रही, हठी, अपना ही सच माननेवाले होते हैं। खाने-पीने या कपडों की फिक्र नही करते। मेष, मिथुन, सिंह तथा धन में—दो विवाह होते हैं। सन्तति काफी होती है। धन और सन्मान प्राप्त होता है किन्तु धन का संग्रह नहीं हो सकता। घरबार, या जमीन खरीदने में धन लगाते हैं। ये चंचल होते हैं, एक मत में स्थिर नही होते अतः सार्वजनिक कार्य में उपयोगी नही होते। इन्हें अच्छे भोजन की इच्छा होती है किन्तु उसके बारे में हमेशा असन्तुष्ट रहते हैं। अधिक खाते हैं। मीठा बोलने से दूसरों पर प्रभाव डालते हैं। लोगों से अपने काम जलदी और आसानी से करा लेते हैं। धन का उपयोग लोगों के लिये करते रहते हैं। आप्तों के पोषण का भार उत्साह से वहन करते हैं। ये पत्नी की ओर विशेष ध्यान नही देते इस लिये घर में हमेशा तकरार बनी रहती है। उपजीविका ठीक चलती है। इन्हें कई और बडेबडे व्यवसाय करने की इच्छा होती है। कर्क, वृश्चिक तथा मीन में ये ही फल कुछ कम अधिक मात्रा में देखे हैं। तुला तथा कुम्भ में—विद्वत्ता का विशेष प्रभाव नही होता। सन्तति कम होती है। द्विभार्यायोग होता है। व्याज के व्यवसाय में दूसरों का धन हडपने की प्रवृत्ति होती है। किसी को मदद नही करते। आयु के १५ वें तथा २० वें वर्ष में घर के किसी प्रमुख व्यक्ति की मृत्यु होती है। २२ से

२४ वें वर्ष तक उपजीविका का प्रारम्भ होता है। यह देर से विवाह का योग है। वर्तमान स्थिति में ३६ से ३८ वें वर्षों में विवाह का योग कहा जा सकता है। अशुभ सम्बन्ध में शनि के फल प्राचीन लेखकों ने विस्तार से बतलाये हैं। इन्हें स्वदेश में कभी तरक्की प्राप्त नही होती। देशान्तर से फायदा होता है। दो या अधिक विवाह होते हैं। देशान्तर की दृष्टि से मेष, सिंह तथा धनु में उत्तर की ओर वृषभ, कन्या तथा मकर में पश्चिम की ओर (आफ्रिका आदि में), कर्क वृश्चिक तथा मीन में पूर्व की ओर (जावा. मलाया, फिजी, सयाम आदि में), मिथुन, तुला तथा कुम्भ में उत्तर की ओर लाभ होता है। वृषभ, कन्या, मकर तथा कुम्भ में कुछ उदाहरणों में पैतृक सम्पत्ति बिलकुल नही होती। उलट पिता का किया ऋण चुकाना पडना है। अपने कष्ट से धन मिलता है। किसी भी काम को सतत कर पूरा करते हैं। बोलना मीठा किन्तु वंचना से पूर्ण होता है। ये अपने ही विचार से काम करते हैं–दूसरों की सलाह नही मानते। इन्हें कोई पैसे की दृष्टि से ठग नहीं सकता। लोभी और चिकित्सक होते है। मेष. वृश्चिक तथा धन में उदार प्रवृत्ति होती है।

व्यवसाय की दृष्टि से—लकडी. कोयला, लोहा, खनिज पदार्थ, धातु, पत्थर, चूना, बालू इनका व्यापार लाभदायी होता है। खानों के व्यवसाय के लिय मध्यप्रदेश, विदर्भ में चांदा जिला, बिहार, बंगाल, आन्ध्र, मैसूर केरल, गोवा ये प्रदेश उपयुक्त हैं। अन्य प्रदेशों में उसकी सम्भावना नही। चतुर्थ के शनि के बारे में भी यही विचार करना चाहिये।

धनस्थान में शनि के प्रसिद्ध उदाहरण--स्व. अण्णासाहव लठ्ठे (बम्बई प्रदेश के अर्थमन्त्री) (मीन), स्व. रावबहादुर रंगनाथ नरसिंह मुधोलकर, अमरावती (मिथुन), स्व. सूर्यनारायणराव, विख्यात ज्योतिषी, मद्रास (मिथुन), श्री. ओरकर ज्योतिषी, बम्बई (मकर), स्व. दादाभाई नौरोजी, विख्यात राष्ट्रनेता (वृषभ), स्व. सर माधवराव बर्वे (कोल्हापूर रियासत के दीवान) (कन्या). बैरिस्टर पेठकर (मकर), स्व. बैरिस्टर मुकुंदराव जयकर (मकर), महात्मा गांधीजी (वृश्चिक), बैरिस्टर पंजाबराव देशमुख (वृश्चिक), जर्मनी के शाह विलियम कैसर (कर्क), डाक्टर खरे (भूतपूर्व मध्यप्रदेश के मुख्य मन्त्री) (मेष)।

तृतीयस्थान में शनि के फल

आचार्य व गुणाकर---मतिविक्रमवान् तृतीयगे। यह बुद्धिमान और पराक्रमी होता है।

कल्याणवर्मा---मलिनोऽसंस्कृतदेहो नीचोऽलसपरिजनो भवति सौरे। शूरो दानानुरतो दुश्चिक्यगते विपुलबुद्धिः॥ यह अस्वच्छ, गन्दे शरीर का, नीच, शूर, उदार और बुद्धिमान होता है। इसके परिवार के लोग आलसी होते हैं।

वैद्यनाथ---अल्पाशी धनशीलवंशगुणवान् भ्रातृस्थिते भानुजे सौरिस्तृतीयेऽनुजनाशकर्ता॥ यह कम खाता है। धनवान, सुशील, कुलीन, गुणवान होता है। इसके छोटे भाइयों के लिये यह योग मारक है।

पराशर---तृतीये मित्रवर्धनं धनलाभं। पृष्ठेजातं शनैश्चरः॥ मित्र बढते हैं। धनलाभ होता है। छोटे भाई की मृत्यु होती है।

गर्ग--तथा तृतीयगे मन्दे सनरो भाग्यवान् भवेत् । भवेद् दोषस्थिता पीडा शरीरे तस्य सर्वदा ।। भ्रातृगो मन्दगः कुर्याद् भ्रातृस्वसृविनाशनम् । नृपतुल्यं च सुखिनं सततं कुरुते नरम् ।। सौरिः गर्भविनाशनं च नियतं मन्त्रीश्वरो नान्यथा ।। यह भाग्यवान, राजा जैसा सुखी, मन्त्री होता है । इसके शरीर में दोष होने से पीडा रहती है । भाईवहिनों का और सन्तति का नाश होता है ।

जागेश्वर--यदा विक्रमे मन्दगामी कदुष्णं भवेन्मानसं भाग्यविघ्नः सदा स्यात् । भवेत् पालको वै बहूनां नराणां रणे विक्रमी भाग्यवान् हस्तरोगी ।। भवेद् भ्रातृकष्टं विदेशे प्रयाणं गृहे नो विरामं लभेद् बन्धुतोऽपि । भवेन्नीचसक्तो विरक्तोऽर्थधर्मे यदा विक्रमे सूर्यसूनुर्नराणां ।। इसका मन साफ नही रहता । भाग्योदय में विघ्न आते हैं । यह बहुतों को आश्रय देता है । युद्ध में वीरता बतलाता है । हाथ के रोग होते हैं । भाइयों का कष्ट रहता है । यह देशान्तर में जाता है, घर में आराम नहीं पाता । भाइयों से अच्छा नाता नही रहता । यह नीचों की संगति में रहता है । धर्म तथा धन की फिक्र नही करता ।

आर्यग्रन्थ--सहजमन्दिरगे तपनात्मजे भवति सर्वसहोदरनाशकः । तदनुकूलनृपेण समो नरः स्वसुतपुत्रकलत्रसमन्वितः ।। यह सभी भाइयों के लिये मारक होता है । स्त्रीपुत्रों से युक्त और राजा जैसा भाग्यवान होता है ।

बृहद्यवनजातक--राजमान्यशुभवाहनयुक्तो ग्रामपो वहुपराक्रमशाली । पालको भवति भूरिजनानां मानवो रविसुतेऽनुजसंस्थे ।। यह राजसभा में माननीय, उत्तम वाहनों से युक्त,

गांव में मुख्य, पराक्रमी, बहुतों को आश्रय देनेवाला, होता है। यही वर्णन ढुंढिराज ने किया है।

मन्त्रेश्वर—इसका वर्णन अबतक के कथन से विशेष भिन्न नहीं।

वसिष्ठ—स्त्रीणां प्रियं रविजस्तृतीये। यह स्त्रियों को प्रिय होता है।

काशीनाथ—छायात्मजे तृतीयस्थे प्रसन्नो गुणवत्सलः। शत्रुमर्दी नृणां मान्यो धनी शूरश्च जायते॥ यह प्रसन्न, गुणवान, प्रेमल, शत्रु का नाश करनेवाला, सन्मानित, धनवान तथा शूर होता है।

लखनऊ-नबाब—जोरावरो यशील: खुशदानो च मानवः सभ्यः। अनुचरवृन्दसमेतो भवति यदा वै बिरादरे जोहलः॥ यह बलवान, विख्यात, प्रसन्न, बुद्धिमान सभ्य तथा सेवकों से युक्त होता है।

नारायणभट्ट—तृतीये शनौ शीतलं नैव चित्तं जनादुद्यमाज्जायते युक्तभाषी। अविघ्नं भवेत् कर्हिचित् नैव भाग्यं दृढाशा सुखी दुर्मुखः सत्कृपोऽपि॥ इसका चित्त शान्त नही होता। यह उद्योगी और योग्य बोलनेवाला होता है। विघ्नों के बाद ही इसका भाग्योदय होता है। यह आशावादी, सुखी किन्तु असन्तुष्ट होता है। शनैश्चरस्तुलाकुम्भे मकरे च यदा भवेत्। आद्ये षष्ठतृतीये च तदारिष्टं न जायते॥ तुला, कुम्भ या मकर में लग्न, तृतीय या षष्ठ में शनि हो तो अरिष्ट नही आते।

हरिवंश---भूपात् सौख्यं चारुकीर्तिः सुकान्तिः वित्ताधिक्यं वाहनानां समृद्धिं । नैरुजांग पालनं मानवानां भ्रातृस्थाने भानुजातः करोति ॥ इसे राजा से सुख प्राप्त होता है । कीर्ति, धन, वाहन, सौन्दर्य, आरोग्य तथा लोगों को आश्रय देने की शक्ति प्राप्त होती है ।

घोलप---यह भाग्यवान होता है किन्तु भाग्योदय के समय की इसे कल्पना नही होती । धन, पुत्र, घरबार, बल, आरोग्य से सम्पन्न होता है । शत्रुओं में आपस में झगडे लगाकर उनका नाश कराता है । राजा की कृपा से वहुतों को आश्रय देकर सुखी बनाता है । अपना इष्ट हेतु पूरा करता है ।

गोपाल रत्नाकर---यह साहसी, दुष्ट, नौकर चाकरों से युक्त, धनधान्य से सम्पन्न, खेती में रुचि लेनेवाला होता है । यह योग भाइयों के लिये हानिकर है ।

भृगुसुत्र---भ्रातृहानिकारकः, अदृष्टः, दुर्वृत्तः । उच्चे स्वक्षेत्रे भ्रातृवृद्धिः । तत्र पापयुते भ्रातृद्वेषी । प्रतापवान् ॥ यह भाइयों को हानि पहुंचाता है । यह दुराचारी होता है । उच्च या स्वक्षेत्र में हो तो भाइयों की वृद्धि होती है । पापग्रह साथ हों तो भाइयों का द्वेष करता है । यह प्रतापी होता है ।

पाश्चात्य मत---यह शनि शुभ सम्बन्ध में बलवान हो तो मन गम्भीर, स्थिर, शान्त विवेकी, सौम्य तथा विचारशील होता है । चित्त की एकाग्रता जलदी होती है । इसलिये विचार, मनन और एकाग्रता की जिन्हें जरूरत होती है ऐसे विषयों का अध्ययन अच्छी तरह कर सकते हैं । शनि के प्रमुख शुभ लक्षण न्यायी, प्रामाणिक, चतुर होना--इनमे पाये जाते हैं । बुद्धि

गहरी और सलाह अच्छी होती है। यही शनि पीडित या निर्बल हो तो रिश्तेदार, भाईबन्द, पडोसी आदि से बनती नही, उनसे सुख नही मिलता।। शिक्षा पूरी नही होती। प्रवास से लाभ नही होता। लेखन, ग्रन्थों का प्रकाशन आदि में रुकावटें आती हैं। प्रवास में बरसात या ठंडे मौसम के कारण अस्वस्थता होती है। मन पर विद्वत्ता या उदात्त विचारों का संस्कार नही होता। दुखी विचारों से परेशान होते हैं। आप्तमित्रों से इनका बहुत नुकसान होता है। ज्योतिष आदि गूढ शास्त्रों में रुचि रहती है। इस शनि का मंगल से अशुभ योग विश्वासघात, वंचना, ठगों के काम में कुशलता का कारण होता है। बुध से अशुभ योग चोरी की प्रवृत्ति निर्माण करता है। शुक्र से शुभ योग हंसी मजाक की प्रवृत्ति बतलाता है।

एलनलिओ--बन्धु या रिश्तेदारों से अच्छे सम्बन्ध नहीं रहते। उनसे मन मुटाव होता है और उनके कामों से नुकसान ही होता है।

हमारे विचार--तृतीयस्थान पापग्रहों के लिये निसर्गतः अच्छा समझा गया है। इसलिये जागेश्वर को छोडकर अन्य लेखकों ने प्रायः शुभ फल दिये हैं। सिर्फ भ्रातृनाश यह फल प्रायः सभीने दिया है। उसमें भी छोटे भाई की मृत्यु का उल्लेख किया है। यथा--अग्रे जातं रविर्हन्ति पृष्ठे जातं धरासुतः॥ तृतीयस्थ शनैश्चरः। अग्रजं पृष्ठजं हन्ति सहजस्थो धरासुतः॥ तृतीयस्थ रवि से बडे भाई का, शनि से छोटे भाई का और मंगल से दोनों का मृत्युयोग होता है। पाश्चात्य विद्वानों ने इतना स्पष्ट वर्णन न कर मनमुटाव होना आदि साधारण फल बतलाये हैं। इस

स्थान के शुभ फल मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक तथा मीन के हैं एवं अशुभ फल वृषभ, कन्या, तुला, मकर तथा कुम्भ के हैं।

हमारा अनुभव--इस स्थान में पुरुषराशि में शनि भाइयों के लिये अशुभ है। बडे और एक छोटे भाई की मृत्यु होती है। बहिनें विधवा होती हैं। अथवा उनका कौटुम्बिक जीवन ठीक नही रहता इसलिये भाई के पास रहती हैं। स्त्री-राशि में शनि भाइयों का मृत्युयोग नही करता लेकिन उनसे मनमुटाव होता है। बँटवारा होता है। एकत्र रहे तो भाग्योदय में रुकावट आती है। आर्थिक स्थिति ठीक नही रहती। इस को जल्दी ही घर का बोझ सम्हालना पडता है। चाहे जिस मार्ग से प्रगति करता है। आवश्यकतानुसार दूसरों का नुकसान करके भी प्रगति करना चाहता है। स्वभाव दुष्ट और कुछ एकांतप्रिय होता है। यह विश्वासयोग्य नही होता। स्त्रीराशि में सन्तति देर से होती है। पुरुषराशि में सन्तति जलदी होती है किंतु गर्भपात या एकाध सन्तति को मारक योग होता है। कन्या और तुला में–विवाह के बाद आर्थिक कष्ट होता है। व्यापार में नुकसान होता है। नौकरी में कष्ट होता है। मित्र नही रहते। स्वभाव आनन्दी व स्नेहल होता है। उद्योगी वृत्ति होती है। इनमें उत्साह और कुशलता होने पर भी इनके काम की कद्र नही होती। इनके आप्तमित्र ही उन्नति में बाधक होते हैं। आपत्तियों में ये बहुत जल्दी घबरा जाते हैं। धैर्य नही रहता। गृहत्याग या आत्महत्या की कोशिश करते हैं यह फल कन्या से तुला में अधिक देखा है। कर्क में भी कुछ

कुछ ऐसा ही अनुभव मिला है। यह शनि पहले माता का और फिर पिता का मृत्युयोग कराता है। सौतेली मां होने का अधिक सम्भव होता है। मकर और कुम्भ में दारिद्रय योग होता है। यह पिता का इकलौता पुत्र होता है। एक बहन हो सकती है। ये लोग साधारणतः नास्तिक होते हैं। अपने कर्तृत्व पर अधिक भरोसा रखते हैं। लोगों पर विश्वास नही करते। हलके वर्गो में १३–१४ वें वर्ष से ही धनार्जन शुरू होता है। उत्तरोत्तर प्रगति होती है। यह शनि दीर्घायु देता है। ये तेजस्वी होते हैं किंतु प्रभाव नही पडता। बोलचाल में अधिकारी जैसे कुछ अलग से रहते हैं। शांत, विचारी, साधक बाधक बातों पर ध्यान देनेवाले होते हैं। यह शनि पूर्व आयु में स्थिरता नही देता। कर्क, वृश्चिक तथा मीन में प्रवास बहुंत होता है। कारस्थानी वृत्ति होती है। लोभी होते हैं। स्वार्थ के लिये दुसरों का नुकसान करते हैं। स्वभाव दुष्ट, निर्दय होता है। मित्र विशेष नही होते। ये किसी के बहलाव में नही आते। सावधान रहते हैं। अपने परिश्रम से उन्नति कर अधिकारी होते हैं और लोगों पर प्रभाव जमाते हैं। पुरुष राशि में शिक्षा बहुधा नही होती। स्त्री राशि में शिक्षा अच्छी होतीं है। आत्मविश्वास बहुत रहता है।

तृतीयस्थ शनि के प्रसिद्ध उदाहरण–पण्डित मदनमोहन मालवीयजी (कन्या), श्रीमान भवानराव पन्तप्रतिनिधि (भूत-पूर्व औन्ध रियासत के राजा) (सिंह), स्व. श्रीमान चुनीलाल सरैया (चांदी के विख्यात व्यापारी) (सिंह), स्व. अण्णासाहब

कुशन्दवाडकर (मकर), येवला के नगरसेठ गंगाराम छबीलदास (मकर)।

आत्महत्या के योग का एक उदाहरण—श्री. मधुकर गालवणकर—जन्म माघ कृ. १ शक १८१७, शुक्रवार ता. ३१-२-१८९६ स्थान वसई (वम्बई)। इष्टघटी ३४-५०। लग्न ४-२६-२८-३।
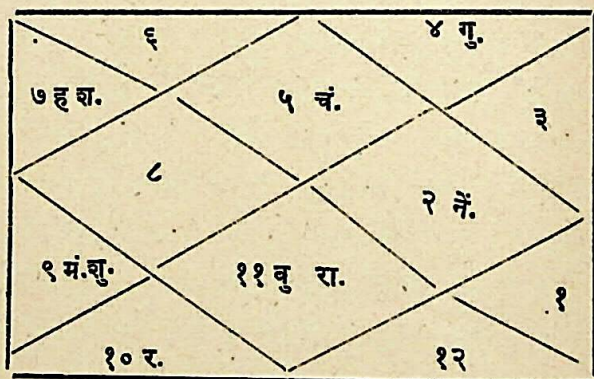
व्यापार में दो साल बहुत नुकसान होने से इन्हें हृदयविकार हुआ। ता. ६-५-१९४१ को अफीम खाकर आत्महत्या की कोशिश की। उससे बचे। किंतु हृदयविकार से फरवरी १९४२ में मृत्यु हुआ। इनके तृतीय में उच्चस्थ शनि का यह फल मिला।

चतुर्थ स्थान में शनि के फल

आचार्य व गुणाकर--विसुखः पीडितमानसश्चतुर्थे। यह दुखी और चिन्तातुर होता है।

कल्याणवर्मा पीडितहृदयो हिबुके निर्बान्धववाहनार्थ-मतिसौख्य: बाल्ये व्याधितदेहो नखरोमधरो भवेत् सौरे ॥ इस के हृदय में पीडा रहती है। रिश्तेदार, धन, वाहन, बुद्धि या सुख की प्राप्ति नही होती। बचपन में रोगी रहता है। नख और केश अधिक होते हैं।

बैद्यनाथ--आचारहीन: कपटी च मातृक्लेशान्वितो भानुसुते सुखस्थे। यह दुराचारी, कपटी होता है। माता का कष्ट होता है। सुखे मन्दे सुखक्षय:। इसे सुख नही मिलता।

वसिष्ठ--शनि: सुखवर्जितांग:। शरीर में सुख नही होता।

पराशर--सुखे सौख्यं शत्रुभिश्च समागमम्। शत्रुओं से संपर्क होकर सुख मिलता है।

गर्ग--भग्नासनोऽगृहो नित्यं विकलो दुःखपीडित:। स्थान-भ्रंशमवाप्नोति सौरे बन्धुगते नर:॥ यह अच्छे आसन या घर में नहीं रह पाता। हमेशा अस्वस्थ और दुखी रहता है। इसे अपने स्थान से हटना पडता है।

बृहद्यवनजातक--पित्तानिलं क्षीणबलं कुशीलमालस्य-युक्तं कलिदुर्बलांगं। मालिन्यभाजं मनुज विदध्यात् रसातलस्थो नलिनीशजन्मा ॥ यह वात और पित्त के रोगों से युक्त, दुर्बल, व्यभिचारी, आलसी, मलिन और झगडालू होता है।

आर्यग्रन्थ--बन्धुस्थितो भानुसुतो नराणां करोति बंधो-र्निधनं च रोगी। स्त्रीपुत्रभृत्येन विनाकृतश्च ग्रामान्तरे चासुखद: स वक्री ॥ इसके बान्धवों का मृत्यु होता है। यह रोगी होता है। स्त्री, पुत्र, नौकरों से रहित होता है। वक्री हो तो विदेश में भी दुःख होता है।

नारायणभट्ट---चतुर्थे शनौ पैतृकं याति दूरं धनं मंदिरं बन्धुवर्गापवाद: । पितुश्चापि मातुश्च सन्तापकारी गृहे वाहने हानयो वातरोगी ॥ इसे पूर्वार्जित धन या घर आदि नही मिलता । आप्तों द्वारा निन्दा होती है । घर तथा वाहनों का नाश होता है । इसे वातरोग होते हैं ।

जागेश्वर---चतुर्थे शनौ बन्धुवर्गैश्च वैरं धनं नैव भुंक्ते पितुर्वाहनाद्यं । न गेहे तदीये तथा वायुरोगी न सौख्यं च पित्रो: स्वयं तप्यतेऽसौ ॥ यह वर्णन प्राय: नारायणभट्ट जैसा ही है।

मन्त्रेश्वर---दु:खी स्याद् गृहयानमातृवियुतो बाल्ये सरुग् बन्धुभे ॥ यह दुखी, बचपन में रोगी तथा घर, वाहन और माता से वियुक्त होता है ।

काशीनाथ---सुखे मन्दे सुखैर्हीनो हृतार्थो बान्धवैर्नर:। गुणस्वभावो दु:संगी कुजनैश्च न संशय: ॥ यह सुखरहित, गुणी किन्तु बुरी संगति में रहनेवाला होता है । इसके रिश्तेदार इसे धनहीन बनाते हैं ।

जयदेव---बहुवित्तवातसहितो विबलोलसकार्श्यदु:खसहित: सुखगे ॥ यह धनयुक्त, वातरोगी, दुर्बल, आलसी, कृश और दुखी होता है ।

लखनऊ-नबाब---मुतफक्किरो बेहोष: परितृप्तो मानसो जोहल: । मादरखाने यदि स्यात् कमजोरश्च लागरो भवति ॥ यह चिन्तातुर, उद्विग्न, बलहीन, कृश और समाधानी वृत्ति का होता है ।

घोलप--यह कृश, क्रूर, तामसी, तामसी संगति में रहनेवाला, उर्ध्ववायु से बलहीन, अल्पवीर्य तथा दिन व्यर्थ गंवानेवाला होता है।

गोपाल रत्नाकर--यह पिता को मारक योग है। सौतेली मां होती है। शूलरोगी, दुखी, कपटी, राजा द्वारा पीडित, पूर्वार्जित सम्पत्ति से रहित, मजदूरी करनेवाला, भूमिरहित होता है।

भृगसूत्र—मातृहानि: । द्विमातृवान् । सौख्यहीन: । निर्धन: । उच्चे स्वक्षेत्रे न दोष: । अश्वान्दोलनावद्यवरोही । लग्नेशे मन्दे मातृदीर्घायु: सौख्यवान् । रन्ध्रेशयुक्ते मात्ररिष्टं सुखहानि: । माता की मृत्यु होकर सौतेली मां होती है । यह सुखहीन, निर्धन होता है । शनि उच्च या स्वक्षेत्र में हो तो यह दोष नही होतें । घोडे या पालकी की सवारी मिलती है । यह शनि लग्नेश हो तो माता दीर्घायु होती है और सुखी होता है । अष्टमेश से युक्त हो तो माता का मृत्यु होकर कष्ट होता है।

पाश्चात्य मत--यह शनि मकर, कुम्भ या तुला में शुभ सम्बन्ध में हो तो पूर्वार्जित इस्टेट अच्छी मिलती है। जमीन, घरबार, खेती, खानों के व्यवहार में लाभ होता है। उत्तर वय में अच्छा फायदा होता है । ये लोभी होते है। मृत्यु समय तक अधिकाधिक धन प्राप्त करना चाहते हैं । यह शनि निर्बल तथा पीडित हो तो माता या पिता का मृत्युयोग जलदी होता है। गृहसौख्य नही मिलता । जमीन, खेती, इस्टेट का नुकसान होता है । जीवन के आखरी दिन बहुत अशुभ होते हैं । चतुर्थ में शनि शुभ हो या न हो—उत्तर आयु में एकांतप्रिय और संन्यासी वृत्ति

होती है। यह कभी कभी अपनी उन्नति के प्रतिकूल भी होती है। दैववशात् किसी एक ही स्थान में अटकना पडता है।

हमारे विचार--इस स्थान में प्रायः सभी ने अशुभ फल बतलाये हैं, ये मुख्यतः स्त्री राशियों के हैं। पुरुष राशियों में कुछ शुभ फल मिलते हैं। किन्तु बचपन और बुढापे में कष्ट ही होना है। इनको मानो पूर्वजन्म में सब सुख मिले होते हैं और यह जन्म दुख के लिये ही है ऐसा प्रतीत होता है। इसलिये मृत्यु के समय मानों ये मृत्यु का स्वागत ही करते हैं-इतनी दुखद स्थिति रहती है।

हमारा अनुभव--इस स्थान में पुरुष राशि में शनि माता से पहले पिता का मृत्यु योग कराता है। क्वचित ही माता का मृत्यु पहले होता है। जिसका मृत्यु बाद में हो उससे सम्बन्ध ठीक नही रहते। उसके जीवित रहते भाग्योदय नही होता। मानसिक या शारीरिक कष्ट बना रहता है। मेष, कर्क, सिंह, तुला, धनु, वृश्चिक, मीन तथा मिथुन में यह शनि सरकारी नौकरी म यश देता है-मॅजिस्ट्रेट, सबजज, आइ. ए. एस, डाक्टर, वकील आदि होते हैं। विज्ञान की उपाधियाँ-बी. एस-सी, एम एस-सी; डी. एस-सी. आदि प्राप्त हो सकती हैं। यह शनि द्विभार्यायोग करता है। वृषभ, कन्या, मकर तथा कुम्भ में व्यापारी होते हैं। नौकरी की तो बहुत समय एक ही स्थान में पड रहते हैं। तरक्की नही होती। यह बहुधा पिता का इकलौता लडका होता है। पैतृक सम्पत्ति नही मिलती। व्यापार में शुरू में स्थिरता नही रहती। हमेशा दिवालिया होने का या गांव छोडने का डर बना रहता है।

वेइज्जती होने के अवसर आते हैं। स्त्री राशि में यह शनि सौतेली मां का अस्तित्व बतलाता है। द्विभार्यायोग होता है। पुरुष राशि में साधारणत: ४८ से ५२ वें वर्ष में पत्नी की मृत्यु होती है। ये लोग साधारणतः उदार, शांत, गम्भीर, उदात्त, सावधान, विपत्ति में धीरता रखनेवाले, विरक्त प्रवृत्ति के होते हैं। इनके वस्त्र अच्छे नही रहते, जलदी मैले होते हैं और फटते हैं। ये निर्लोभी, न्यायी, निर्व्यसनी तथा अतिथि सत्कार में दक्ष होते हैं। ये बडी संस्थाओं के लिये सम्पत्ति अर्पण करते हैं। इस योग के कुछ उदाहरण–बैरिस्टर चित्तरंजन दास, डाक्टर राशविहारी घोष, डाक्टर आशुतोष मुकर्जी, रावबहादुर डी. लक्ष्मीनारायण, बम्बई के श्री. अनन्त शिवाजी देसाई टोपी-वाले, पुलगांव मिल तथा द्रविड हायस्कूल (वाई) के स्थापक श्री. भिकाजी कृष्ण द्रविड आदि। अति उदारता से कभी कभी उत्तर वय में दरिद्रता भी होती है। साधारणतः इन लोगों का घर में व्यवहार प्रेमपूर्ण नही होता। अधिकारी जैसा रौब से रहना चाहते हैं। इस लिये वृद्धावस्था में पत्नी तथा पुत्रों से इन्हें अच्छा बर्ताव नही मिलता। ये लोग अपनी जन्मभूमि में उन्नति नही कर पाते। सन्तति की दृष्टि से–मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक तथा मीन में विपुल; मिथुन, तुला कुम्भ में बहुत कम या नही होना, और वृषभ, कन्या, मकर में मध्यम प्रमाण पाया गया है। यह शनि किसी तरुण पुत्र की मृत्यु का योग करता है। पूर्वार्जित इस्टेट नही होती। रही भी तो कायम नही रहती और वह नष्ट होने पर ही भाग्योदय हो सकता है। पूर्व आयु में ३६ वें वर्ष तक कष्ट रहता है। तदनन्तर ५६ वें वर्ष तक अच्छी स्थिति

रहती है। यह दत्तक पुत्र होने का योग है। अपनी जन्मभूमि में इनकी प्रगति नही होती; किसी दूर के प्रदेश में तरक्की कर सकते हैं। वृषभ, कन्या, मकर में पश्चिम की ओर और अन्य राशियों में उत्तर की ओर के प्रदेश अनुकूल होते हैं। विमान-प्रवास में इन्हें डर रहता है। वृद्धावस्था में इनकी सम्पत्ति कायम नही रहती। दान में बहुत खर्च हो जाता है। फिर भी बडे व्यवसाय करने की कोशिश करते हैं। उसमें नुकसान होता है। स्त्रीपुत्रों की सम्पत्ति कायम रह सकती है। चतुर्थ का शनि बहुत दूषित हो तो पिता का मृत्यु बचपन में होना, सौतेली मां द्वारा कष्ट होना, अस्थिरता, हमेशा कर्ज रहना, कर्ज के लिये कारावास, पुत्रों से कष्ट होना, द्विभार्यायोग, धन का संचय न होना, जन्मभूमि में प्रगति न होना, ये सब फल मिलते हैं। किन्तु ये अपने विशिष्ट मित्रवर्ग में नेतृत्व प्राप्त करते हैं। इनका मृत्यु पूर्व आभास मिलकर समाधानपूर्वक वासनारहित स्थिति में होता है। ये दयालु होते हैं। मायावी नही होते। इन्हें आयु के ८।१८।२२।२८।४०।५२ वें वर्ष में शारीरिक कष्ट बहुत होता है। २२ वें तथा २७ वें वर्ष कुटुम्ब में मृत्युयोग होता है। २८ वें वर्ष जीविका का आरम्भ होता है। १६।२२।२४।२७।३६ ये भाग्यकारक वर्ष होते हैं। नौकरी मिलना, विवाह, सन्तति होना आदि शुभ योग इन वर्षों में देखना चाहिये ये लोग माता की मृत्यु का विचार करते हैं ऐसा कुछ उदाहरणों में प्रतीत हुआ है।

एक उदाहरण--श्री. किसनसिंग नगरकर, जन्म वैशाख व॰ ३० शके १७७९ रविवार, इष्ट घटी ८--१५ स्थान अहमदनगर।
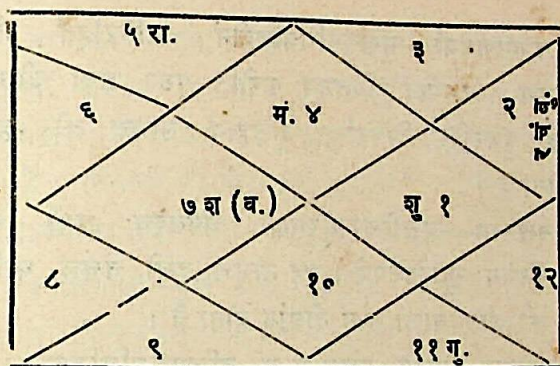
बचपन में मातापिता से कष्ट होने से नगर छोड कर यवतमाल में रहे। शिक्षा नही हुई। जंगल विभाग में नौकर हुए। माता का मृत्यु जलदी हुआ। पिता जीवित थे किन्तु सम्बन्ध अच्छे नही रहे। पेन्शन के बाद अमरावती रहे। इनके चार विवाह हुए; तीसरे विवाह के वाद भाग्योदय शुरू हुआ। पुत्र एक हुआ। सन्मान और सम्पत्ति का सुख अच्छा मिला। कौटुम्बिक सुख नही मिला। अन्य प्रसिद्ध उदाहरण--

बॅरिस्टर रामराव देशमुख (भूतपूर्व मन्त्री, मध्यप्रदेश) (कन्या), स्व. गंगाधरराव देशपांडे (कर्नाटक के कांग्रेस नेता) (धनु) स्व. दादासाहब करन्दीकर (सातारा) (कर्क), श्री. केशवराव गोंधलेकर (जगद्धितेच्छु प्रेस, पूना) (वृश्चिक), प्रिन्सिपल आपटे (उज्जैन) (धनु), रूस के झार निकोलस (वृश्चिक)।

पंचम स्थान में शनि के फल

आचार्य व गुणाकर--अपुत्रो धनहीनः। इसे सन्तति और सम्पत्ति नही मिलती।

कल्याणवर्मा---सुखसुतमित्रविहीनं मतिरहितं चेतसं त्रिकोणस्थः। सोन्मादं रवितनयः करोति पुरुषं सदा दीनम् ॥ यह दुखी, पुत्ररहित, मित्ररहित, बुद्धिहीन, उन्मत्त और हमेशा दीन होता है।

वैद्यनाथ---मत्तश्चिरायुरसुखी चपलश्च धर्मी जातो जितारिनिचयः सुतगेऽर्कपुत्रे। यह उन्मत्त, दुखी, चंचल, धार्मिक, शत्रुओं को जीतनेवाला तथा दीर्घायु होता है।

पराशर---पंचमे पुत्रलाभं च बुद्धिमुद्यमसिद्धिकृत्। यह बुद्धिमान, उद्योगी तथा पुत्रों से युक्त होता है।

वसिष्ठ---शनिस्तनुजगोऽपुत्रम् ॥ पुत्र नही होते।

गर्ग---सुतभवनगतोऽरिमन्दिरस्थः सकलसुतान् विनिहन्ति मन्दगामी। समुदितकिरणः स्वतुंगभस्थः कथमपि जनयेत् सुतीक्ष्णमेकपुत्रम् ॥ यह शनि शत्रुग्रह की राशि में हो तो सब पुत्रों का नाश होता है। तेजस्वी, उच्च में या स्वराशि में हो तो किसी तरह एक पुत्र अच्छा होता है। बुद्धिः कुटिला मन्दः। बुद्धि कुटिल होती है। घटशनिः सुतगः सुतपंचकी मृगशनिश्च सुतात्रयदस्तथा। यह शनि कुम्भ राशि में हो तो पांच पुत्र होते हैं और मकर में हो तो तीन कन्याएं होती हैं।

बृहद्यवनजातक---पुजर्जर क्षीणतरं वपुश्च धनेन हीनत्वमनङ्गहीनम्। प्रसूतिकाले नलिनीशपुत्रः पुत्रास्थितः पुत्रभयं करोति ॥ इसका शरीर दुबला और जर्जर होता है। यह निर्धन और कामेच्छारहित होता है। पुत्रों को भय रहता है।

आर्य ग्रन्थकार---गर्ग के समान वर्णन है।

जागेश्वर---शनिः पंचमे सन्ततिर्दुःखिता स्यात् तथा मन्त्रदुःखी धनीनां विरोधी। भवेद् बुद्धिहीनस्तथा धर्मरोधी सदा मित्रतः क्लेशकारी नरः स्यात् ॥ इसकी सन्तति दुःखित रहती है। धनवानों का विरोधक, बुद्धिहीन, नास्तिक, मित्रों से कष्ट पानेवाला तथा गलत सलाह से दुखी होता है।

काशीनाथ---पुत्रे मन्दे पुत्रहीनः क्रियाकीर्तिविवर्जितः। हीनकोशो विरूपश्च मानवो भवति ध्रुवम् ॥ इसे पुत्र, कीर्ति, धन, रूप इनका सुख प्राप्त नही होता।

नारायणभट्ट---शनौ पंचमे च प्रजाहेतुदुःखी विभूतिश्चला तस्य बुद्धिर्न शुद्धा। रतिर्दैवते शब्दशास्त्रे न तद्वत् कलिर्मित्रतो मन्त्रतः कोऽपीडा ॥ यह सन्तति के लिये दुखी रहता है। इस का वैभव अस्थिर और बुद्धि अशुद्ध होती है। धर्म और शास्त्रों पर श्रद्धा नही होती। मित्रों से झगडे होते हैं। हृदय या पेट में कष्ट होता है।

मन्त्रेश्वर---भ्रान्तो ज्ञानसुतार्थहर्षरहितो धीस्थे शठो दुर्मतिः। यह ज्ञान, पुत्र, धन और आनन्द से रहित होता है। दुर्बुद्धि, भ्रमयुक्त और दुष्ट होता है।

जयदेव---इसका वर्णन मन्त्रेश्वर तथा यवनजातक के समान है।

लखनऊ नबाब---वदअक्लो मुत्फकिरः सुतसुखरहितश्च काहिलो मनुजः। जोहलः पंजुमखाने कोतहदेहश्च जाहिलो भवति। यह निर्बुद्ध, चिन्तित, पुत्ररहित, दुखी, आलसी और नाटा होता है।

घोलप---यह हमेशा चिन्तित, निर्धन, श्रेष्ठ विद्वान होकर भी दुष्टों के संसर्ग से नीचता प्राप्त करनेवाला, कुटिल, मुसद्दी, कूटनीतिज्ञ, कामक्रोधमदमत्सर से युक्त, दुर्जनों के आश्रय से हीन तथा स्त्रीपुत्रों के सुख से वंचित होता है।

गोपाल रत्नाकर---सन्तति में विघ्न होता है। बुद्धि और विचार दुष्ट होते हैं। राजा का कोप होता है। मिथुन, कन्या, धन या मीन में यह शनि हो तो गोद लेने या लिये जाने का योग होता है।

भृगुसूत्र---पुत्रहीनः अतिदरिद्री दुर्वृत्तः दत्तपुत्रः। स्वक्षेत्रे स्त्रीप्रजासिद्धिः। गुरुदृष्टे स्त्रीद्वयम् तत्र प्रथमाऽपुत्रा द्वितीया पुत्रवती। बलयुते मन्दे स्त्रीभिर्युक्तः॥ यह पुत्रहीन, बहुत दरिद्री दुराचारी, दत्तक पुत्र होता है। यह शनि स्वगृह में हो तो कन्याएं होती हैं। गुरु की दृष्टि हो तो दो विवाह होकर दूसरी पत्नी को पुत्र होता है, पहली को सन्तति नही होती। शनि बलवान हो तो यह स्त्रियों से युक्त होता है।

पाश्चात्य मत---गुरु या रवि से शुभ सम्बन्ध में हो तो यह शनि अपने कारकत्व के व्यवहारों-जमीन, खाने, घर आदि के व्यवहारों में सफलता देता है। सार्वजनिक अधिकारपद से लाभ होता है। विशेषत: शिक्षा के क्षेत्र में यह योग लाभप्रद है। यह शनि पीडित हो तो प्रेम प्रकरणों में असफल होना, अपने से अधिक आयु वाले व्यक्ति से प्रेम होना ये फल होते हैं। सन्तति नही होती अथवा होकर दुर्लौकिक को कारणीभूत होती है। स्त्रियों को पेट में शूल होना, ऋतुप्राप्ति के बाद बहुत

वर्षों से सन्तति होना, दो सन्तानों में ५।७।९।११।१३ वर्षों जितना दीर्घ अन्तर रहना, प्रसूति का समय बहुत देर से होना ये फल शनि १।३।५।७।९।११ इन स्थानों में हो तो पाये जाते हैं। ५।९।११ इन स्थानों में विशेषत: ये फल मिलते हैं। इस पीडित शनि से सट्टे के व्यवहार में, लाटरी में, रेस में नुकसान होता है। इस व्यक्ति का मृत्यु हृदयविकार से या डूबने से होता है। सन्तति अनीतिमान, व्यसनी होती है।

हमारे विचार---पंचमस्थान बलवान शुभ त्रिकोण स्थान है अतः इसमें शनि जैसे पापग्रह के फल अशुभ ही होंगे। यह प्राचीन आचार्यों का मत प्रतीत होता है। किन्तु ये अशुभ फल मुख्यत: वृषभ, कन्या, तुला, मकर तथा कुंभ इन राशियों में मिलते हैं अन्य शुभ फल--जैसे पराशर आदि ने कहे हैं--अन्य राशियों में प्राप्त होते हैं।

हमारा अनुभव--मेष और सिंह में पंचमस्थ शनि से शिक्षा पूरी होती है। पहले शनि के कारकत्व के विषय बतलाये हैं उन में निपुणता प्राप्त होती है। धनु में शिक्षा पूरी नही होती। इन तीन राशियों में स्वभाव कुछ अविश्वासी, मन के विचार छुपानेवाला, अपने ही विचार से चलनेवाला, संशयी होता है। किसी पर प्रेम नही होता। सिर्फ अपने सुख की फिक्र होती है। कुछ अहंकारी होता है। मुंह पर प्रशंसा कर पीछे निन्दा करता है। घर में पत्नी को बहुत चाहेंगे किन्तु बाहर जाने पर उस का स्मरण नही रहेगा। स्वभाव दुष्ट, प्रतिशोधपूर्ण होता है। किन्तु लोगों को इनसे विशेष कष्ट नही होता। ये लोगों के बारे में गलतफहमी कर लेते हैं। मीठा बोल कर गप्पें लडाते

हैं। आलसी होते हैं, कोई भी काम जल्दी नहीं करते। किन्तु हमेशा काम में लगे रहे जैसा बर्ताव होता है। इन्हें सन्तति काफी होती है। कुछ पुत्र बडे होकर इनके पहले ही मृत होते हैं। आखिर एक या दो पुत्र और कन्याएँ जीवित रहते हैं। विवाह एक ही होता है। कर्क वृश्चिक तथा मीन में सन्तति काफी और बहुत कम अन्तरसे होती है। ये स्वभाव से दुष्ट, प्रतिशोधपूर्ण होते हैं। लोगों पर इनका असर भी अधिक होता है। ये बहुत झगडालू होते हैं। ये रेल, बैंक या बीमा कम्पनी, सार्वजनिक संस्थाएं, म्यूनिसिपालिटी, जनपद या जिला परिषद, विधानसभा, संसद आदि में अधिकारपद प्राप्त करते हैं। ये स्वार्थी होकर भी शिक्षा संस्था आदि के लिये कुछ कार्य करते हैं। वृषभ, कन्या, मकर में स्वभाव निरुपद्रवी, अपने काम में तत्पर, दूसरों के व्यवहार में दखल न देनेवाला होता है। आनन्दी, मौजी, मित्रों के शौकीन, स्वभाव से साधारण अच्छे होते हैं। इन्हें सन्ततिसुख नही होता या बहुत कम मिलता है। पत्नीको गर्भाशय सम्बन्धी विकार–पेट में शूल होना, मासिक स्राव अनियमित होना या बन्द होना, गर्भाशय आकुंचित होना या उस पर गांठें आना–आदि से कष्ट होता है। इस लिये ये दूसरा और क्वचित तीसरा विवाह करते हैं। इनकी शिक्षा कम होती है और व्यापार की ओर प्रवृत्ति होती है। इनका स्वभाव साधारण अच्छा होता है। मिथुन, तुला, कुम्भ में–शिक्षा पूरी होती है। ये वकील, न्यायाधीश हो सकते हैं। स्वभाव विश्वसनीय नही होता। अपने काम के समय खूब मीठा बोलते है किन्तु बाद में पहचान भी नही बतलाते। पंचमस्थ शनि का साधारण फल-

जनक मातापिताओं का सुख नही रहता। गोद लिये जाने का सम्भव रहता है। पूर्वार्जित इस्टेट मिलती है। वह बाद में नष्ट हो सकती है। मेष, सिंह धनु, कर्क, वृश्चिक, मीन में भाग्योदय का योग होता है। अपने कष्ट से उन्नति करते हैं। वृषभ, कन्या, मकर में–पूर्वार्जित इस्टेट मिल कर नष्ट होती है और बाद में किसी रिश्तेदार की इस्टेट वारिस के रूप में मिलती है। मिथुन तुला, कुम्भ में अपने कष्ट से उन्नति करते हैं। पूर्वार्जित इस्टेट अधिक मिली तो कर्ज भी साथ में होता है। साधारणतः पंचमस्थ शनि आपत्तियों के साथ समृद्धि देता है। दूषित शनि के फल आचार्यों ने विशेषतः बतलाये हैं। सन्तति की मृत्यु होना, वृद्ध आयु में सन्तति होना इस प्रकार सन्ततिसुख की कमी होती है। अपने जीवन में पुत्रों की प्रगति नही हो पाती। सन्तति से सम्बन्ध अच्छे नही रहते। पुरुष राशि में दो सन्तानों में अन्तर काफी अधिक ५–७–९–११ वर्षों तक का होता है। यह शनि अधिकारपद देता है। दया, प्रेम की भावना नही होती। अपना काम पहले देखते हैं। दूसरों के काम की फिक्र नही होती।

कुछ प्रसिद्ध उदाहरण—(१) स्व. सर सेठ हुकूमचन्दजी, इन्दौर–जन्म ता. १६–६–१८७४ इष्ट घटी २१–५५, स्थान अक्षांश २३–९ रेखांश ७५-५२ पलभा ५–७।
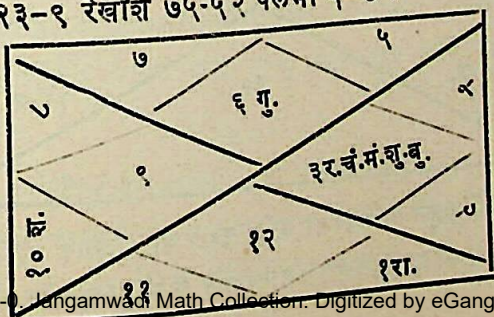
इनके तीन विवाह हुए किंतु सन्तति नही हुई। फिर भतीजे को गोद लिया। उसके बाद औरस पुत्र भी हुआ। फिर दत्तक पुत्र को इस्टेट का कुछ हिस्सा अलग कर दिया। पहले दत्तक और फिर औरस पुत्र होने का योग पुरातन ग्रन्थकारों ने इस प्रकार बतलाया है– मन्दांशे पुत्रराशीशः स्वराशौ गुरुभार्गवौ। पूर्वं दत्तसुतप्राप्तिः परं नार्याः पुनः सुतः॥ पंचमेश शनि के नवमांश में हो और गुरु, शुक्र स्वगृह में हों तो पहले दत्तक पुत्र होकर फिर औरस पुत्र होता है। पंचमस्थ शनि के इस उदाहरण में अन्य सव वातें शुभ थीं–धन, कीर्ती विपुल प्राप्त हुई। पांच छः मिलों के प्रधान रहे। कोटयाधीश का वैभव प्राप्त हुआ।

(२) सर जमशेटजी नसरवानजी टाटा जन्म ता. ३–३–१८३९ इष्ट घटी २२–५ स्थान नवसारी। इन्हें आयु
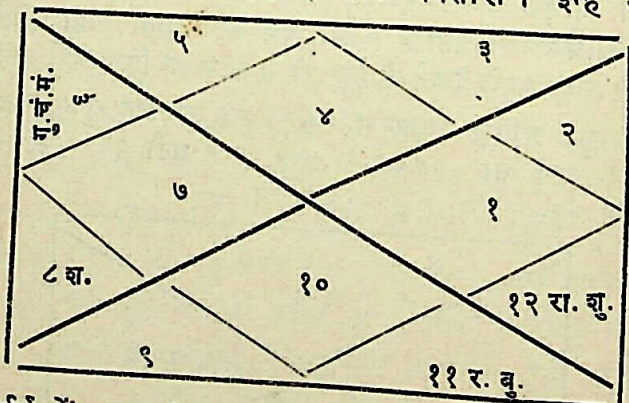
के पूर्वार्ध में बहुत अस्थिरता रही, कष्ट भी हुआ। ३६ वें वर्ष से भाग्योदय को शुरुवात हुई। टाटानगर के लोहा-इस्पात कारखाने

से कोटयाधीश हुए। अन्तरराष्ट्रीय कीर्ति प्राप्त हुई। सार्वजनिक कार्य के लिये बहुत दान दिया। इन्डियन इन्स्टिटयूट आफ सायन्स, बेंगलोर, केरल में टाटापुरम्, बैन्क, नागपूर में एम्प्रेस मिल, लोणावला में जलविद्युत योजना, शहाबाद में सीमेन्ट कारखाना, आदि का प्रारम्भ इन्हीं की कम्पनी द्वारा हुआ। अन्य उदाहरण—स्व. न्यायमूर्ति रानडे (धनु), स्व. धर्ममार्तंड भाऊशास्त्री लेले, वाई (कन्या), सर चन्द्रशेखर वेंकट रामन (कर्क), ज्योतिषी बाबासाहब फणसलकर (मेष), इंग्लैंड के भूतपूर्व मुख्य प्रधान लाईड जार्ज (कन्या)

षष्ठ स्थान में शनि के फल

आचार्य व गुणाकर—बलवान् शत्रुजितश्च शत्रुयाते। यह बलवान होकर शत्रुओं को जीतता है।

कल्याण वर्मा—प्रबलमदनं सुदेहं शूरं बह्वाशिनं विषमशीलम्। बहुरिपुपक्षक्षपितं रिपुभवनगतोर्कजः कुरुते॥ यह बहुत कामुक, सुन्दर, शूर, बहुत खानेवाला, अशुद्ध शील का और बहुत शत्रुओं का क्षय करनेवाला होता है।

वैद्यनाथ—बह्वाशनी विषमशीलः सपत्नभीतः कामी धनी रविसुते शत्रुयाते॥ इसमें धनी होना यह एक फल अधिक बतलाया है।

गर्ग—विद्वेषिपक्षपक्षपितः शूरो विषमचेष्टितः। बव्हांशी बहुकाव्यश्चारिदाहो रिपुगे शनौ॥ षष्ठे नीचगतः सौरिर्जनयेन्नीचवैरिणम्। अन्यथा वैरिणं हन्ति निर्वैरं स्वगृहे गतः॥ इसमें

कवि होना यह अधिक फल कहा है। षष्ठ में शनि नीच में हो तो शत्रु भी नीच होते हैं। यह स्वगृह में हो तो शत्रुरहित होता है। अन्य राशियों में शत्रु का नाश होता है।

वसिष्ठ——पंगुर्नरं रिपुगृहेष्वतिपूजनीयं। इसका शत्रुओं सम्मान होता है।

पराशर——षष्ठे धनं जयं कुर्यात्। यह धनी, विजयी होता है।

जयदेव——विबलारिवान् धनकुटुम्बयुत: सगणो बली रिपुगतेऽर्कसुते ॥ यह बलवान, सेवकों से युक्त, धनी और कुटुम्ब से समृद्ध होता है। इसके शत्रु दुर्बल होते हैं।

बृहद्यवनजातक——विनिर्जितारातिगुणो गुणज्ञ: स्वज्ञातिजानां परिपालकश्च। पुष्टांगयष्टि: प्रबलोदराग्नि: नरोऽर्कपुत्रे सति शत्रुसंस्थे ॥ यह गुणों की कद्र करनेवाला, अपने जातिबन्धुओं का पालक, शत्रुओं को जीतनेवाला, प्रबल होता है। छायासुतो भवेच्चैव शत्रुमातुलनाशकृत्—यह शत्रु और मामा का नाश करता है।

ढुंढिराज—उपर्युक्त वर्णन में सुज्ञों का मत माननेवाला—सुज्ञाभ्यनुज्ञापरिपालक: इतना अधिक कहा है।

आर्यग्रन्थ—नीचो रिपौ नीचकुलक्षयं च षष्ठ: शनिर्गच्छति मानवानां। अन्यत्र शत्रून् विनिहन्ति तुंग: पूर्णार्थकामाज्जनतां ददाति ॥ यह शनि नीच हो तो कुलक्षय होता है। अन्य राशियों में शत्रुओं का नाश होता है। उच्च में धन और कामसुख मिलता है।

काशीनाथ--शत्रुभावस्थिते मन्दे शत्रुहीनो महाधनी ।
पशुपुत्रयशोयुक्तो नीरोगो जायते नरः ॥ यह नीरोग, पुत्रयुक्त, पशुओं से समृद्ध, कीर्तिमान, धनी और शत्रुरहित होता है।

जागेश्वर---शनौ शत्रुगे शत्रवः संज्वलन्ति प्रतापानले राजगेहेरिचारान् । बलैर्बुद्धियोगैर्भवेत् कस्तदग्रे परं वा प्रमेही स रोगी नितम्वे ॥ इसके शत्रु या शत्रु के गुप्त चर नष्ट होते हैं। वलवान और बुद्धिमान होता है। प्रमेह और गुप्त रोग होते हैं।

मन्त्रेश्वर---बव्हाशी द्रविणान्वितो रिपुहतो धृष्टश्च मानी रिपौ । यह धनवान उद्धत और अभिमानी होता है। बहुत खाता है तथा शत्रुओं का घात करता है।

नारायणभट्ट--अरेर्भूपतेश्चोरतो भीतयः किं यदीनस्य पुत्रो भवेदस्य शत्रौ । न युद्धे भवेत् संमुखे तस्य योद्धा महिष्यादिकं मातुलानां विनाशः ॥ इसे शत्रु, राजा या चोरों से कोई भय नही होता । यह अद्वितीय वीर होता है। भैंस आदि पशु घर में होते हैं। मामा का नाश होता है।

हरिवंश--पुष्टिर्देहे वीर्यमारोग्यता च भाग्यं भोगं भूषणं वाहनं तु । विद्यां वित्तं सौख्यवर्गं तनोति शत्रोर्हानिं शत्रुगोऽशत्रु पुत्रः ॥ प्रसादो भूमिपालतः स्त्रीपुत्रजनितं सौख्यं जन्मे षष्ठगते शनौ ॥ इसका शरीर पुष्ट, नीरोग तथा वीर्यशाली होता है। यह भाग्यवान, भोगों, भूषणों तथा वाहनों से सम्पन्न, सुशिक्षित, धनी, सुखी तथा शत्रुओं का नाश करने वाला होता है। इस पर राजा की कृपा रहती है तथा स्त्रीपुत्रों से सुख मिलता है।

लखनऊ-नवाब---दानीश्वरं जलीलं जनयति मनुजं मुकरंवं नृपतिं । निर्जितवैरिसमूहं दुष्मनखाने स्थितो जोहल: ॥ यह बडा दानी, शत्रुओं को जीतनेवाला, राजा जैसा समृद्ध किन्तु किसी दु:ख से पीडित होता है ।

घोलप---यह सर्वत्र पूज्य, कवि, पराक्रमी, श्रेष्ठ लोगों का मित्र, दुष्ट और शत्रुओं का नाशक, स्वदेशप्रिय, खर्चीला तथा राजा जैसा शोभायुक्त होता है ।

गोपाल रत्नाकर---यह मूर्ख, अल्पज्ञ, बहरा, शत्रुरहित, धनधान्य की वृद्धि करनेवाला, झगडालू और कम पुत्रों से युक्त होता है।

पाश्चात्य मत---इस स्थान में अशुभ सम्बन्ध में निर्बल शनि बहुत अशुभ फल देता है। इससे दीर्घकाल चलनेवाले, गन्दे रोगों से शरीर त्रस्त होता है। प्रकृति हमेशा रोगी तथा अशक्त रहती है । अन्नवस्त्र की कमी से अस्वस्थता रहती है । यहां स्थिर राशि में शनि हृदयविकार, घटसर्प, कण्ठविकार, मूत्रकृच्छ्र, खांसी, श्वासनलिका का दाह आदि रोग उत्पन्न करता है । द्विस्वभाव राशियों में फेंफडों के विकार, दमा, आमांश और पांवों के विकार होते हैं । चर राशियों में पेट, छाती, सन्निपात आदि के रोग होते हैं। तुला राशि में पित्ताशय, यकृत के विकार, कन्या में दीर्घकाल के रोगों से अपंगता होती है । षष्ठ में शनि से आहार के बारे में रुचि बहुत तीव्र होती है । इन्हें नौकर अच्छे नही मिलते, नौकरों से नुकसान होता है । इन्हें नौकरी अच्छी नही मिलती तथा उससे विशेष फायदा भी नही होता । षष्ठ में बलवान, शुभ सम्बन्ध में शनि यशस्वी अधिकारी के गुण

देता है। इन्हें नौकरों द्वारा अनुशासन कायम रख कर अच्छा काम कराने की कुशलता प्राप्त होती है।

अज्ञात--अल्पज्ञातिः। शत्रुक्षयः। धनधान्य समृद्धः। कुजयुते देशान्तरसंचारी। अल्पराजयोगः। भंगयोगात् क्वचित् सौख्यं। क्वचिद्उद्योगभंगः। रन्ध्रेशे मन्दे अरिष्टं। वातरोगी। शूलव्रणदेही॥ इसके सम्बन्धित कम होते हैं। शत्रुओं का क्षय होता है। धनधान्य की समृद्धि रहती है। मंगल शनि के साथ हो तो यह व्यक्ति विदेशों में घूमता है। यह अल्प मात्रा में राजयोग होता है। राजयोग का भंग होने से सुख कम मिलता है। कभी प्रयत्न विफल होते हैं। यह शनि अष्टमेश हो तो अरिष्टयोग होता है। इसे वातरोग, शूल, व्रण से कष्ट होता है।

हमारे विचार--इस स्थान में शनि के शुभ फल मेष, सिंह, धनु, मिथुन, कर्क, वृश्चिक तथा मीन राशियों में प्राप्त होते हैं। अन्य राशियों में अशुभ फल मिलते हैं।

हमारा अनुभव--षष्ठस्थान में शनि पूर्व आयु में बहुत कष्ट देता है। प्रगति में रुकावटें आना, किसी की मदद न मिलना, लोगों के अपवाद सहते हुए मेहनत करना इस प्रकार कष्टपूर्वक प्रगति करनी पडती है। मामा, मौसियों के लिये यह अशुभ योग है। उनका घरबार ठीक नही रहता। उन्हें सन्तति नही होती या होकर नष्ट होती है। इन व्यक्तियों का विवाह एकही होता है और पत्नी अच्छी मिलती है। ये भैंस अच्छी तरह पाल सकते हैं। किन्तु गाय, घोडे नही पल सकते। वृद्ध आयु में इन्हें आर्थिक कष्ट होता है। समय से पहले शारीरिक व्याधि के कारण पेन्शन लेनी पडती है; या कभी पेन्शन मिलती

ही नही । इन्हें अपने स्थान के समान ही विदेश में भी कष्ट ही होता है । स्थानान्तर से प्रगति नही होती । इनकी ग्रहणशक्ति अच्छी रहती है। मन की एकाग्रता जलदी हो सकती है। व्यवहार में तीक्ष्ण होते हैं । व्यवसाय में कीर्ति मिलती है । लोगों पर प्रभाव पडता है । किन्तु कभी कभी प्रयत्न करनेपर भी असफल होने से इनकी नीयत के बारे में गलतफहमी होती है उदाहरण-- स्व. अच्युत बलवन्त कोल्हटकर (सम्पादक-सन्देश) इन के षष्ठ में मीन राशि में शनि था । इस स्थान में शनि से शत्रु बहुत होते हैं किन्तु वे कायम नही रहते । ये परिस्थिति से सतत संघर्ष कर प्रगति करते हैं । कीर्ति और सम्पत्ति या अधिकार साथसाथ नही मिलते । सम्पत्ति हो तो कीर्ति नही मिलती, सम्पत्ति न होकर कीर्ति होने के उदाहरण क्रान्तिकारियों की कुण्डलियों में मिले । प्राय: इनके किसी एक पांव में कुछ दोष रहता है ।

रोगविषयक फल--मेष, सिंह तथा धनु में सन्धिवात, घुटनों में पीडा ३० वें या ६० वें वर्ष में होते हैं । वृषभ, कन्या, मकर में हृदयविकार होते हैं । मिथुन, तुला, कुम्भ में-वात और श्वास के विकार होने हैं । कर्क, वृश्चिक, मीन में-बद्धकोष्ट, मधुमेह, बहुमूत्र आदि होने हैं । इस विषय का विशेष विवरण पाश्चात्य मत में दिया है । इन व्यक्तियों का स्वास्थ्य पूर्व आयु में अच्छा नही हो तो विवाह के बाद स्वास्थ्य में काफी सुधार होता है । षष्ठ में दूषित शनि से दारिद्र, असफलता, अस्थिरता, शत्रु बहुत होना, अपमान, बुद्धि होने पर भी कदर न होना, कारावास में दीर्घकाल रहना आदि अशुभ फल मिलते हैं ।

कुछ प्रसिद्ध उदाहरण--प्रसिद्ध क्रान्तिकारी स्वातंत्र्यवीर सावरकर तथा सेनापति बापट, रावबहादुर एन्. के. केलकर (भूतपूर्व मन्त्री मध्यप्रान्त (वृश्चिक), नामदार दामले, अकोला (वृश्चिक), स्व. नामदार दाजी आबाजी खरे (मिथुन), योगी अरविन्द घोष (धनु), स्व. खानविलकर (दीवान, बडोदा रियासत) (मकर), स्व. चंदूलाल (दीवान, बडौदा) (मेष) स्व. डाक्टर भाटवडेकर (मेष), कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर (सिंह), श्री. माधवराव जोशी (प्रसिद्ध मराठी नाटककार) (वृषभ)। इन उदाहरणों से प्रतीत होगा कि षष्ठ में शनि कीर्ति, धन तथा अधिकार के फल भी देता है।

सप्तम स्थान में शनि के फल

आचार्य--स्त्रीभिर्गतः परिभवो मदगे पतंगे। इसका स्त्री द्वारा अपमान होता है।

कल्याणवर्मा--सततमनारोग्यतनुं मृतदारं धनविवर्जितं जनयेत्। द्यूनेऽर्कजः कुवेषं पापं बहुनीचकर्माणम्॥ यह हमेशा अस्वस्थ रहता है। पापी, नीच काम करनेवाला, निर्धन, गन्दा वेष धारण करनेवाला होता है। इसकी पत्नी मृत होती है।

पराशर--सप्तमे स्त्रीविरोधनम्। हीना च पुष्पिणी व्याधिदौर्बलिनस्तथा॥ स्त्री द्वारा इस व्यक्ति का विरोध होता है। हीन, रोगी, रजस्वला स्त्री से संग होता है।

वसिष्ठ--रविजः किल सप्तमस्थः जायां कुकर्मनिरतां तनुसन्ततिं च। इसकी पत्नी दुराचारी होती है तथा सन्तति अल्प होती है।

वैद्यनाथ---भाराध्वश्रमतप्तधीरधनिको मन्दे मदस्थानगे। यह प्रवास से कष्ट भोगता है तथा निर्धन होता है। लम्बापीन-पयोधरा। इसकी स्त्री का वक्षस्थल उन्नत होता है।

गर्ग---विश्रामभूतां विनिहन्ति जायां सूर्यात्मजः सप्तमगश्च रोगान्। धत्ते पुनर्दंभधरांगहीनं मित्रस्थवंशेन हृतासुहृच्च॥ इस व्यक्ति की सुख देनेवाली पत्नी का मृत्यु होता है। यह रोगी, ढोंगी, अंगहीन और मित्रों से भी मायावी व्यवहार करनेवाला होता है। क्लीबा शनौ-इसकी पत्नी को कामेच्छा बहुत कम होती है।

बृहद्यवनजातक---आमयेन बलहीनतां गतो हीनवृत्ति-जलचित्तसंस्थितः। कामिनीभवनधान्यदुःखितः कामिनीभवनगे शनौ नरः॥ यह रोगों के कारण दुर्बल होता है। हीन रोगों के संसर्ग में रहता है। इसे स्त्री, घर या धान्य का सुख नही मिलता।

नारायणभट्ट---सुदारा न मित्रं चिरं चारुवित्तं शनौ द्यूनगे दम्पती रोगयुक्तौ। अनुत्साहसन्तप्तकृद् हीनचेताः कुतो वीर्यवान् विव्हलो लोलुपः स्यात्॥ इसे अच्छी पत्नी, मित्र या धन का सुख दीर्घ काल नही मिलता। ये पतिपत्नी रोगी रहते हैं। उदास रहने से दुखी होता है। हीन विचार रहता है। वीर्यवान नही होता। विव्हल और लोभी होता है।

काशीनाथ-कलत्रस्थे मित्रपुत्रे सकलत्रो रुजान्वितः। बहु-शत्रुर्विवर्णश्च कृशश्च मलिनो भवेत्॥ यह पत्नी सहित रोगी रहता है। शत्रु बहुत होते हैं। यह दुबला, विवर्ण तथा गन्दा होता है।

जयदेव—सगदः प्रियालयधनैर्विसुखः परभाग्यवान् भवति सप्तमगे। यह रोगी होता है। इसे स्त्री, धन और घर का सुख नही मिलता। दूसरों पर अवलम्बित रहता है।

लखनऊ नबाब—बदरोजनः कृशांगः कमफहमश्च मानवो हिर्जः। जानो वा स्याज्जोहलो हफ्तुमखाने यदा भवति॥ यह दुराचारी, दुबला, कम बोलनेवाला, बुद्धिहीन और सदा पराधीन रहनेवाला होता है।

घोलप—यह पापी, क्षीण प्रकृति का, बहुत मूर्ख, कुटिल मित्रों से युक्त, बुरी दृष्टि का, रोगी स्त्री के कारण दुखित तथा अन्नवस्त्र के अभाव से पीडित होता है। राजकीय कारणों से इस का बहुत व्यय होता है।

गोपाल रत्नाकर—इसका शरीर सदोष होता है। दो विवाह होते हैं। वेश्यागमन करता है। विदेश में घूमता है। हमेशा दूसरों के यहां भोजन करना पडता है। इसके नाभि व कान में रोग होता है। यह बहुभार्यायोग भी हो सकता है। सप्तम में शुक्र भी हो तो पत्नी व्यभिचारी होती है।

पाश्चात्य मत—इस व्यक्ति की पत्नी (या पति) उदास, दुखी, निराश, कम बोलनेवाली होती है। यह स्त्रीवियोग (या वैधव्य) का निश्चित योग होता है। शनि द्विस्वभाव राशि में हो तो बहु विवाह होने का योग होता है। शनि राशिबली और शुभ सम्बन्ध में हो तो विवाह से धन और इस्टेट का लाभ होता है। स्त्रियों की कुण्डली में यह शनि किसी विधुर, आयु में काफी बडे किन्तु सम्पन्न वर से विवाह का योग करता है। साधारणः सप्तम में शनि शुभ नही होता। विवाहसुख ठीक नही

मिलता। व्यभिचार की प्रवृत्ति होती है। बदमाश, झूठ बोलने-वाले, विश्वासघातकी लोगों से एकदम शत्रुता होती है। साझी-दारी में नुकसान होता है। कानून कचहरी के मामलों में अस-फल होते हैं। दूसरों के साथ किये व्यवहारों से बेकार के झगडे होकर तकलीफ होती है। राशिबली और शुभ सम्बन्ध में यह शनि अशुभ फल नही देता प्रत्युत शनि के विकसित गुणों से युक्त पत्नी मिलती है। विवाह से भाग्योदय होता है। विशेषत: तुला राशि में यह शनि पतिपत्नी में अच्छा प्रेम रखता है। चन्द्र साथ में हो तो संसार सुख बिलकुल नही मिलता।

भृगुसूत्र—शरीरदोषकर: कृशकलत्र: वेश्यासम्भोगवान् अति दु:खी। उच्चस्वक्षेत्रगते अनेकस्त्रीसम्भोगी। कुजयुते शिश्नचुम्बन-पर:। शुक्रयुते भगचुम्बनपर: परस्त्रीसम्भोगी॥ इस का शरीर दोषयुक्त रहता है। पत्नी कृश होती है। यह वेश्यागमन करता है। बहुत दुखी होता है। शनि उच्च या स्वक्षेत्र में हो तो यह कई स्त्रियों का उपभोग करता है। यहां शनि मंगल से युक्त हो तो वह स्त्री अतिकामुक होती है। शुक्र की युति हो तो वह पुरुष अतिकामुक होते हैं। परस्त्री से सम्पर्क रखते हैं।

हमारे विचार—इस स्थान में आचार्यों ने प्राय: अशुभ फल ही बतलाये हैं। वे फल मुख्यत: वृषभ, कन्या, मकर, तुला तथा कुम्भ इन राशियों में मिलते हैं। शुभ फलों का विचार नही किया है।

हमारा अनुभव—सप्तम स्थान में शनि निसर्गत: बली होता है अत: इस के शुभ फल भी होने चाहिए। किन्तु केन्द्र में

पापग्रह अशुभ फल ही देते हैं इस पूर्वग्रह से आचार्यों ने शुभ फलों का वर्णन नही किया है। मेष, सिंह, मिथुन, कर्क, वृश्चिक धनु तथा मीन इन राशियों में शनि सप्तम स्थान में हो तो विवाह एक ही होता है और पतिपत्नी में अच्छा प्रेम रहता है। दिनभर बातूनी झगडे करेंगे लेकिन मन में प्रेम बना रहता है। इस व्यक्ति की पत्नी पति को देवता समझकर हर समय आपत्ति में भी धैर्य और शान्ति से काम चलाती है। संकट में पति को उत्साह देती है। लोगों में पति का मान रखती है। एकान्त में उस के दोष स्पष्ट बतलाकर उन्हे दूर करने का प्रयास करती है। यह प्रखर नीति की इच्छुक व निर्भय होती है। कामेच्छा उसे बहुत कम रहती है। पति के उद्योग में मदद देती है और उस के स्वास्थ्य की बहुत चिन्ता रखती है यद्यपि पति का आलसी रहना उसे बिलकुल नही सुहाता। यह संसार में दक्ष किन्तु अनासक्त होती है। घर में सब पर प्रेम और रौब भी रहता है। अतिथि सत्कार अच्छा करती है। एलन लिओ ने इस शनि के पत्नी के बारे में फल यों बतलाया है—'यह योग विवाह देरी से होने का या उस में बाधा आने का है। किन्तु विवाह होने पर पत्नी गम्भीर और विश्वासु स्वभाव की मिलती है। वह न्यायी, उद्योगी, दूरदर्शी, सावधानता से कम करनेवाली तथा मितव्ययी होती है। यह बहुत उन्नति का योग नही है किन्तु विवाहसम्बन्ध विश्वासपूर्ण रहता है। यह पति के प्रति प्रेम शब्दों से नही कृति से व्यक्त करती है और पति से भी इसी प्रकार का व्यवहार चाहती है।' हमारे अनुभव में सप्तमस्थ शनि से पत्नी कुछ प्रौढ प्रकृति की और धैर्ययुक्त, परिपक्व

विचारों की होती है। सिंह तथा धनु में—रौबदार, गोल चेहरा होता है। कुछ पुरुष जैसा किन्तु मोहक आकार होता है। कद कुछ नाटा रहता है। वर्ण सांवला, वाणी मधुर, चेहरा हंसमुख और हावभावयुक्त होता है। मेष में—कद ऊंचा, छरहरा बदन, चेहरा लम्बासा, आंखें बारीक, नाक नुकीली और केश विपुल होते हैं। वृषभ, कन्या तथा मकर में—चेहरा चौकोर, कुछ उबड खाबड प्रकृति, वर्ण गोरा किन्तु फीका, केश कम और बोलना भी कम होता है। मिथुन, तुला, कुम्भ में चेहरा गोल, तेजस्वी, स्थूल, केश रेशम जैसे चमकीले किन्तु विरल, वर्ण कुछ गोरा, बोलना बहुत मंजा हुआ तथा स्वभाव कुछ झगडालू होता है। कर्क, वृश्चिक, मीन में—चेहरा कुछ लम्बा, रौबदार, केश चमकीले, रूखे और लम्बे तथा मुद्रा गम्भीर होती है। इस शनि से पत्नी अच्छे स्वरूप और स्वभाव की मिलने पर आर्थिक स्थिति डाँवाडोल रहती है। व्यापार में कमीबेशी चलती रहती है। आर्थिक कष्ट भी रहता है। किसी तरह संसार चलता है। व्यवसाय या नौकरी में परिवर्तन होते हैं। सन्तति कम होती है। इस व्यक्ति को २८ वें वर्ष से जीविका के साधन मिलते हैं। ३६ वें वर्ष से भाग्योदय शुरू होकर ४२ वें वर्ष में अच्छी प्रगति होती है। वृषभ, कन्या, मकर कुम्भ में—दो विवाह होते हैं। दूसरे विवाह के बाद भाग्योदय होता है। इन की पत्नियां साधारणही रहती हैं—स्वार्थी, संसार में आसक्त, झगडालू तथा संकुचित स्वभाव की होती हैं। इसलिए इन्हें स्त्रीसुख अच्छा नहीं मिलता। तुला में स्त्री अच्छी किन्तु आर्थिक स्थिति मामूली रहती है। सप्तमस्थ शनि से साधारणतः खाने की इच्छा और

कामेच्छा अधिक रहती है। मेष, मिथुन, सिंह, धनु, मकर तथा कुम्भ में शिक्षा पूरी होती है। कानून के क्षेत्र में (वकील, बैरिस्टर, जज, मैजिस्ट्रेट आदि के रूप में) सफलता मिलती है। अन्य क्षेत्रों में यश नही मिलता। वृषभ, कन्या, तुला, कर्क, वृश्चिक तथा मीन में कांट्रेक्टर, प्लम्बर, खानों का काम, कोयला, लोहा, लकडी आदि के व्यापारी, मुद्रक, विदेशी माल के एजन्ट आदि के रूप में यश मिलता है। मिथुन, कन्या, धनु तथा मीन में ज्योतिषी, शिक्षक, प्राध्यापक, गणितज्ञ, सम्पादक, मुद्रक आदि (ज्ञानसम्बन्धी) के रूप में यश मिलता है। यह योग क्वचित गोद लिये जाने का है। माता और कभी कभी पिता का मृत्यु २० वें वर्ष तक होता है। बहुधा बचपन में ही माता या पिता का वियोग होता है। कभी सौतेली मां से सम्बन्ध आता है। पत्नी का मृत्यु ५२ से ५५ वें वर्ष तक होता है। मिथुन, तुला तथा कुम्भ में सन्तति में काफी अन्तर रहता है। नौकरी और व्यवसाय दोनों से आजीविका चलती है। तुला में— द्विभार्यायोग हुआ तो लाभ होता है अन्यथा स्थिति साधारण रहती है। सप्तमस्थ शनि का साधारण फल यह है कि पत्नी में कामेच्छा अधिक नही होती। वृषभ तथा कन्या में अविवाहित रहनें की ओर प्रवृत्ति होती है। साधारणतः सप्तमस्थ शनि हो तो वह व्यक्ति पत्नी के पहले मृत होता है। लग्न में शनि से पत्नी का मृत्यु पति से पहले होता है या पत्नी हमेशा बीमार रहती है। दोनों का आचरण अच्छा रहता है। मेष, सिंह, धनु, मिथुन तथा तुला में यह शनि हो तो उस व्यक्ति का स्वभाव उदार, आनन्दी, स्नेहल, खर्चीला, मिलनसार, क्वचित क्रोधी,

लोगों को मदद करनेवाला तथा परस्त्री से विन्मुख होता है। कुछ दुष्ट, हठी, गर्वीला और खुद को बहुत अच्छा और दूसरों को मूर्ख माननेवाला यह व्यक्ति होता है। पसीने से कपडे हमेशा मैले रहते हैं और जलदी फटते हैं। इसे खानेपीने के लिए और अन्य वस्तुओं में भी ऊंची चीजों की इच्छा रहती है। कन्या, तुला, धनु में-सन्तति आयु के उत्तरार्ध में होती है। सप्तमस्थ शनि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण-स्व. नरसिंह चिन्तामणि केलकर (धनु) (विवाह एक ही हुआ)। स्व. शिवराम महादेव परांजपे (कन्या)। सरदार आबासाहब मुजुमदार, पूना (मिथुन) (ये गोद लिये गये थे, विवाह एक ही हुआ)। श्रीमन्त प्रतापसेठ, अंमलनेर (मीन) (गोद लिये जाने से वैभव प्राप्त हुआ, विवाह एक ही हुआ)। ज्योतिषी वसन्त लाडोबा म्हापणकर (मीन)। श्री. एम्. जी ओक, बम्बई (मकर) (वुडस्टाक टाइपराइटर स्कूल में शिक्षक, दो विवाह हुए, जन्म वैशाख कृ.-१ शक १८२१ इऽटघटी १४-५०)। डा. रिचारिया, नागपुर (मीन) (जन्म ता. १९-३-१९०८ अच्छे वैज्ञानिक हैं, कपडा बनाने की नई पद्धति की खोज की है, कृषिशास्त्र में तज्ज्ञ हैं, विवाह एक हुआ)। प्रो. नारके (वृषभ) (ये भूगर्भ विज्ञान के विद्वान थे)। स्व. रावजी रामचन्द्र काले, सातारा (वृश्चिक) (वकील थे, विवाह एक हुआ, सन्तति नही थी)। सर फेरोजशाह मेहता (मकर) (बम्बई के प्रख्यात राजनीतिज्ञ, क्रानिकल पत्र के सम्पादक, दूसरे विवाह के बाद भाग्योदय हुआ)। श्री. ताम्बे (मकर) (ये कुछ समय के लिये मध्यप्रान्त के गवर्नर हुए थे, दूसरे विवाह के बाद भाग्योदय हुआ)। ज्योतिषी होराभूषण

गणेश प्रभाकर दीक्षित, कुण्डली वर्णन के सम्पादक तथा ज्योतिषी यशवन्तराव प्रधान, जातकमार्गोपदेशिका के सम्पादक दोनों की कुण्डलियां प्रायः समान हैं। सप्तम में मिथुन में शनि है। ज्योतिषी, शिक्षक, सम्पादक के रूप में अच्छा काम इन्हों ने किया।

अष्टम स्थान में शनि के फल

आचार्य---स्वल्पात्मजो निधनगे विकलेक्षणश्च। इसे पुत्र कम और आंखें क्षीण होती हैं।

कल्याणवर्मा-कुष्ठभगन्दररोगैरभितप्तं ह्रस्वजीवितं निधने। सर्वारम्भविहीनं जनयति रविजः सदा पुरुषम्॥ यह कोढ, भगन्दर आदि रोगों से पीडित, अल्पायु और निरुत्साही होता है।

पराशर---अष्टमे व्याधिहानिं च। रोग होते हैं तथा हानि होती है।

वसिष्ठ---इन के विचार पहले मंगल विचार में स्पष्ट किये हैं।

गर्ग---विदेशतो नीचसमीपतो वा सौरिर्मृतिं रन्ध्रगतो विधत्ते। हृच्छोककासामयवद्-विषूचीनानाविधं रोगगणं विधाय॥ विदेश में या समीप के किसी हीन स्थान में मृत्यु होता है। हृदय को हुआ शोक, खांसी, कॉलरा आदि नाना रोगों के कारण मृत्यु होता है।

काश्यप---बुभुक्षया लंघनेन तथा प्रायोपवेशनात। बन्धु-वर्गादरिकरात् क्षयतः पृथुदद्रुतः॥ चटकैर्व्रणकोपेन हयपादाभिघाततः। हस्तितः खरतो मृत्युर्मन्दे स्यान्मृत्युभावगे॥ शनि

अष्टम स्थान में हो तो नीचे लिखे अनुसार मृत्यु होता है।— मेष में भूख से, वृषभ में लंघन से, मिथुन में उपवास से, कर्क में रिश्तेदारों से, सिंह में शत्रुओं के हाथ से, कन्या में क्षय से, तुला में बडी खुजली से, वृश्चिक में चटकों से, धनु में व्रणों से, मकर में घोडे की लात से, कुम्भ में हाथी से और मीन में गधे से।

ज्योतिषश्यामसंग्रह—इस में काश्यप के श्लोकों में ही कुछ परिवर्तन इस प्रकार किया है-बुभुक्षया लंघनेन तथाच बहुभोजनात्। संग्रहण्याः पण्डुरोगात् प्रमेहात् सन्निपाततः। कंटकैर्व्रणकोपेन हस्तिपादाभिघाततः। हयतः खरतो मृत्युर्मन्दे स्यात् मृत्युभावगे॥ इसमें बहुत खाना, संग्रहणी, पण्डुरोग, प्रमेह, सन्निपात, कांटा चुभना, ये कारण अधिक गिनाये हैं।

वैद्यनाथ—शूरो रोष्यग्रगण्यो विगतबलधनो भानुजे रन्ध्रयाते। मन्दे लग्नगतेऽथवाष्टमगते तत्पाकभुक्तौ मृतिः॥ यह शूर, बहुत क्रोधी, दुर्बल और निर्धन होता है। लग्न में या अष्टम में शनि हो तो उसकी दशा में मृत्यु होता है।

नारायणभट्ट—वियोगो जनानां त्वनौपाधिकानां विनाशो धनानां स को यस्य न स्यात्। शनौ रन्ध्रगे व्याधितः क्षुद्रदर्शी तदग्रे जनः कैतवं किं करोतु॥ लोगों का वियोग और धन की हानि होती है। रोगी रहता है। क्षुद्र दृष्टि होती है। इसे कोई वंचित नहीं कर सकता।

बृहद्‌यवनजातक—कृशतनुर्ननु दद्रुविचर्चिकाप्रभवतो भयतोषविवर्जितः। अलसतासहितो हि नरो भवेन्निधनवेश्मनि भानुसुते गते॥ यह कृश, खुजली फोडों से दुखित, असन्तुष्ट, निर्भय, आलसी होता है।

आर्यग्रन्थ---शनैश्चरे चाष्टमगे मनुष्यो देशान्तरे तिष्ठति दुःखभागी। चौर्यापराधेन च नीचहस्ते पंचत्वमाप्नोत्यथ नेत्र-रोगी ॥ यह विदेश में रहता है और दुखी होता है। चोरी के अपराध में दण्ड सहता है। नीच व्यक्ति के हाथों मृत्यु होता है। नेत्ररोग होते हैं।

काशीनाथ---क्रोधातुरोऽष्टमे मन्दे दरिद्रो बहुरोगवान्। मिथ्याविवादकर्ता स्याद् वातरोगी भवेन्नरः ॥ यह बहुत क्रोधी, दरिद्री, निरर्थक विवाद करनेवाला तथा वातरोगों से पीडित होता है।

जयदेव---कृशतनुः सगदोऽलसभाग् विदृग् विगततोषसुखो-ऽष्टमगे शनौ। यह दुर्बल, रोगी, आलसी, असन्तुष्ट, दुखी होता है। आंखों का कष्ट रहता है।

जागेश्वर---परं कष्टभाक् क्रूरवक्ता प्रकोपी भवेत् क्षुद्रको धान्यकं नैवं सत्वं। परं हासवार्तादिकं किं तदग्रे यदा मन्दगो मृत्युगो वै नराणाम् ॥ यह क्रोधी, निष्ठुर बोलनेवाला, कष्टयुक्त, क्षुद्र स्वभाव का और कभी हंसीमजाक में शामिल न होनेवाला होता है।

मन्त्रेश्वर---शनैश्चरे मृतिस्थिते मलीमसोऽर्शसोऽवसुः। करालधीर्बुभुक्षितः सुहृज्जनावमानितः ॥ यह मैला, निर्धन, भूखा, दुष्ट बुद्धि का, मित्रों द्वारा अपमानित तथा अर्श से पीडित होता है।

लखनऊ नवाब---बीमारश्च हरीशो दगलबाजश्च दोजखी मनुजः। जोहलो हस्तमखाने भवति बखीलः कृपालसो भीरुः ॥

यह रोगी, आलसी, विश्वासघातक, पापी, डरपोक, कंजूस होता है।

घोलप——यह दुष्ट, दुखी, दुष्टों की संगति से निन्दित, सज्जनों से दूर रहनेवाला, अल्पवीर्य, जड होता है। इस की दृष्टि अच्छी नही होती। शरीर में रक्त कम होता है।

गोपाल रत्नाकर——यह विवाद करनेवाला, दारिद्री, नौकरी से जीविका चलानेवाला, शूद्र स्त्री से संपर्क रखनेवाला होता है। इसकी नाभि वडी होती है। नेत्ररोग, कोढ, गांठें, इन से कष्ट होता है। पुत्र कम होते हैं।

हरिवंश——स्यादायुस्थे दद्रुयुक्तो दरिद्री धातुहीनो दुर्बलांगो रुजानां। सुतौ धूर्तो भीरुरालस्यधीरो भानोः पुत्रे निन्द्यमार्गप्रगामी॥ यह दरिद्री, दुर्बल, डरपोक, आलसी तथा निन्दनीय मार्ग का अवलम्बन करनेवाला होता है। खुजली व धातु की कमी से कष्ट होता है। इसके पुत्र धूर्त होते हैं।

पाश्चात्य मत——यह मकर, कुम्भ या तुला में शुभ-सम्बन्धित हो तो विवाह से आर्थिक लाभ होता है। वारिस के रूप में जमीन आदि इस्टेट प्राप्त होती है। उसकी देखभाल भी अच्छी करते हैं। अष्टम में बलवान शनि दीर्घायु देता है। नैसर्गिक वृद्धत्व से ही मृत्यु होता है। अष्टम में पीडित शनि विवाह से लाभ नही कराता। दहेज आदि कुछ नही मिलता। विवाह के बाद आर्थिक संकट आते हैं। दीर्घकाल रोग से कष्ट होकर मृत्यु होता है। पूर्वार्जित धन नही मिलता। कर्क या मेष में अशुभ शनि से ये फल विशेष रूप में मिलते हैं। पीडित शनि

से अकस्मात मृत्यु का योग होता है। जीवन में हमेशा निराशा होती है। गूढ शास्त्रों का अभ्यास करते हैं।

भृगुसूत्र—त्रिपादायु: दरिद्री शूद्रस्त्रीरत: सेवक:। उच्चे स्वक्षेत्रे दीर्घायु:। अरिनीचगे भावाधिपे अल्पायु: कष्टान्नभोगी॥ यह७५ वर्ष की आयु पाता है। दरिद्री, नौकरी करनेवाला, शूद्र स्त्री से सम्पर्क रखनेवाला होता है। उच्च में या स्वक्षेत्र में शनि हो तो दीर्घायु होता है। यह शत्रु ग्रह की राशि में या नीच में हो तो अल्पायु होता है। कष्टपूर्वक उपजीविका चलती है।

हमारे विचार—प्राचीन लेखकों ने इस स्थान में शनि के फल सब अशुभ ही वतलाये हैं। वे मुख्यत: वृषभ, कन्या, कुम्भ, धनु, मीन तथा मिथुन इन राशियों के हैं। वृषभ में हो तो तुला लग्न और धनु में हो तो वृषभ लग्न होता है। इन लग्नों के लिये शनि शुभयोगकारक होने पर भी अष्टम में सुखदायक नही हो सकेगा। कन्या में हो तो यह व्ययेश होता है अत: दु:ख और दारिद्रय का ही फल मिलेगा। कुम्भ व मीन राशि में हो तो सप्तम और षष्ठ का स्वामी होता है। वृश्चिक में हो तो चतुर्थ व तृतीय का स्वामी होता है अत: दु:खद फल मिलता है।

हमारा अनुभव—अष्टम स्थान विनाशसूचक है और शनि ग्रह भी आपत्तियों द्वारा विरक्ति का जन्मदाता ही है। अत: इन दोनों का संयोग दु:खदायी होता ही है। मेष, सिंह, तुला, वृश्चिक, व मकर में शनि से अधिकार, सम्पत्ति या सन्तति में से किसी एक के बारे में कष्ट रहता है। सन्तति और सम्पत्ति

दोनों की प्राप्ति नही होती। सिर्फ कर्क राशि में दोनों बातों से सुख मिलता है। आकस्मिक धनलाभ होता है। धनु राशि में विवाह के बाद भाग्य क्षीण होते जाता है क्यों कि यह भाग्येश अष्टम में होता है (भाग्येशो मारकस्थेषु जातभाग्यनिरर्थकं)। मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, धनु व मकर में मुख्यतः स्वतन्त्र व्यवसाय से जीविका चलती है। अन्य राशियों में नौकरी का योग होता है। अष्टमस्थ शनि पूर्ववय में दुःखदायी हो तो वृद्ध अवस्था में सुख देता है और पूर्ववय में सुख मिले तो वृद्ध आय दुःखपूर्ण होती है। इस के विपरीत चतुर्थ के शनि से प्रारम्भ में कष्ट, फिर कुछ सुख और वृद्ध आयु में पुनः कष्टपूर्ण स्थिति रहती है। अष्टमस्थ शनि से पत्नी अच्छी मिलती है। आपत्ति में धैर्य रखती है तथा घर की गुप्त बातें बाहर नही बतलाती है।

अब मृत्युयोग के बारे में विचार करेंगे। (१) शनि और राहु दोनों का भ्रमण २।४।६।८।१२ इन स्थानों से हो रहा हो (२) जन्मस्थ रविचन्द्र दूषित हों (३) गोचर भ्रमण में गुरु का रवि पर भ्रमण हो रहा हो अथवा केन्द्र से गुरु का भ्रमण हो (४) चन्द्र से गुरु का युतियोग हो (५) धनेश तथा सप्तमेश पर शनि का भ्रमण हो रहा हो (धनेश तथा सप्तमेश एक ही स्थान में हों तो उस स्थान में शनि का भ्रमण मृत्युयोग-कारक है, अलग अलग हों तो एक में शनि और दूसरे में गुरु का भ्रमण यही योग करता है) (६) २।४।६।७।८ इन स्थानों के स्वामी ग्रह की दशा चल रही हो तो मृत्युयोग होता है। जन्म समय शनि केन्द्र में हो तो गोचर शनि के उपर्युक्त स्थानों में भ्रमण से मृत्युयोग नही होता। इस समय शनि का भ्रमण

१।३।५।७।९।१०।११ इन स्थानों से होता है। अष्टमस्थ शनि मृत्यु के समय सावधान स्थिति रखता है। इन व्यक्तियों की वासनाएं क्षीण होने से मृत्यु के समय का आभास इन्हें कुछ समय पहले मिल जाता है। मेष, सिंह, कर्क वृश्चिक, मकर तथा तुला में दीर्घ आयु मिलती है। पश्चिमी साहित्य में राफेल द्वारा लिखित मेडिकल एस्ट्रालाजी मृत्युयोग के बारे में उपयुक्त ग्रन्थ है। यह शनि ५४ वें वर्ष के बाद अशुभ स्थिति बतलाता है। विवाह के बाद स्थिति बिगडती है। कर्क तथा तुला में ही इस के अपवाद पाये जाते हैं। पत्नी का स्वभाव अच्छा होता है।

उदाहरण---(१) रेंगलर रघुनाथ पांडुरंग परांजपे, पूना (कुम्भ) (भूतपूर्व शिक्षामन्त्री, पूना विश्वविद्यालय के प्रमुख धनवान तथा कीर्तिमान हुए, पुत्रसन्तति नही हुई)। (२) श्रीमान चुनीलाल (मेष) (धनवान, दो विवाह हुए, पुत्र नही हुआ)। (३) डाक्टर कैंकिणी, बम्बई, जन्म ता. १७–५–१८९० वैशाख कृ. १४ शक १८१२ इष्ट घटी ३४–१४ जन्मस्थान कारवार
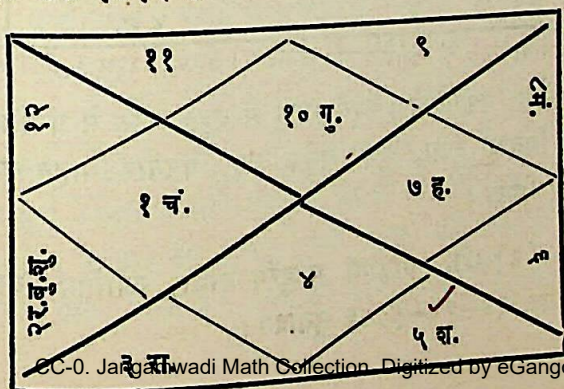
जन्मस्थ शुक्र महादशा भोग्य ७–२–१५। ये विख्यात सर्जन हुए, धन तथा कीर्ति पर्याप्त मिली, पुत्रसन्तति नहीं हुई।

(४) एक क्ष, जन्म ता. ३–१–१८९१ इष्ट घटी ६–७ (सिंह) ये संस्कृत के प्राध्यापक है। वेतन अच्छा है। थोडी पूर्वार्जित इस्टेट है। पुत्र नही।

(५) एक क्ष–जन्म ता. १५–४–१८८९ रात्रि ११ जन्मस्थान बालाघाट।
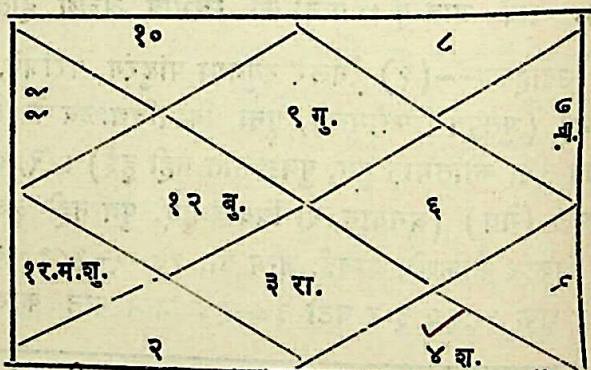
ये प्रसिद्ध वकील हैं। पूर्व आयु में बहुत कष्ट से प्रगति की। एक विवाह हुआ, पुत्र अनेक हुए, घरबार, वाहन का सुख अच्छा मिला।

(६) श्री. श्रीकृष्ण पांडुरंग जोशी, ज्योतिषी, बालापुर जन्म ता. २२–१२–१८८६ सूर्योदय।
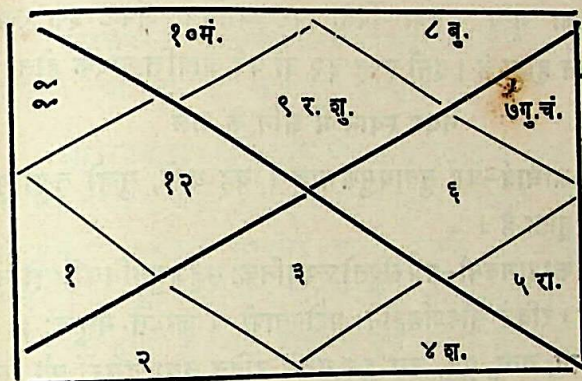
ये अच्छे कीर्तनकार तथा पुराणवाचक, कवि, ज्योतिषी थे। गुजराती व हिन्दी में अच्छी रचना की है। धन और उपभोग इन्हें पर्याप्त प्राप्त हुए। इससे निरिच्छ भावना हुई।

(७) महाराष्ट्र के प्रख्यात अभिनेता श्री. बालगन्धर्व तथा पत्रकार श्री. नारायणराव बामणगांवकर इनके अष्टम में शनि है। दोनों ने बहुत धन प्राप्त किया और वह नष्ट भी हुआ। कीर्ति अच्छी मिली। पुत्र सन्तति नही हुई।

साधारणतः चतुर्थ व अष्टम में पापग्रह हो तो मृत्यु के समय सावधान स्थिति रहती है तथा मृत्यु के समय का आभास पहले होता है। इन स्थानों में शुभग्रह हो तो मृत्यु के समय बेहोशी रहती है। भाग्योदय ३६ वें वर्ष के बाद होता है। अष्टमस्थ शनि बहुत दूषित हो तो कारावास का योग होता है। घरबार नष्ट होना, रोगी रहना, पतिपत्नी में अनबन होना ये फल मिलते हैं। ६ वें वर्ष बडा नुकसान होता है। माता,

पिता का मृत्यु अथवा पिता पर आर्थिक संकट इस रूप में नुकसान होता है। इसी तरह ३२ वां वर्ष आपत्तिकारक होता है।

नवम स्थान में शनि के फल

आचार्य–धर्मे सुतार्थसुखभाक् । यह धनी, सुखी तथा पुत्र-सहित होता है।

कल्याणवर्मा–धर्मरहितोऽल्पधनिकः सहजसुतविवर्जितो नवमसंस्थे। रविजे सौख्यविहीनः परोपतापी च जायते मनुजः ॥ यह धर्म, धन, बन्धु, पुत्र, सुख इन सबसे रहित तथा दूसरों को ताप देनेवाला होता है।

वैद्यनाथ–मन्दे भाग्यगृहस्थिते रणतलख्यातो विदारो धनी॥ यह शूर, धनवान किन्तु स्त्रीहीन होता है।

गर्ग–दम्भप्रधानः सुकृतः पितृदैवतवंचकः । क्षीणभाग्यः सुधर्मा च स्यान्नरो नवमे शनौ ॥ स्वोच्चे स्वभे शनौ भाग्ये वैकुण्ठादागतो नरः। राज्यं कृत्वा स्वधर्मेण पुनर्वैकुण्ठमेष्यति ॥ नवमभावगतः स्वगृहे शनिर्भवति चेत् स महेश्वरयज्ञकृत् । अतिशयं कुरुते जयसंयुतं नृपतिवाहनचिन्हसमन्वितम् ॥ यह दाम्भिक, अच्छे काम करनेवाला, पिता तथा देवता पर आस्था न रखनेवाला, क्षीण भाग्य का, धार्मिक होता है। नवमस्थ शनि उच्च या स्वगृह में हो तो पूर्वजन्म तथा पुनर्जन्म अच्छे होते हैं एवं इस जन्म में धर्मपूर्वक राज्य करता है। यह महेश्वरयज्ञ करनेवाला, विजयी, राजचिन्हों तथा राजा के वाहनों से युक्त होता है।

वसिष्ठ–कुर्वन्ति धर्म रहितं विमतिं कुशीलम् । यह धर्म, बुद्धि तथा शील से रहित होता है।

पराशर—नवमे मित्रबन्धनम् भाग्यहानिश्च। भाग्य की हानि होती है तथा मित्रों को कारावास होता है।

नारायणभट्ट—मतिस्तस्य तिक्ता न तिक्तं तु शीलं रतिर्योगशास्त्रे गुणो राजसः स्यात्। सुहृद्वर्गतो दुःखितो दीनबुद्ध्या शनिर्धर्मगः कर्मकृत् संन्यसेद् वा॥ इसकी बुद्धि तिखी किन्तु आचरण अच्छा रहता है। योगशास्त्र में रुचि रहती है। राजस प्रकृति का होता है। इसे मित्रों से सुख मिलता है। बुद्धि दीन होती है। यह कर्मनिष्ठ या संन्यासी होता है।

आर्यग्रन्थकार—धर्मस्थपंगुर्बहुदम्भकारी धर्मार्थहीनः पितृवंचकश्च। मदानुरक्तो विधनी च रोगी पापिष्ठभार्यापरहीनवीर्यः॥ यह बहुत दाम्भिक, धर्महीन, धनहीन, मदान्ध, रोगी, पिता की वंचना करनेवाला तथा हीन पत्नी के वश होकर वीर्यहीन होनेवाला होता है।

बृहद्यवनजातक—धर्मकर्मरहितो विकलांगो दुर्मतिर्हि मनुजो विमनाः सः। संभवस्य समये हि नरस्य भाग्यसद्मनि शनौ स्थिरचित्तः॥ यह धर्म कर्म से रहित किसी अवयव से हीन, दुर्बुद्धि, विमनस्क किन्तु स्थिरचित्त होता है।

ढुंढिराज—उपर्युक्त वर्णन में सिर्फ अतिमनोज्ञ-सुन्दर होना-इतना विशेषण अधिक जोडा है।

काशीनाथ—धर्मे मन्दे धर्म हीनो अविवेकी रिपोर्वशः। नृशंसो जायते लोके परदाररतः सदा॥ यह धर्महीन, अविवेकी, शत्रु के वशवर्ती, निष्ठुर तथा परस्त्री में अनुरक्त होता है।

जयदेव––सुसुतवित्तसुखो विमलांगभाग् विमतिभाग् विमना नवमेऽर्कजे ।। यह धन, पुत्र तथा सुख से सम्पन्न, निर्मल शरीर का, विमनस्क तथा दुर्बुद्धि का होता है ।

जागेश्वर––भवेत् क्रूरबुद्धिस्तथा धर्मोनाशो न तीर्थं न सौजन्यमेतस्य देहे । तथा पुत्रभृत्यादिचिन्तातुरः स्याद् यदा पुण्यगो मन्दगामी नरस्य ।। यह क्रूर स्वभाव का, धर्महीन, पुत्र तथा नौकरों के लिये चिन्तित, सौजन्यरहित होता है । यह कभी तीर्थयात्रा नही करता ।

मन्त्रेश्वर––भाग्यार्थात्मजतातधर्मरहितो मन्दे शुभे दुर्जनः । यह दुष्ट, भाग्यहीन, धनहीन, धर्महीन, पुत्रहीन तथा पिता से वियुक्त होता है ।

हरिवंश––मन्दप्रज्ञो मन्दमानापमानो मन्दप्राप्तिर्मन्दविन्मन्दसौख्यः । मन्दस्त्यागी मन्दसत्यप्रसूतौ भाग्ये मन्दे मन्दभाग्यो मनुष्यः ।। यह मन्दबुद्धि का होता है । मान, अपमान की भावना तीव्र नही होती । धन कम ही मिलता है । दान भी थोडा ही करता है । सत्यप्रीति ज्ञान तथा भाग्य भी अल्प होता है ।

घोलप––यह राजद्रोही, कामेच्छारहित, दुष्टों की संगति में रहनेवाला, दुराचारी, धर्महीन, कृश होता है । सज्जन इस पर रुष्ट होते हैं । इसे सिंहादि क्रूर प्राणियों से हानि होती है ।

गोपाल रत्नाकर––यह कंजूस होता है । पुराने कपडे पहनता है । तालाव, मन्दिर आदि बनवाता है । इसके पिता के कुटुम्ब के व्यक्ति इसके विरोधक होते हैं । उनमें स्त्री सम्बन्धितों का वियोग होता है ।

लखनऊ-नबाब---बख्तबुलन्दः श्रीमान् शीरीं सखुनश्च मानवो यदि वै। जोहलो बख्तमकाने वेतालश्च हि कृपालुरपि भवति ॥ यह हमेशा भाग्यवान, धनवान, मधुरभाषी, सुखी तथा दयालु होता है।

पाश्चात्य मत---इस स्थान में तुला, मकर, कुम्भ या मिथुन में शुभसम्बन्धित शनि हो तो वह, व्यक्ति विद्याव्यासंगी, विचारी, शान्त, धीरोदात्त, स्थिरवृत्ति तथा मितभाषी होता है। यह कानून, दर्शनशास्त्र, वेदान्त आदि जटिल विषयों में रुचि रखता है तथा प्रवीणता प्राप्त करता है। न्यायदान, धार्मिक संस्थाएं, विद्यालय आदि में अपनी पवित्रता तथा श्रेष्ठ बुद्धि से ये अच्छा स्थान प्राप्त करते हैं। दैवी धर्मसंस्थापकों की कुण्डली में अकसर यह योग देखा गया है। इसी स्थान में पीडित शनि हो तो द्वेषी, कंजूस, स्वार्थी, क्षुद्रबुद्धि, छद्मी, धर्म के विषय में दुराग्रही तथा मर्मघातक बोलनेवाला होता है। इसे विवाह से सम्बन्धित रिश्तेदारों से हानि होती है। विदेश में घूमने से, कानूनी व्यवहारों में, लम्बे प्रवास से नुकसान होता है। ग्रन्थ-प्रकाशन में असफलता मिलती है। इस स्थान में शुभ शनि ही विदेशभ्रमण के लिये अच्छा है। अशुभ शनि से विदेश में बहुत कष्ट होता है। इसका स्वभाव अभ्यासप्रिय, गम्भीर, दूसरों का तिरस्कार करनेवाला होता है। अशुभ सम्बन्ध से चित्तभ्रम, भटकना, पागलपन आदि फल मिलते हैं। इस शनि से ज्योतिष आदि गूढ शास्त्रों में रुचि रहती है।

भृगुसूत्र---अधिपतिः। जीर्णोद्धारकर्ता। एकोनचत्वारिंशद्वर्षे तटाकगोपुरनिर्माणकर्ता। उच्चस्वक्षेत्रे पितृदीर्घायुः।

पापयुते दुर्बले पित्ररिष्टवान् ॥ यह अधिकारी होता है। पुरानी इमारतों का जीर्णोद्धार करता है। ३९ वें वर्ष में तालाब, मन्दिर बनवाता है। उच्च में या स्वगृह में यह शनि हो तो पिता दीर्घायु होता है। पापग्रह से युक्त या दुर्बल हो तो पिता पर आपत्ति आती है।

हमारे विचार---प्राचीन लेखकों में कल्याणवर्मा, गर्ग, वसिष्ठ, पराशर, नारायणभट्ट, आर्यग्रन्थकार, ढुंढिराज, यवन-जातककार, जयदेव, काशीनाथ, जागेश्वर, मन्त्रेश्वर, घोलप, गोपाल रत्नाकर तथा हरिवंशकारने इस स्थान में शनि के फल अशुभ बतलाये हैं। इनका अनुभव वृषभ, कन्या, तुला, मकर तथा कुम्भ में आता है। आचार्य, गुणाकर, लखनऊ नवाब इन्होंने जो शुभ फल दिये हैं उनका अनुभव मेष, मिथुन, कर्क, सिंह वृश्चिक, धनु तथा मीन में आता है।

हमारा अनुभव---नवम में मेष, सिंह, धनु, मिथुन, कर्क, वृश्चिक, मीन में शनि ३६ वें वर्ष से भाग्योदय कराता है। जीविका का आरम्भ मामूली लोगों में २० वें वर्ष से तथा उच्च वर्गों में २७ वें वर्ष से होता है। पूर्वार्जित सम्पात्ति प्राप्त होती है तथा उसमें कुछ वृद्धि भी होती है। शेष राशियों में पूर्वार्जित सम्पत्ति नही होती। रही भी तो ३४ वें वर्ष तक अपने ही हाथों नष्ट होती है। सम्पत्ति में वृद्धि नही होती। दारिद्रयोग होता है। अस्थिरता रहती है। अपमान के अवसर आते हैं। पिता का जलदी मृत्यु होता है या जीवित रहे तो सम्बन्ध ठीक नही रहते। भाइयों से अनबन होती है। भाईबहिनों की स्थिति अच्छी नही रहती। बंटवारा कर अलग रहना इनके लिये अच्छा होता है।

इन्हें विवाह के बारे में कुछ अनियमित परिस्थिति प्राप्त होती है। रजिष्टर पद्धति से विवाह करेंगे या स्थैर्य प्राप्त होने तक विवाह न करना पसन्द करेंगे। विदेशभ्रमण हुआ तो किसी विदेशी युवती से विवाह करेंगे। आस्तिक विचार होते हैं किन्तु आचरण नास्तिकों जैसा होता है। मेषादि राशियों में शिक्षा पूरी होती है। विज्ञान की उपाधियां—बी. एस. सी., एम्. एस. सी; डी. एस सी. आदि—या कानून की उपाधि प्राप्त होती है। शिक्षक, संशोधक, वकील, अटर्नी आदि के रूप में सफल होते हैं।

स्वतन्त्र व्यवसाय या व्यापार का योग क्वचित देखा है। ये कर्मठ होते हैं। सौतेली मां होने का योग होता है। इस स्थान में पुरुष राशि में शिक्षा पूरी होती है। स्त्री राशि में क्वचित ही होती है। कर्क, वृश्चिक तथा मीन में यह शनि छोटे भाइयों के लिये शुभ है। अन्य राशियों में छोटे भाई नही रहते।

उदाहरण—(१) स्व. डा. शंकर आबाजी भिसे—ये अच्छे संशोधक थे। टाइपों में सुधार किये तथा ओटोमिडीन नामक औषधि तैयार की। इनके नवम में वृश्चिक में शनि था।

(२) क्ष—जन्म ता. १६–४–१९०३ सुबह ८–२३ इष्ट घटी ६–५० लग्न १–२५–७–४१।
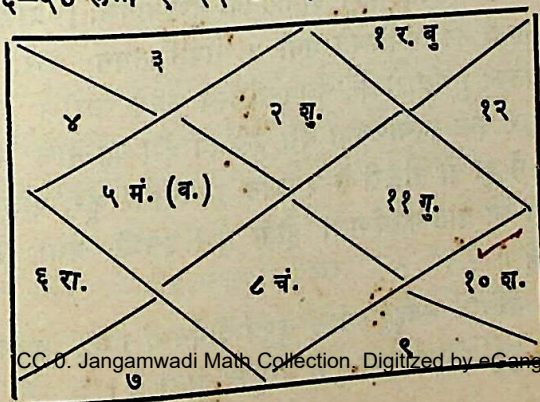
इसे कभी स्थिरता नही मिली। नौकरी कई जगह को किन्तु बारबार काम छोडना पडा। धन नही मिला। घर में सब से छोटे थे। दारिद्र्ययोग का यह अच्छा उदाहरण है।

दशम स्थान में शनि के फल

आचार्य व गुणाकर—सुखशौर्यभाक् खे। यह सुखी और शूर होता है।

कल्याणवर्मा—धनवान् प्राज्ञ: शुरो मन्त्री वा दण्डनायको वापि। दशमस्थे रवितनये वृन्दपुरग्रामनेता च॥ यह धनी, बुद्धिमान, शूर तथा मन्त्री या सेनापति होता है। यह नगर, गांव और जनसमूह का नेता होता है।

पराशर—दशमे धनलाभं सुखं जयं। माने च मीने यदि वार्कपुत्र: संन्यासयोगं प्रवदन्ति तस्य॥ यह धनी, सुखी तथा विजयी होता है। यह शनि मीन में हो तो संन्यास का योग होता है।

गर्ग—भवेत् वृन्दपुरग्रामपतिर्वा दण्डनायक:। प्राज्ञ: शूरो धनी मन्त्री नर: कर्मस्थिते शनौ॥ सेवार्जितधन: क्रूर: कृपण: शत्रुघातक:। जंघारोगीनीचशत्रुराशिस्थे कर्मगे शनौ। शनि के साधारण फल कल्याणवर्मा जैसे बतलाये हैं। यह नीच या शत्रु राशि में हो तो नौकरी से धनार्जन करनेवाला क्रूर, कंजूस तथा शत्रुओं का घात करनेवाला होता है। इसकी जंघा में रोग होते हैं।

वसिष्ठ—बहुकुकर्मरतं कुपुत्रं दौर्मनस्यं। यह बहुत दुराचारी, दुर्बुद्धि तथा दुष्ट पुत्रों से युक्त होता है।

वैद्यनाथ—मन्दे यदा दशमगे यदि दण्डकर्ता मानी धनी निजकुलप्रभवश्च शूरः ॥ विवासः। यह धनी, मानी, शूर, अपने कुल में श्रेष्ठ, शासक होता है। यह संन्यास का भी योग होता है।

बृहद्यवनजातक—राज्ञः प्रधानमतिनीतियुतं विनीतं सद्-ग्रामवृन्दपुरभेदनकाधिकारम्। कुर्यान्नरं सुचतुरं द्रविणेन पूर्णं मेषूरणे हि तरणेस्तनुजः करोति ॥ यह राजमन्त्री, बहुत नीतिमान, नम्र, गांव और लोगों का प्रमुख अधिकारी, चतुर, धनी होता है।

आर्यग्रन्थ—शनैश्चरे कर्मगृहे स्थितेऽपि महाधनी भृत्यजना-नुरक्तः। प्राप्तप्रवासे नृपसद्मवासी न शत्रुवर्गाद् भयमेति मानी ॥ यह बहुत धनवान, नौकरों में आस्था रखनेवाला, प्रवास में राजप्रासादों में रहनेवाला, निर्भय तथा मानी होता है।

काशीनाथ—कर्मभावे सूर्यपुत्रे कुकर्मा धनवर्जितः। दया-सत्यगुणैर्हीनश्चंचलोपि भवेत् सदा ॥ यह दुराचारी, निर्धन, निर्दय, चंचल तथा सत्य से विमुख होता है।

जयदेव—प्राज्ञः प्रधानमतिमान् सभयो विनीतो ग्रामा-धिकारसहितः सधनोऽम्बरस्थे। यह बुद्धिमान, प्रधान, नम्र, गांव का अधिकारी, धनवान और भययुक्त होता है।

जागेश्वर—शनौ कर्मणे पितृघाती नरः स्यात् परं मातृकष्टं कथं देहसौख्यं तथा वाहनं मित्रसौख्यं कुतः स्याद् ध्रुवं दुष्टकर्मा भवेन्नीचवृत्तिः ॥ यह पिता के लिये घातक होता है तथा माता को भी कष्ट होता है। शरीर सुख, वाहन अथवा मित्रों का

सुख नही मिलता। यह दुराचारी और नीचवृत्ति से युक्त होता है।

नारायणभट्ट—अजातस्य माता पिता बाहुरेव वृथा सर्वतो दुष्टकर्माधिपत्यात्। शनैरेधते कर्मगः शर्म मन्दो जयो विग्रहे जीविकानां तु यस्य॥ शनौ व्योमगे विन्दते किं च माता सुखं शैशवं दृश्यते किन्तु पित्रा। निधिः स्थापितो वा पिता वा कृषिश्च प्रणश्येत् ध्रुवं दृश्यतो दैवतो ना॥ इसके बचपन में ही मातापिता का मृत्यु होता है। इसे बहुत धीरे धीरे सुख मिलता है। युद्ध में विजयी होता है। अधिकारी होने पर यह व्यर्थ ही दुष्ट काम करता है। इसकी पैतृक सम्पत्ति, जमीन आदि दृश्य या दैवी कारण से नष्ट होती है।

मन्त्रेश्वर—मन्त्री वा नृपतिर्धनी कृषिपरः शूरः प्रसिद्धोम्बरे॥ यह राजा अथवा मन्त्री, धनवान, शूर तथा खेती में रुचि लेनेवाला होता है।

लखनऊ नबाब—शाहमकाने जोहलश्चेपु दशाप्ते च मानवो शाहः। अथवा भवेन्मशीरः खुशखुल्क सुकृती गनी नेही शनि दशम में हो और शनि की दशा प्राप्त हो उस समय राजपद अथवा मन्त्रिपद मिलता है। यह संसार में सुखी, सदाचारी, लोगों से स्नेह रखनेवाला होता है।

हरिवंश—बुद्धियुक्तं पूर्णवित्तं मनुष्यं ग्रामाधीशं राजमान्यं करोति। स्वोच्चस्थो वा स्वारूयस्थो विशेषात् शेषस्थश्चेद् वैरिभीत्यं शनिश्च॥ यह शनि उच्च या स्वगृह में हो तो वह बुद्धिमान, धनी, गांव का अधिकारी और राजमान्य होता है। अन्य राशियों में शत्रुओं से भय रहता है।

घोलप---यह सब कलाओं का ज्ञाता, राजा जैसा सुखी, लोगों से स्नेहपूर्वक रहनेवाला होता है।

गोपाल रत्नाकर---यह मातृभूमि छोडकर विदेश में निर्वाह करता है। कंजूस, पित्त प्रकृति का होता है। यह माता के लिए मारक योग है। गांव का प्रमुख होता है। खेती से धनार्जन करता है। गंगास्नान करता है।

भृगुसूत्र---पंचविंशतिवर्षे गंगास्नायी। अतिलुब्धः पित्त-शरीरी। पापयुते कर्मविघ्नकरः। शुभयुते कर्मसिद्धिः। केन्द्रे मन्दे षट्त्रिंशद्वर्षादुपरि भाग्यवृद्धिः। जनसेवकः मित्रवृद्धिः। समाजकार्ये रज्जकार्ये च कुशलः। सन्मानलाभश्च॥ यह २५ वें वर्ष गंगास्नान करता है। लोभी और पित्तप्रकृति होता है। पापग्रह साथ हो तो कामों में विघ्न आते हैं। शुभग्रह साथ हो तो काम सफल होते हैं। शनि केन्द्र में हो तो ३६ वें वर्ष के बाद भाग्योदय होता है। यह लोकसेवा करनेवाला, समाजकार्य तथा राजकारण में कुशल, सन्मान पानेवाला और बहुत मित्रों से युक्त होता है।

पाश्चात्यमत---यह शनि राशिबली-तुला, मकर, कुम्भ या मिथुन में हो, या अन्य ग्रहों से शुभ सम्बन्धित हो तो सत्ता, अधिकार तथा भाग्य के लिये उत्कर्षकारक होता है। दीर्घ उद्योग, परिश्रम, महत्वाकांक्षा, प्रामाणिकता, दूर दृष्टि, व्यवस्थितता आदि गुणों से ये लोग सहज ही महान पद प्राप्त करते हैं। दूसरों की मदद के बिना अपने ही गुणों तथा परिश्रम से इनकी उन्नति होती है। अधिकारपद, बडे उद्योगों के संचालक, बैन्कों के डाइरेक्टर आदि उत्तरदायित्वपूर्ण पदों के लिये योग्य व्यक्ति

होते हैं। दशम में बलवान शनि कानून के क्षेत्र में अधिकार देता है—सबजज, जज, हाइकोर्ट के जस्टिस आदि होते हैं। पीडित शनि से प्राप्त अधिकार का दुरुपयोग करते हैं। दुराचार, झूठे षडयन्त्र, अप्रामाणिक व्यवहार से सत्ता प्राप्त होती है अतः उनका अधःपात भी जल्दी ही होता है। हर्शल, नेपच्यून, सूर्य, मंगल या गुरु से अशुभ सम्बन्धित होनेपर यह शनि बहुत अशुभ होता है। बचपन में मातापिता का मृत्यु होना, बालवय में ही स्थावर सम्पत्ति नष्ट होना, नौकरी में असफल होना, वरिष्ठ अधिकारी से झगडा होना, उच्च पद छोडकर हलके पद पर नियुक्त होना, सामाजिक कार्य में नुकसान होना आदि फल पीडित शनि से प्राप्त होते हैं। जीविका के लिये कठोर परिश्रम और कष्टदायक काम करने पडते हैं। बेइज्जती के अवसर बारबार आते हैं। स्वतन्त्र व्यवसाय में दिक्कतें आती हैं। दशमस्थ शनि से रवि अथवा चन्द्र अशुभ सम्बन्ध में हो तो अशुभ फल बहुत तीव्र होते हैं। यह योग हमेशा असफलता, विघ्न, दारिद्र्य, अपमान और अपकीर्ति का कारण होता है। दशम में मेष, कर्क, वृश्चिक तथा मीन में शनि के फल बहुत अनिष्ट होते हैं।

हमारे विचार—इस स्थान में आचार्य, गुणाकर, कल्याणवर्मा, गर्ग, पराशर, वैद्यनाथ, यवनजातक, आर्यग्रन्थ, हरिवंश जयदेव, मन्त्रेश्वर, लखनऊनबाब, घोलप तथा रत्नाकर ने सब शुभफल बतलाये हैं। इनका अनुभव मेष, सिंह, धनु, मिथुन, कर्क, वृश्चिक तथा मीन में मिलता है। वसिष्ठ काशीनाथ, जागेश्वर, नारायण भट्ट ने अशुभ फल बतलाये हैं उनका अनुभव वृषभ, कन्या, तुला, मकर तथा कुम्भ में मिलता है।

हमारा अनुभव---दशमस्थ शनि बचपन में ११ वें वर्ष तक ही मातापिता का वियोग कराता है। उनका मृत्यु होता है, अथवा गोद लिये जाने से दूसरे घर जाना पडता है अथवा विदेश में निर्वासित होना पडता है। दोनों एकत्र रहे ही तो पिताको सतत कष्ट का अनुभव होता है। व्यवसाय बदलना, हानि होना, बेकार रहना, अस्थिरता होना, कर्ज न चुकाने से कारावास, आदि बातें होती हैं। नौकरी हो तो पदावनति होना, सस्पेण्ड होना, मतिभ्रम होना, निर्वासित होना, फौजदारी कानून से दण्डित होना, असाध्य रोग होना आदि से कष्ट होता है। यह बालक बडा होने पर मातापिता से इसके सम्बन्ध अच्छे नही रहते। उपजीविका नही चलती। भाग्योदय बिलकुल नही होता। मामूली इच्छाएं भी पूरी नही होती। बडे होकर बेकार रहने से घर में हमेशा अपमान होता है। पैतृक इस्टेट नही मिलती और मिली तो वह पूरी तरह नष्ट होने पर ही कहीं सफलता मिल सकती है। इस योग में पितापुत्र दोनों एकसाथ प्रगति नही कर सकते। गोपालरत्नाकर का विदेशगमन से प्रगति होने का फल हमारे अनुभव से भी ठीक प्रतीत होता है। इन लोगों का अपनी जन्मभूमि में भाग्योदय नही होता। मेष, सिंह, धनु, मिथुन में प्राध्यापक, संशोधक, अधिकारी गूढशास्त्रों के अभ्यासी होते हैं। क्वचित व्यापारी भी देखे हैं। वृषभ, कन्या, मकर, कर्क, वृश्चिक, मीन, तुला, कुम्भ में संन्यासी, धर्मप्रवर्तक, लेखक, गूढशास्त्रों के अभ्यासी, ज्योतिषी आदि होते हैं। नगर-निगम, जिलापरिषद आदि की सदस्यता या अध्यक्षता भी इस योग पर मिल सकती है। मेष, सिंह, धनु, मिथुन, कर्क, वृश्चिक

मीन में शिक्षा पूरी होती है. एम्. ए., एल् एल्. बी., एम्. डी., एम्. एस्सी. आदि उपाधियां प्राप्त होती हैं। न्यायविभाग में जज, आदि अधिकारी, पुलिस, सेना या अबकारी इन्स्पेक्टर, रेंजर, डी. एफ्. ओ., टेकनिकल अधिकारी आदि की कुण्डलियों में यह योग होता है। वृषभ, कन्या, तुला, कुम्भ में लेखक होने का योग होता है। ये दूसरों को बहुत उपदेश देते हैं किन्तु स्वयं दरिद्री ही रहते हैं। कंट्रेक्टर, विदेशी माल के एजेन्ट आदि हो सकते हैं। ये अपने व्यवसाय के मर्म को अच्छी तरह समझते हैं और उसमें इनसे कोई स्पर्धा नही कर पाता। इन्हें स्त्रीसुख कम मिलता है। दो विवाह हो सकते हैं। इन्हें पुत्र नही होते या पुत्रों से सुख नही मिलता। गोद लिये जाने पर इन्हें पुत्रसुख मिल सकता है। साधारणतः शनि के फलस्वरूप विषयेच्छा कम होनी चाहिए किन्तु अनुभव में ये विषयासक्त ही पाये जाते हैं। शुक्र और चन्द्र का अशुभ सम्बन्ध हो तो इनका किसी ज्येष्ठ स्त्री से अवैध सम्बन्ध पाया जाता है। वृद्ध आयु में भी स्त्रीसुख की इच्छा इन्हें बनी रहती है। इनके वस्त्र पसीने से हमेशा मैले रहते हैं और जलदी फटते हैं। ये अपने घर से अधिक दूसरों के व्यवहार की फिक्र करते हैं। दूसरों के विवाह जमाना, समझौता कराना, संस्थाएं स्थापित करना आदि में मग्न होकर ये घर का खयाल भूल से जाते हैं। दशमस्थ शनि से कामशास्त्र के उपदेशक और वेदान्त के प्रवर्तक दोनों प्रवृत्तियों के लोग पाये जाते हैं। इन्हें कीर्ति, सन्मान, धन मिलता है। विदेशयात्रा होती है। ये स्वयं को किसी श्रेष्ठ कार्य के लिये उत्पन्न हुए मानते हैं और उस कार्य को सफल देख कर मृत्यु के समय

सन्तोष का अनुभव करते हैं। मातापिता की दृष्टि से ही यह योग अशुभ होता है। माता का मृत्यु होता है या उसे कोई असाध्य रोग या व्यंग होता है और पिता के जीवित रहते भाग्योदय नही हो पाता।

कुछ प्रसिद्ध उदाहरण---नासिक मठ के शंकराचार्य डा० कुर्तकोटी (मीन), स्वामी विवेकानन्द (कन्या), स्व. श्री. पांगारकर (मराठी सन्त साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान) (धनु), प्रख्यात मराठी उपन्यासकार स्व. हरि नारायण आपटे (कन्या), भूतपूर्व मध्यप्रदेश राज्य के मन्त्री श्री. बाबासाहब खापर्डे (मेष), स्व. तात्यासाहब सांगलीकर (वृश्चिक) (इनके सात विवाह हुए किन्तु पुत्र नही हुआ), श्री. गंगाधर केशव देशपांडे, पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट (वृश्चिक) (तीन पत्नियों का मृत्यु हुआ), सांगली रियासत के प्रधान (सिंह) (गोद लिये जाने से अधिकारपद मिला), स्व. जमनालाल बजाज (सिंह) (गोद लिये जाने से वैभव मिला), स्व. सयाजीराव गायकवाड, महाराजा बडौदा, (कन्या) (गोद लिये जाने से अधिकारपद, द्विभार्यायोग), श्री. उदगांवकर, अमरावती (तुला) (टेक्निकल स्कूल के प्रमुख), श्री. एन्. एम्. पटवर्धन (मीन) (डिस्ट्रिक्ट जज हुए), फ्रान्स के बादशाह नेपोलिअन बोनापार्ट (मिथुन) (युद्ध में कुशलता तथा बहुभार्या योग), जर्मनी के युद्धकालीन प्रमुख एडाल्फ हिटलर (कर्क), पंडित पद्मनाभ पांडुरंग पालये (मीन) (ज्योतिषी), कुण्डलीसग्रह (पं. रघुनाथशास्त्री द्वारा प्रकाशित) की कुण्डली नं. ११२ (दशम में तुला में शनि)

इसके जन्म के बाद ३ वर्षों में ही मातापिता का मृत्यु हुआ, जन्म के समय स्थिति अच्छी थी द्विभार्या योग हुआ।

दशमस्थ अशुभ शनि अति विपत्ति का कारण होता है। बहुत दारिद्र्य, खाने की मुश्किल होना, पैतृक सम्पत्ति न होना या होकर भी प्राप्त न होना, कष्टमय जीवन, वेइज्जत होना, मन के प्रतिकूल हलकी नौकरी, नौकरी में बहुत बार परिबर्तन, मृत्यु के समय तक कष्ट यह इन लोगों के जीवन का हाल रहता है। दशमस्थ शनि, मेष, सिंह, धनु, मिथुन, कर्क, वृश्चिक व मीन में होकर रविचन्द्र से केन्द्रयोग करता हो तो सांसारिक कष्ट बहुत रहते हैं किन्तु कीर्ति अच्छी मिलती है। इसका अच्छा उदाहरण स्व. हरि नारायण आपटे की कुण्डली है। इन्हें जीवन पर्यन्त सन्तति तथा सम्पत्ति सुख अच्छी तरह प्राप्त नही हुआ किन्तु उनके मराठी उपन्यास चिरस्मरणीय हुए हैं। इनकी कुण्डली में रविचन्द्र का शनि से षडष्टक योग हुआ है।

लाभस्थान में शनि के फल

आचार्य व गुणाकर---प्रभूतधनवान्। यह बहुत धनवान होता है।

कल्याणवर्मा---बव्हायुः स्थिरविभवः शूरः शिल्पाश्रयो विगतरोगः। आयस्थे भानुसुते धनजनसम्पद्युतो भवति॥ यह दीर्घायु, धनवान, शूर, शिल्प के आश्रय से जीविका चलानेवाला, नीरोग तथा परिवार से युक्त होता है।

वसिष्ठ---रविजः सुकीर्तिम्॥ कीर्तिमान होता है।

गर्ग--स्थिरसम्पत्तिभूलाभी शूरः शिल्पान्वितः सुखी। निर्लोभश्च शनौ कैश्चित् मृत प्रथमजीविकः ॥ इसकी सम्पत्ति, जमीन आदि स्थिर होती है। यह शूर तथा शिल्प से युक्त, सुखी एवं निर्लोभी होता है। इसकी पहली सन्तति मृत होती है।

पराशर--एकादशे धनानां च सिद्धि मित्रसमागमम् ॥ धन प्राप्त होता है तथा मित्रों की संगति मिलती है।

वैद्यनाथ---भोगी भूपतिलब्धवित्तविपुलः प्राप्ति गते भानुजे। दासीदासकृषिक्रियार्जितधनं धान्यं समृद्धं शनिः ॥ यह राजा की कृपासे विपुल धन प्राप्त कर अच्छा उपभोग करता है। इसे दासदासियों से तथा खेती से धनधान्य मिलता है।

आर्यग्रन्थ—सूर्यात्मजे चायगते मनुष्यो धनी विमृश्यो बहुभाग्यभोगी। मितानुरागी मुदितः सुशीलः स बालभावे भवतीतिरोगी ॥ यह धनवान, विचारशील, भाग्यवान, आनन्दी, शीलवान होता है। बचपन में रोगी रहता है।

बृहद्यवनजातक---कृष्णाश्वानामिन्द्रनीलोर्णकानां नाना-चंचद्वस्तुदन्तावलीनाम्। प्राप्तिं कुर्यान्मानवानां बलीयान् प्राप्तिस्थाने वर्तमानोऽर्कसूनुः ॥ इसे काले घोडे, इन्द्रनील रत्न, ऊन, विविध वस्तु, हस्तिदन्त आदि की प्राप्ति होती है।

नारायणभट्ट---स्थिरं वित्तमायुः स्थिरं मानसं च स्थिरा नैव रोगादयो न स्थिराणि। अपत्यानि शूरः शतादेक एव प्रपंचाधिको लाभगे भानुपुत्रे ॥ यह हमेशा धनवान, दीर्घायु शूर तथा स्थिर चित्त का होता है। इसे दीर्घकाल रोग नही होते। इसकी सन्तति स्थिर नही रहती। प्रपंच बडा होता है।

जागेश्वर---धनं सुस्थिरं दन्तिनस्तस्य गेहे भयं याग्निना जायते देहदुःखं । न रोगा गरिष्ठास्तदंगे कदाचित् यदा लाभगो मन्दगामी जनानाम् ॥ यह सदा धनवान होता है । घर में हाथी पलते हैं । इसे आग से भय तथा शरीर में दुःख होता है । बडे रोग नही होते ।

काशीनाथ---छायात्मजे तु लाभस्थे सर्व विद्याविशारदः । खरोष्ट्रमहिषैः पूर्णो राजमान्योऽशुचिर्भवेत् ॥ यह सब विद्याओं में प्रवीण, राजमान्य, किन्तु अपवित्र होता है । इसके घर में ऊंट, भैंस, गधे आदि प्राणी बहुत होते हैं ।

जयदेव–कृष्योर्णिकाश्वगजनीलबलाढचता स्यात् सद्वस्तुता भवति लाभगतेऽर्कसूनौ । खेती, ऊन, घोडे, हाथी, नीली वस्तुएं आदि अच्छी चीजों से यह समृद्ध होता है ।

हरिवंश---पृथ्वीपालं मानलाभं धनं च विद्यालाभं पण्डितेभ्यः प्रसूतो । नानालाभ सर्वतो मानवस्य लाभस्थाने भानुपुत्रो विदध्यात् ॥ इसे राजा से सन्मान, पण्डितों से विद्या, धन आदि कई लाभ होते हैं ।

लखनऊ–नबाब---साहेबदर्दो नेकः शीरीं सखुनत्वबंगरोना स्यात् । याफ्तमकाने जोहलः ईशः साबिरो रिपुहन्ता ।। यह दयालु, शुद्ध आचरण करनेवाला, मधुरभाषी, धनवान, बहुत लोगों का मालिक, सन्तुष्ट और शत्रु को जीतनेवाला होता है ।

घोलप---यह उत्तम गुणों से युक्त, तेजस्वी, शत्रु का घात करनेवाला, अच्छे घर में रहनेवाला होता है । इसका मन सत्संगति से शुद्ध होता है । नीतिमान और कष्टमुक्त होता है ।

गोपाल रत्नाकर--यह बहुत श्रीमान, राजपूज्य होता है। इसे भूमि का लाभ होता है। शिक्षा में रुकावट आती है। इसको और इसके पिता को बडे भाई नही होते। वाहनसुख मिलता है।

पाश्चात्य मत--यह शनि तुला, मकर व कुम्भ में शुभ-सम्बन्धित हो तो आयु के उत्तरार्ध में साम्पत्तिक सुख बहुत अच्छा मिलता है। धनप्राप्ति का प्रमाण अच्छा होता है और संचय भी होता है। मित्र कम होते हैं। यह शनि सन्तति के लिय अनुकूल नही है। स्त्री वन्ध्या होती है अथवा देर से सन्तति होती है या होकर नष्ट होती है। सन्तति से कष्ट होता है। इस स्थान में पीडित शनि के कारण मित्रों से नुकसान होता है। किसी की जमानत लेने या पैसे उधार देने से नुकसान होता है। इस शनि से रवि-चन्द्र का अशुभ योग हो तो वह दारिद्रयोग होता है। यह पीडित शनि चरराशि में हो तो मित्रों के कारण सर्वनाश होता है। स्थिरराशि में हो तो पूर्ण वय में बहुत कष्ट होता है। द्विस्वभाव राशि में हो तो सभी आशाएं भग्न होकर सर्वत्र असफलता ही प्राप्त होती है। इसके दिये हुए कर्ज कभी वसूल नही होते।

भृगुसूत्र--बहुधनी। विघ्नकरः। भूमिलाभः। राजपूजितः। उच्चे स्वक्षेत्रे विद्वान् महाभाग्ययोगः वाहनयोगः॥ यह धनवान होता है। किसी भी काम में विघ्न लाता है। इसे राजदरबार से सन्मान और भूमि का लाभ होता है। यह शनि तुला, मकर या कुम्भ में हो तो वह विद्वान, बहुत भाग्यवान और वाहन-सम्पन्न होता है।

हमारे विचार--इस स्थान में प्राचीन लेखकों ने बहुत शुभ फल बतलाये हैं। वे मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु तथा मीन में प्राप्त होते हैं। अन्य राशियों में अशुभ फल मिलते हैं।

हमारा अनुभव---इस स्थान में मिथुन, सिंह, धनु में शनि पुत्रसन्तति नही देता। मुश्किल से एक पुत्र होता है। अन्य राशियों में सन्तति होती है। पुत्र होने पर उनसे सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते। वे अलग रहते हैं। इसका स्वभाव कंजूस, लोभी होता है, कभी दान नही देता। इसे कोई ठगा नही सकता। चुनाव में जीतते हैं। प्रधानपद मिलता है। इसे पूर्व तथा उत्तर आयु में कष्ट होता है, सिर्फ जीवन का मध्यकाल कुछ सुखसे बीतता है। पूर्ववय में परिस्थिति वशात् सभी कष्ट रहते हैं। उत्तर आयु में स्त्रीपुत्रों से कष्ट होता है। धन अच्छा मिलता है और संचय की प्रवृत्ति होती है। इन्हें अपने कष्ट से ही प्रगति करनी पडती है। अब सन्ततिस्थानों में (१।३।५।७।९।११) शनि का साधारण फल बतलाते हैं। इस व्यक्ति का स्वभाव हट्टी, दुराग्रही, प्रतिशोधपूर्ण, किन्तु ऊपर दिखाने के लिये मधुर बोलनेवाला होता है। इसकी दुष्टता कुछ छिपी सी रहती है। व्यसनों से स्वभावतः दूर रहते हैं। बुद्धि गहरी, संशयी, अविश्वासु, अपनी ही फिक्र करनेवाला, दूसरों की परवाह न करनेवाला, अपना ही सच माननेवाला, व्यवहार में स्पष्ट ऐसा यह व्यक्ति होता है। इसे सच्चे मित्र प्राप्त नही होते। ये जिलापरिषद, नगरनिगम आदि में भाग लेते हैं। किसी की जमानत लेने से इन्हें हानि होती है। ये बहुत लोभी होते हैं।

व्ययस्थान में शनि के फल

आचार्य व गुणाकर–पतितस्तु रि:फे। यह पतित होता है।

कल्याणवर्मा––विकल: पतितो रोगी विषमाक्षो निर्घृणो विगतलज्ज:। व्ययभवनगते सौरे बहुव्यय: स्यात् सुपरिभूत:॥ यह दुखी, पतित, रोगी, निर्दय, निर्लज्ज बहुत खर्च करनेवाला, अपमानित होता है। इसकी आंखें समान नही होतीं।

पराशर––द्वादशे धनहानिं च व्ययं वा कुंक्षिरुक् क्रमात्। धनहानि, खर्च बढना तथा पसलियों में व्यथा ये इस शनि के फल हैं।

वसिष्ठ––रविज: सुतीव्र:। यह बहुत तीक्ष्ण होता है।

वैद्यनाथ––मन्दे रि:फगृहं गते विकलधी: मूर्खोऽधनी वंचक:। यह मन्दबुद्धि, मूर्ख, निर्धन तथा वंचक होता है।

गर्ग––नीचकर्माश्रित: पापो हीनांगो भोगलालस:। व्ययस्थानगते मन्दे क्रूरेषु कुरुते रुचिम्॥ यह नीच काम करता है। पापी। भोगलोलुप तथा क्रूर कामों में रुचि लेनेवाला होता है। इसके किसी अवयव में व्यंग होता है।

बृहद्यवनजातक––दयाविहीनो विधनो व्ययार्त: सदालसो नीचजनानुयात:। नरोंऽगभंगोज्झितसर्वसौख्यो व्ययस्थिते भानुसुते प्रसूतौ॥ यह निर्दय, निर्धन, बहुत खर्च से पीडित, आलसी, नीच लोगों के साथ रहनेवाला, किसी अवयव के टूटने से सदा दुखी रहता है।

आर्यग्रन्थ––व्यये शनौ पंचगणाधिनाथो गदान्वितो हीनवपु: सुदु:खी। जंघाव्रणी क्रूरमति: कृशांगो वधे रत: पक्षिगणस्य

नित्यम् । यह बहुत लोगों का प्रमुख, रोगी, दुबला, दुखी, क्रूर, पक्षियों को मारने की रुचि रखनेवाला होता है । इसका शरीर हीन होता है, जंघा में व्रण होता है ।

काशीनाथ---असद्व्ययी व्यये मन्दे कृतघ्नो वित्तवर्जितः । बन्धुवैरी कुवेषः स्याच्चंचलश्च सदा नरः ।। यह बुरे काम में धन खर्च करता है । निर्धन, कृतघ्न, चंचल, बुरा वेष धारण करनेवाला तथा रिश्तेदारों को वैरी माननेवाला होता है ।

जागेश्वर--व्यये संप्रयुक्तोऽलसो नीचसेवी कुतस्तस्य सौख्यं जनो याति नाशं । यदा सौरिनामा गतश्चान्त्यभावम् ।। यह खर्चीला, आलसी, नीच लोगों का सेवक, दुखी होता है । इसके स्वजनों का नाश होता है ।

जयदेव---विदयो विधनः स्वकर्महीनो विसुखो हीनतनुर्व्ययेऽर्कपुत्रे ।। यह निर्दय, निर्धन, दुखी, अपने काम को छोडनेवाला और हीन शरीरका होता हैं ।

मन्त्रेश्वर—निर्लज्जार्थसुतो व्ययेऽगविकलो मूर्खो रिपूत्सारितः । यह निर्लज्ज, निर्धन, पुत्ररहित, मूर्ख, शत्रुद्वारा पराजित तथा किसी अवयव में व्यंगयुक्त होता है ।

हरिवंश---स्वस्य देशे सदालस्ययुक्तो नरो बुद्धिहीनस्तथोद्विग्नचित्तः । बुद्धिभ्रंशं मानभंगं कुसंगं मांद्यं शाल्पं देहजाड्यं नरस्य । बन्धोर्वैरं वित्तहानिः प्रसूतौ कुर्युराज्यब्दकुधरे (?) व्ययस्थः ।। यह अपनी जन्मभूमि में हमेशा आलसी, उद्विग्न रहता है । बुद्धिहीन अथवा बुद्धिभ्रष्ट, अपमानित, बुरी संगति

में रहनेवाला, मन्द, जड शरीर का, रिश्तेदारों से वैर करनेवाला होता है। इसके धन की हानि होती है।

नारायणभट्ट—व्ययस्थे यदा सूर्यसूनौ नरः स्यादशूरोऽथवा निस्त्रपो मन्दनेत्रः। प्रसन्नो बहिर्नो गृहे लग्नपश्चेद् व्ययस्थो रिपुध्वंसकृद् यज्ञभोक्ता॥ यह शूर नही होता। निर्लज्ज होता है। इसकी आंखें मन्दतेज होती हैं। यह घर में प्रसन्न नही रहता, बाहर प्रसन्न रहता है। यह शनि यदि लग्नेश हो तो शत्रु का घात कर यज्ञ करनेवाला व्यक्ति होता है।

लखनऊ-नबाव—तंगहालो बदफेलः पापासक्जश्च मुफ्तिसो मनुजः। जोहलः खर्जमकाने भवति हरीशः कृपालुः स्यात्॥ यह कठिन स्थिति में रहता है। दुराचारी, पापी, बलवान, दयालु होता है।

घोलप—यह क्रूर, दुखी, दुर्बुद्धि, आप्तलोगों से रहित, खर्चीला, बुरी संगति में रहनेवाला होता है।

गोपाल रत्नाकर—यह विद्वान, अंगहीन होता है। साथ में पापग्रह हो तो नेत्रहीन होता है। शुक्र से युति हो तो सुखी, सब कामों में रुचि रखनेवाला होता है। यह कुछ तिरछा देखता है। पापकर्म करता है।

पाश्चात्य मत—इसकी प्रवृत्ति एकान्तप्रिय, संन्यासी जैसी होती है। गुप्त शत्रुओं के कारण प्रगति में वारंवार रुकावटें आती हैं। किसी पशु के कारण अपघात होता है। यह अपने हाथ से ही अपना नुकसान करता है। अज्ञातवास, कारावास, विषप्रयोग, झूठे इलजामों से कैद आदि से कष्ट होता है।

यह शनि पापग्रह से पीडित और राशि से बलहीन हो तो ये अशुभ फल तीव्र होते हैं। यही शुभसम्बन्धित हो तो एकान्तप्रियता और जिन व्यवसायों में लोगों से विशेष सम्बन्ध नही आता उनसे लाभ होता है। भिक्षागृह, अस्पताल, कारागृह, दानसंस्था आदि से सम्बन्ध रहता है। ये लोग गुप्त रीति से धनसंचय करते हैं। गुप्त नौकरी, हलके काम आदि से लाभ होता है। यह शनि बुध से अशुभ सम्बन्ध में हो तो पागलपन की सम्भावना होती है। मंगल से अशुभ सम्बन्ध में हो तो अपघात, खून या आत्महत्या द्वारा मृत्यु होता है। हर्शल से अशुभ सम्बन्ध हो तो अधिकारी और बडे लोगों से शत्रुता होने से अपमान और दुष्कीर्ति होती है। रवि–चन्द्र से अशुभ सम्बन्ध हो तो प्रिय व्यक्ति की मृत्यु से खेद होता है। इस शनि से साधारणतः उदास और शोकपूर्ण प्रवृत्ति होती है।

भृगुसूत्र—पतितः। विकलांगः। पापयुते नेत्रच्छेदः। शुभयुते सुखी सुनेत्रः। पुण्यलोकप्राप्तिः। पापयुते नरकप्राप्तिः। अपात्रव्ययकारी निर्धनः शुभयुते राजयोगकरः॥ ग्रह पतित, विकलांग होता है। पापग्रह के साथ हो तो आंखें अन्धी होती हैं, अयोग्य काम में धन खर्च करता है। निर्धन होता है। मृत्यु के बाद नरक में जाता है। शुभग्रह के साथ हो तो सुखी होता है। आंखें अच्छी होती हैं। राजयोग होता है। मृत्यु के बाद अच्छी गति मिलती है।

हमारे विचार—प्राचीन लेखकों ने इस स्थानमें शनि के फल प्रायः अशुभ बतलाये हैं। ये दूषित शनि के फल हैं। इसे हर्षित ग्रह कहा है, किन्तु फल अशुभ बतलाये हैं।

हमारा अनुभव—व्ययस्थान में मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु मीन में शनि शुभ फल देता है। ये किसी विषय में प्रवीण होते हैं। बुद्धि तीव्र होती है। वकील, बैरिस्टर, राजनीतिज्ञ, विद्वान होते हैं। अवकाश मिलने पर संस्था स्थापन करना, उनका काम देखना आदि से कीर्ति प्राप्त होती है। राजनीतिक झगडों में इन्हें दीर्घ कारावास होता है। घर से बाहर रहना पडता है। इनकी पत्नी भी इनके ही समान प्रौढ, गम्भीर रहती है, अतः इनमें पतिपत्नी प्रेम कैसा है यह कहना कठिन होता है। ये व्यवहारी, दुबलेपतले होते हैं, एक आंख से काने हो सकते हैं। एक दो सन्तान होती हैं। ये प्रसिद्ध होते हैं, किन्तु इनके पुत्रपौत्रों की अवनति ही होती है। ये अपनी संस्कृति को कभी छोडना नही चाहते, उसी को सबसे अच्छा समझते हैं। वृषभ, कन्या, तुला, मकरा कुम्भ में भी वकील, बैरिस्टर, डाक्टर आदि होने का योग होता है। अपने व्यवसाय में इन्हें कीर्ति मिलती है। बी. एस्–सी. एम्. एस्–सी., डी. एस्–सी., डी, लिट्, आइ. ए–एस्., आदि उपाधियां प्राप्त होती हैं। इन्हें पहले कन्या सन्तति होती है। पुत्र हो तो जीवित नही रहता। सन्तति काफी होती है। इन्हें माता-पिता का सुख अच्छा मिलता है। ये लोग सार्वजनिक काम में भाग नही लेते। अपने को बहुत श्रेष्ठ मानते रहते हैं। मिथुन, वृश्चिक, कुम्भ में इस शनि से क्रान्तिकारी प्रवृत्ति होती है। इनके मृत्यु से भी इन्हें चिरकालीन कीर्ति मिलती है। स्त्रियों की कुण्डली में भी यह शनि कीर्ति देता है।

कुछ प्रसिद्ध उदाहरण---स्व. दादासाहब खापर्डे, अमरावती (प्रसिद्ध कांग्रेस नेता) (वृषभ), सरदार माधवराव किबे, इन्दौर (कुम्भ), सदाशिव शास्त्री भिडे, पूना (कुम्भ), स्व. शिवराम पवार (तुला), स्व. पेंढारकर (कन्या), नेताजी सुभाषचन्द्र बोस (वृश्चिक), स्व. प्रो. विश्वनाथ बलवन्त नाईक (मीन), दीवानबहादुर सिद्दप्पा तोहप्पा कम्बली (मिथुन) स्व विष्णुशास्त्री चिपलूनकर (मकर), स्व. बलवंत पांडुरंग किर्लोस्कर (मकर), प्रसिद्ध मराठी अभिनेता स्व. भाऊराव कोल्हटकर (कन्या), सर मोरोपंत जोशी (सिंह), स्व. महारानी जमनाबाई गायकवाड, बडौदा (वृषभ), महारानी लक्ष्मीबाई, झांशी (तुला), श्रीमती एनी बिझांट (कुम्भ), श्रीमती कमलाबाई किब्रे (मिथुन)।

प्रकरण ६

महादशा विचार

मकर और कुम्भ इन दो राशियों पर शनि का अधिकार है। अतः दो स्थानों के ग्रह की दशा का विचार मंगलविचार में किया है तदनुसार समझना चाहियें। पुष्य, अनुराधा, उत्तरा, भाद्रपदा इन नक्षत्रों को यह दशा जन्म से २० वें वर्ष तक रहती है। कुण्डली में शनि अनिष्ट हो तो बचपन में मातापिता का मृत्युयोग, बीमारी, शिक्षा में रुकावट, बारबार फेल होना ये सब अनिष्ट बातें होती हैं। पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपदा इन नक्षत्रों को १७ वें वर्ष से ३५ वें वर्ष तक शनि की दशा होती

है। शिक्षा पूर्ण होना, विवाह, उपजीविका का प्रारम्भ इसका यह समय है। आर्द्रा, स्वाति, शततारका इन नक्षत्रों के लिये ३५ वें वर्ष से ५३ वें वर्ष तक यह दशा होती है। इसमें स्थिति अस्थिर रहती है, कुछ प्रगति होती है, नौकरी में अवनति भी होती है। कुछ सन्तति की मृत्यु होती है। मृग, चित्रा, धनिष्ठा, इन नक्षत्रों को ४२ से ६० वें वर्ष तक यह दशा होती है। इसमें कुछ सन्तति और पत्नी की मृत्यु का सम्भव होता है। कुण्डली में शनि शुभ हो तो इसी आयु में भाग्योदय होता है।

[लग्न के अनुसार किस स्थान का फल अधिक प्रभावी होता है, उसका विवरण इस प्रकार है—मेष लग्न में लाभस्थान, वृषभ लग्न में दशम स्थान, मिथुन लग्न में अष्टम स्थान, कर्क लग्न में सप्तम स्थान, सिंह लग्न में सप्तम स्थान, कन्या लग्न में पंचमस्थान, तुला लग्न में चतुर्थस्थान, वृश्चिक लग्न में चतुर्थ-स्थान, धनु लग्न में धन स्थान, मकर लग्न में लग्नस्थान, कुम्भ लग्न में व्ययस्थान तथा मीन लग्न में लाभस्थान का फल प्रभावी होता है।]

शनिमहादशा में आरम्भ में अशुभ और बाद में शुभ फल मिलते हैं। इस विषय में मतान्तर है।—नीचराशिगतो मन्दः स्वोच्चांशकसमन्वितः। दशादौ दुःखमापाद्य दशान्ते सुखदो भवेत्॥ उच्चराशिगतो मन्दो नीचांशकसमन्वितः दशादौ सुख-मापाद्य दशान्ते कष्टदो भवेत्॥ शनि नीच राशि के उच्च अंश में हो तो दशा के आरम्भ में दुःख और अन्त में सुख मिलता है। वही उच्च राशि के नीच अंश में हो तो प्रारम्भ में सुख और अन्त में कष्ट होता है।

शनि कुण्डली में मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु या मीन में केन्द्र या त्रिकोण में हो तो दशा शुभ होती है। अन्यत्र अशुभ होती है। शनि की महादशा में रवि, चन्द्र और मंगल की अन्तर्दशा अशुभ होती है। २।४।५।८।१०।१२ इन स्थानों में शनि हो तो यह महादशा स्त्री, पुत्र, धन आदि के लिये हानिकारक तथा सन्मान कीर्ति आदि के लिये लाभकारक होती है। महादशा का विस्तृत विवरण सर्वार्थचिन्तामणि में देखना चाहिये।